सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 328, नई दिल्ली । मंगलवार, 04 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 चुनाव आयोग कभी भी घर जाकर वोटिंग नहीं करवाता है....

06 बेसहारा पशुओं की समस्या और उसका समाधान

08 हैदराबाद गौभक्तों द्वारा तीर्थराज प्रयाग कुंभ मेले में भव्य गौमाता का जागरण

सभी रूट पर बदली मेट्रो की टाइमिंग, डीएमआरसी ने वजह भी बताई

संजय बाटला

डीएमआरसी के प्रधान कार्यकारी निदेशक अनुज दयाल ने बताया कि पांच फरवरी (वोटिंग) और आठ फरवरी (मतगणना) को सुबह 4 बजे अपने टर्मिनल स्टेशनों से मेट्रो चलेंगी ताकि चुनाव ड्यूटी के लिए तैनात कर्मचारी इस सुविधा का लाभ उठा सकें। यह सुविधा इसलिए भी है ताकि उन्हें इसके लिए कोई समस्या न हो। सुबह 0600 बजे तक सभी लाइनों पर 30 मिनट के अंतराल पर मेट्रो चलेंगी।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर राजधानी में मेट्रो सेवाएं आगामी 5 और 8 फरवरी को सुबह 4 बजे से शुरू होंगी। विधानसभा चुनाव के लिए वोटिंग के दिन 5 फरवरी (बुधवार) और मतगणना के दिन 8 फरवरी (शनिवार) को सभी लाइनों पर दिल्ली मेट्रो ट्रेन सेवाएं जल्दी शुरू होंगी।

डीएमआरसी के प्रिंसिपल एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर, कॉर्पोरेट कम्यूनिकेशंस अनुज दयाल ने बताया कि इन दो दिनों में सुबह 4 बजे अपने टर्मिनल स्टेशनों से मेट्रो चलेंगी, ताकि चुनाव ड्यूटी के लिए तैनात कर्मचारी इस सुविधा का लाभ उठा सकें और उन्हें इसके लिए कोई समस्या न हो। सुबह 6 बजे तक सभी लाइनों पर 30 मिनट के अंतराल पर मेट्रो चलेंगी। सुबह 6 बजे के बाद पूरे दिन नियमित मेट्रो ट्रेन सेवाएं चलेंगी।

मेट्रो की सेवाएं देर रात तक रहेंगी जारी

उन्होंने बताया कि इसके अलावा, चुनाव ड्यूटी के बाद देर से लौटने वाले मतदान अधिकारियों/कर्मचारियों की सुविधा के लिए सभी लाइनों पर अंतिम मेट्रो सेवाओं को भी 5/6 फरवरी 2025 की मध्यरात्रि को बढ़ाया जाएगा।

Line	Sections		Regular Last Train Timing	Extended Last Train Timing
	From	To		
Red Line	Shaheedsthal New Bus Adda	Rithala	23:00:00	00:00:00
	Rithala	Shaheedsthal New Bus Adda	23:00:00	00:00:00
Yellow Line	Millennium City Centre Gurugram	Samaypur Badli	23:00:00	23:30:00
	Samaypur Badli	Millennium City Centre Gurugram	23:00:00	23:45:00
Blue Line	Dwarka Sec-21	Noida Electronic City	22:50:00	23:40:00
	Dwarka Sec-21	Vaishali	23:00:00	23:50:00
	Noida Electronic City	Dwarka Sec-21	23:00:00	23:35:00
	Vaishali	Dwarka Sec-21	23:00:00	23:45:00
Green Line	Brig. Hoshiyar Singh	Kirti Nagar	23:00:00	23:40:00
	Brig. Hoshiyar Singh	Inderlok	22:45:00	23:20:00
	Inderlok	Mundka	23:00:00	00:15:00
	Kirti Nagar	Brig. Hoshiyar Singh	23:00:00	00:35:00
Violet Line	Raja Nahar Singh	Kashmere Gate	23:00:00	23:45:00
	Kashmere Gate	Raja Nahar Singh	23:00:00	00:00:00
Pink Line	Majlis Park	Shiv Vihar	23:00:00	23:30:00
	Shiv Vihar	Majlis Park	23:00:00	23:30:00
Magenta Line	Janakpuri West	Botanical Garden	23:00:00	00:00:00
	Botanical Garden	Janakpuri West	23:00:00	00:00:00
	Krishna Park Extension	Janakpuri West	22:50:00	23:45:00
Grey Line	Dhansa Bus Stand	Dwarka	23:00:00	23:45:00
	Dwarka	Dhansa Bus Stand	23:00:00	01:00:00
Ael	Yashobhoomi Dwarka Sec25	New Delhi	23:15:00	00:35:00
	New Delhi	Yashobhoomi Dwarka Sec25	23:40:00	00:35:00

समस्तीपुर रेल मंडल से चलेंगी 2 अमृत भारत एक्सप्रेस, वंदे भारत ट्रेन में होंगे स्लीपर कोच

समस्तीपुर रेल मंडल से दो अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें चलेंगी जिससे यात्रियों को आरामदायक सफर का अनुभव होगा। वंदे भारत ट्रेन में स्लीपर कोच की सुविधा भी मिलेगी। बिहार के लिए रेलवे की 90 हजार करोड़ की योजनाओं को स्वीकृति मिली है जिसमें समस्तीपुर रेलवे मंडल के लिए भी कई योजनाएं शामिल हैं। यह जानकारी समस्तीपुर के मंडल रेल प्रबंधक ने दी।

समस्तीपुर। समस्तीपुर रेल मंडल में यात्रियों के लिए दो अमृत भारत एक्सप्रेस चलाई जाएंगी। वंदे भारत ट्रेन में स्लीपर कोच की भी सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। यह जानकारी समस्तीपुर के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) विनय श्रीवास्तव ने सोमवार को प्रेस वार्ता के दौरान दी।

उन्होंने बताया कि बिहार के लिए रेलवे की 90 हजार करोड़ की योजनाओं की स्वीकृति मिली है। इस राशि में समस्तीपुर रेलवे मंडल के लिए भी कई योजनाओं को मंजूरी दी गई है। अगले एक-दो दिनों में यह स्पष्ट हो जाएगा कि समस्तीपुर मंडल को कितनी राशि आवंटित हुई है।

नरकटियागंज-दरभंगा दोहरीकरण को मिली राशि:

डीआरएम ने बताया कि नरकटियागंज-दरभंगा रेललाइन दोहरीकरण परियोजना को स्वीकृति मिल चुकी है। कार्य पूरा करने के लिए 456 करोड़ रुपये की योजना को मंजूरी दी गई है। इस राशि से कार्य जल्द शुरू किया जाएगा। हसनपुर-सकरी रेल परियोजना के तहत हसनपुर से कुशेश्वरस्थान तक नई रेलवे लाइन का निर्माण किया जा रहा है।

इस रेलखंड के कुछ हिस्से पक्षी विहार क्षेत्र से गुजरने के कारण एलाइनमेंट में बदलाव किया गया है। इसके लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। बहुत जल्द कार्य शुरू किया जाएगा। इस परियोजना को दिसंबर 2026 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

मुक्तापुर से कर्पूरीग्राम स्टेशन के बीच बाइपास निर्माण के लिए सर्वेक्षण किया जा रहा है। अटेरन चौक पर लाइट वेट पुल निर्माण के लिए प्रस्ताव भेजा गया है। स्वीकृति मिलने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा।

समस्तीपुर-दरभंगा रेलखंड पर दोहरीकरण कार्य अंतिम चरण में, जुलाई से ट्रेन परिचालन की उम्मीद

समस्तीपुर-दरभंगा रेलखंड पर दोहरीकरण का कार्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। रामभद्रपुर से थलवारा के बीच 12 किलोमीटर लंबे इस रेल खंड में निर्माण कार्य को 30 जून तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यदि सब कुछ योजना के अनुसार हुआ तो जुलाई से इस नए ट्रैक पर ट्रेनों का संचालन शुरू हो सकता है।

डीआरएम का कहना है कि दोहरीकरण पूरा होने के बाद इस रूट पर ट्रेनों की गति और संख्या में वृद्धि होगी, जिससे यात्रियों को सुविधा मिलेगी और लेटलतीफी की समस्या भी कम होगी। इसी बीच हायाघाट स्टेशन के पास स्थित सबवे नंबर 15बी के निर्माण कार्य को लेकर दरभंगा जिला प्रशासन से अनुमति मिल गई है।

पहले यह रेलवे गुमटी थी, लेकिन जाम की समस्या को देखते हुए आमान परिवर्तन के दौरान इसे सब-वे में बदल दिया गया था। अब दोहरीकरण के कारण इसकी लंबाई 32 मीटर तक बढ़ाई जाएगी, जिसके लिए निर्माण कार्य के दौरान इसे अस्थायी रूप से बंद किया जाएगा।

प्रशासन ने रेलवे को निर्देश दिया है कि निर्माण कार्य शुरू करने से 15 दिन पहले इस संबंध में सार्वजनिक सूचना जारी की जाए, ताकि लोगों को असुविधा न हो।

दिल्ली में 5 फरवरी को क्या खुला रहेगा और क्या बंद होगा, परेशानी से बचने के लिए पहले ही जान लें

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (DMRC) ने 5 फरवरी को होने वाले चुनाव को लेकर घोषणा की है. जिसके अनुसार 5 फरवरी को चुनाव कर्मचारियों और मतदाताओं की सुविधा को ध्यान में रखकर मेट्रो की सुविधाएं सुबह 4 बजे से शुरू हो जाएगी. सुबह छह बजे तक ट्रेनें 30 मिनट के अंतराल में चलेगी.

नईदिल्ली। दिल्ली में पांच फरवरी को विधानसभा चुनाव होने वाले हैं. ये चुनाव एक ही चरण में पूरे होंगे. इसलिए लोगों के मन में ये सवाल हैं कि दिल्ली में इस दिन क्या बंद रहेंगे और क्या खुले रहेंगे. स्कूल-कॉलेज से लेकर बैंक, मॉल आदि क्या बंद रहेगा और क्या खुला रहेगा.

इकोनॉमिक टाइम्स के वैल्यूएशन मास्टरक्लास में शामिल हों ! उद्योग विशेषज्ञों से मूल्यांकन कौशल सीखें और अपनी वित्तीय समझ को बढ़ाएं। अब सिर्फ ₹9,999 में नामांकन करें !

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन की घोषणा

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने 5 फरवरी 2025 को होने वाले चुनाव को लेकर घोषणाएं की है. जिसके अनुसार 5 फरवरी को चुनाव कर्मचारियों और मतदाताओं की सुविधा को ध्यान में रखकर मेट्रो की सुविधाएं सुबह 4 बजे से शुरू हो जाएगी. सुबह छह बजे तक ट्रेनें 30-30 मिनट के अंतराल में चलेगी. जिसके बाद मेट्रो अपने सामान्य समय से ही चलेगी.

दिल्ली परिवहन निगम की सेवाएं

विधानसभा चुनाव के दिन दिल्ली परिवहन निगम (DTC) की बसों की सेवाएं सुबह 4 बजे से शुरू हो जाएगी. ताकि वोटिंग सेंटर्स पर जाने के लिए मतदाताओं को परेशान नहीं होना पड़े. इसके बाद पूरे दिन सामान्य समय से बसे चलती रहेगी.

ये सेवाएं भी रहेगी खुली

दिल्ली में विधानसभा चुनाव के दिन पांच फरवरी को अस्पताल, फार्मेसी जैसी जरूरी सेवाएं जैसे किराना स्टोर, खाने-पीने की चीजें. लोगों को परेशानी का सामना नहीं हो इसके लिए रोजमर्रा के सामान, खाने-पीने की दुकाने भी खुली रहेगी. इसके अलावा सरकारी संस्थान बंद रहेंगे.

ये रहेंगे बंद

पांच फरवरी को स्कूल-कॉलेज, शराब की दुकानें, तीन फरवरी से लेकर शाम 6 बजे से लेकर पांच फरवरी को शाम 6 बजे तक बंद रहेगी. कई स्कूलों को भी वोटिंग सेंटर्स बनाए गए हैं.

सरकारी कार्यालय और बैंक भी बंद रहेंगे. ताकि सभी कर्मचारी भी मतदान करने के लिए जा सके. इसके अलावा थियेटर और सिनेमा हॉल भी बंद रहेंगे।

दिल्ली में मतदान के दिन 5 फरवरी को रहेगी सरकारी छुट्टी, नोटिफिकेशन जारी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में मतदान के दिन यानी पांच फरवरी को सार्वजनिक अवकाश रहेगा। उपराज्यपाल से स्वीकृति मिलने के बाद सोमवार को इसका नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। नोटिफिकेशन के मुताबिक, दिल्ली के सभी सरकारी, गैर सरकारी, निजी कार्यालयों व अन्य संस्थानों में सार्वजनिक अवकाश रहेगा। यानी इन सभी कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारी मतदान कर सकेंगे।

उन्हें इसके लिए नियोक्ता से अवकाश नहीं लेना पड़ेगा। वहीं, दिल्ली के व्यापारिक संगठनों ने भी बुधवार को प्रतिष्ठान बंद रखने का निर्णय लिया है, ताकि दुकानदार और दुकानों पर काम करने वाले कर्मचारी अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें।

एक अधिकारी ने सोमवार को बताया कि विधानसभा चुनाव को देखते हुए दिल्ली में अर्धसैनिक बलों की 150 से अधिक कंपनियां और 30 हजार से अधिक पुलिसकर्मी तैनात किए जाएंगे। विशेष सीपी (क्राइम) और इलेक्शन सेल के प्रभारी देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने कहा कि सभी दिल्ली पुलिस के सभी जवान स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

उन्होंने बताया कि करीब 3,000 मतदान केंद्रों को संवेदनशील के रूप में पहचाना गया है। इनमें से कुछ स्थानों पर ड्रोन का इस्तेमाल किया जाएगा। संवेदनशील बूथों पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती सुनिश्चित की जाएगी। शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी) कर तैनाती होगी।

इस बीच दिल्ली पुलिस की ओर से जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, 5 फरवरी को होने वाले चुनाव से पहले आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) के कथित उल्लंघन के 1,000 से अधिक मामले दर्ज किए गए हैं। 7 जनवरी को एमसीसी लागू होने के बाद से लेकर 2 फरवरी के बीच आबकारी अधिनियम समेत विभिन्न कानूनी प्रावधानों के तहत 33,434 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

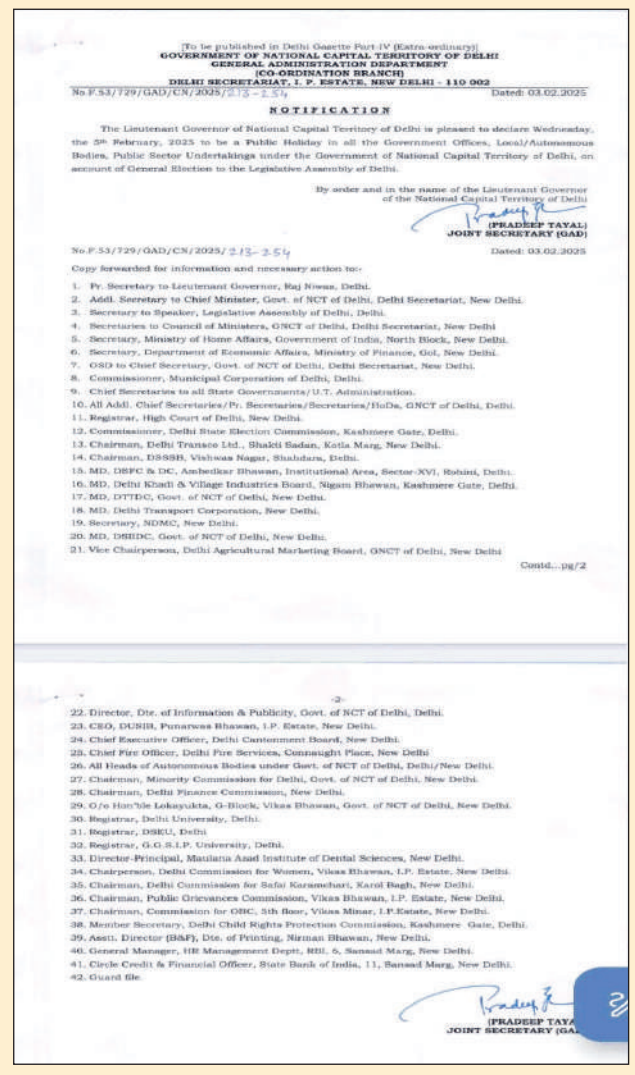

[To be published in Delhi Gazette Part-IV (Extra-ordinary)]
GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT
(CO-ORDINATION BRANCH)
DELHI SECRETARIAT, I. P. ESTATE, NEW DELHI - 110 002

No.F.53/729/GAD/CN/2025/213-254 Dated: 03.02.2025

NOTIFICATION

The Lieutenant Governor of National Capital Territory of Delhi is pleased to declare Wednesday, the 5th February, 2025 to be a Public Holiday in all the Government Offices, Local/Autonomous Bodies, Public Sector Undertakings under the Government of National Capital Territory of Delhi, on account of General Election to the Legislative Assembly of Delhi.

By order and in the name of the Lieutenant Governor of the National Capital Territory of Delhi

(PRADEEP TAYAL)
JOINT SECRETARY (GAD)

No.F.53/729/GAD/CN/2025/213-254 Dated: 03.02.2025

Copy forwarded for information and necessary action to:-

1. Pr. Secretary to Lieutenant Governor, Raj Niwas, Delhi.
2. Addl. Secretary to Chief Minister, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi.
3. Secretary to Speaker, Legislative Assembly of Delhi, Delhi.
4. Secretaries to Council of Ministers, GNCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi
5. Secretary, Ministry of Home Affairs, Government of India, North Block, New Delhi.
6. Secretary, Department of Economic Affairs, Ministry of Finance, GoI, New Delhi.
7. OSD to Chief Secretary, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi.
8. Commissioner, Municipal Corporation of Delhi, Delhi.
9. Chief Secretaries to all State Governments/U.T. Administration.
10. All Addl. Chief Secretaries/Pr. Secretaries/Secretaries/HoDs, GNCT of Delhi, Delhi.
11. Registrar, High Court of Delhi, New Delhi.
12. Commissioner, Delhi State Election Commission, Kashmere Gate, Delhi.
13. Chairman, Delhi Transco Ltd., Shakti Sadan, Kotla Marg, New Delhi.
14. Chairman, DSSSB, Vishwas Nagar, Shahdara, Delhi.
15. MD, DSIDC & DC, Ambedkar Bhawan, Institutional Area, Sector-XVI, Rohini, Delhi.
16. MD, Delhi Khadi & Village Industries Board, Sigam Bhawan, Kashmere Gate, Delhi.
17. MD, DTTDC, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
18. MD, Delhi Transport Corporation, New Delhi.
19. Secretary, NDMC, New Delhi.
20. MD, DSIIDC, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
21. Vice Chairperson, Delhi Agricultural Marketing Board, GNCT of Delhi, New Delhi

Contd...pg/2

-2-

22. Director, Dte. of Information & Publicity, Govt. of NCT of Delhi, Delhi.
23. CEO, DUSIB, Punarsea Bhawan, I.P. Estate, New Delhi.
24. Chief Executive Officer, Delhi Cantonment Board, New Delhi.
25. Chief Fire Officer, Delhi Fire Services, Connaught Place, New Delhi
26. All Heads of Autonomous Bodies under Govt. of NCT of Delhi, Delhi/New Delhi.
27. Chairman, Minority Commission for Delhi, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
28. Chairman, Delhi Finance Commission, New Delhi.
29. O/o Hon'ble Lokayukta, G-Block, Vikas Bhawan, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
30. Registrar, Delhi University, Delhi.
31. Registrar, DSEU, Delhi
32. Registrar, G.G.S.I.P. University, Delhi.
33. Director-Principal, Maulana Azad Institute of Dental Sciences, New Delhi.
34. Chairperson, Delhi Commission for Women, Vikas Bhawan, I.P. Estate, New Delhi.
35. Chairman, Delhi Commission for Safai Karamchari, Karol Bagh, New Delhi.
36. Chairman, Public Grievances Commission, Vikas Bhawan, I.P. Estate, New Delhi.
37. Chairman, Commission for OBC, 5th floor, Vikas Minar, I.P.Estate, New Delhi.
38. Member Secretary, Delhi Child Rights Protection Commission, Kashmere Gate, Delhi.
39. Asstt. Director (B&F), Dte. of Printing, Nirman Bhawan, New Delhi.
40. General Manager, HR Management Deptt., RBI, 6, Sansad Marg, New Delhi.
41. Circle Credit & Financial Officer, State Bank of India, 11, Sansad Marg, New Delhi.
42. Guard file.

(PRADEEP TAYA
JOINT SECRETARY (GA

प्रदूषण के स्तर में गिरावट के बाद हटाया गया ग्रैप-3, जानें कौन से प्रतिबंध हटे

ग्रैप तीन के तहत पूरे एनसीआर में धूल पैदा करने वाली व वायु प्रदूषण फैलाने वाली सीएंडडी गतिविधियों पर सख्त प्रतिबंध था। बोरिंग और ड्रिलिंग कार्यों सहित खुदाई और भराई के लिए मिट्टी का काम आदि पर पाबंदी थी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण के स्तर में गिरावट के बीच केंद्र सरकार के दिल्ली-एनसीआर वायु गुणवत्ता पैनल ने ग्रैप-3 प्रतिबंधों को रद्द कर दिया है। हालांकि ग्रैप-1 और ग्रैप-2 के तहत आने वाले प्रतिबंध लागू रहेंगे।

ग्रैप तीन हटने से होगा ये बड़ा बदलाव

ग्रैप-3 हटने के बाद दिल्ली और आसपास के इलाकों में बीएस-तीन पेट्रोल और बीएस-चार डीजल वाहनों पर प्रतिबंध हट गया है। इससे ये वाहन बिना रोक-टोक के जा सकेंगे।

क्या होता है ग्रैप फार्मूला?

ग्रैप को दिल्ली एनसीआर में प्रतिकूल वायु गुणवत्ता के चार अलग-अलग चरण के हिसाब से बांटा गया गया है। ग्रैप का चरण-1 उस वक्त लागू होता है, जब दिल्ली में AQI का स्तर 201-300 के बीच होता है। मौजूदा समय में दिल्ली में ग्रैप का चरण-1 ही प्रभावी था। ग्रैप का दूसरा चरण उस परिस्थिति में प्रभावी होता है, जब राजधानी में वायु गुणवत्ता सूचकांक 301-400 के बीच 'बहुत खराब' मापा जाता है। चरण-3 'गंभीर' वायु गुणवत्ता के बीच लागू किया जाता है। इस वक्त दिल्ली में एक्यूआई 401-450 के बीच होता है। वहीं ग्रैप कार्य योजना का अंतिम और चरण-4 'गंभीर +' वायु गुणवत्ता की परिस्थिति में लागू किया जाता है।

ग्रैप तीन के तहत इन कार्य पर थी पाबंदी

-पूरे एनसीआर में धूल पैदा करने वाली व वायु प्रदूषण फैलाने वाली सीएंडडी गतिविधियों पर सख्त प्रतिबंध था।

-बोरिंग और ड्रिलिंग कार्यों सहित खुदाई और भराई के लिए मिट्टी का काम।

-पाइलिंग कार्य, सभी विध्वंस कार्य।

-ओपन ट्रेंच सिस्टम द्वारा सीवर लाइन, पानी की लाइन, ड्रेनेज और इलेक्ट्रिक केबलिंग आदि बिछाना।

-ईंट/चिनाई कार्य।

-प्रमुख वेल्डिंग और गैस-कटिंग कार्य, हालांकि, एमईपी (मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और प्लंबिंग) कार्यों के लिए छोटी वेल्डिंग गतिविधियों की अनुमति दी जाएगी।

-सड़क निर्माण गतिविधियां और प्रमुख मरम्मत।

-परियोजना स्थलों के भीतर व बाहर कहीं भी सीमेंट, फ्लाई-ऐश, ईंट, रेत, पत्थर आदि जैसी धूल पैदा करने वाली सामग्रियों का स्थानांतरण, लोडिंग/अनलोडिंग।

-कच्ची सड़कों पर निर्माण सामग्री ले जाने वाले वाहनों की आवाजाही।

-विध्वंस अपशिष्ट का कोई भी परिवहन।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक का स्वभाव, कैरियर, रोग और उपाय:

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

आकाश में हीरे की तरह चमकदार आर्द्रा नक्षत्र हमारे नक्षत्र मंडल के 27 नक्षत्रों में अपना छठा स्थान रखता है। आर्द्रा का अर्थ नमी होता है। इस नक्षत्र के देवता भगवान रुद्र तथा नक्षत्रपति राहु को माना गया है। आर्द्रा नक्षत्र में भगवान रुद्र का वास है, यही कारण है कि आर्द्रा नक्षत्र को परिवर्तन,विनाश और निरंतर प्रयास का कारक माना जाता है। इस नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह हीरा या आंसू की बूंद है। महर्षि पुलह जो कि उत्कृष्ट, विद्वान तथा शुभचिंतक है वे इस नक्षत्र से संबंध रखते हैं।

स्वभाव : आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक के स्वभाव में राहु ,बुध तथा भगवान रुद्र के गुणों की झलक देखने को मिलती है। इस नक्षत्र में जन्मे जातक बुद्धिमान, जिम्मेदार, विनोदी, चंचल स्वभाव के होते हैं। इसके अलावा इनमे किसी भी परस्थिति को पहले से ही भांप लेने की क्षमता होती हैं। आचार्य वराहामिहिर के अनुसार इस नक्षत्र में जन्मे जातक जिज्ञासु, कर्मठ, उत्साही किंतु कुछ हिंसक, धूर्त व अहंकारी प्रवृत्ति के होते हैं। कैरियर : आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे लोग सामाजिक कार्यकर्ता, कंप्यूटर इंजीनियर, न्यूरोलॉजिस्ट, परिवहन, संचार विभागों, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, फोटोग्राफर, मस्तिष्क रोग विशेषज्ञ, गुप्तचर, न्यूक्लियर वैज्ञानिक, भौतिक शास्त्री, डिटेक्टिव, लेखक, उपन्यासकार, ट्रांसलेटर, शतरंज आदि को अपने कैरियर के रूप में चुनाव करके सफलता प्राप्त कर सकते है।

रोग: आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे लोग वायु संबंधित विकारों से परेशान होते हैं। इन्हे श्वास से संबंधित रोग, सूखी खांसी, डिप्थेरिया तथा रक्त से संबंधित रोगों से जूझना पढ़ सकता है। उपाय: आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक को जीवन में सफलता प्राप्ति और सौभाग्य में वृद्धि हेतु भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र

"ॐ नमः शिवाय" का जप प्रतिदिन रुद्राक्ष की माला से एक माला करना चाहिए। इसके अलावा सोमवार का व्रत करने से जीवन में सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है। इनके लिए शुभ रंग लाल,ग्रे तथा हरा होता है।

इन 5 बीमारियों को छूमंतर कर देता है शहद...

ऐसे करेंगे इस्तेमाल तो हमेशा रहेंगे हेल्दी

1. सर्दी-खांसी से राहत शहद में एंटीबैक्टीरियल और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो गले में खराश, खांसी और सर्दी के लक्षणों को कम करने में मदद करते हैं। सोते समय एक चम्मच शहद लेने से गले में खराश और खांसी से राहत मिल सकती है।

2. पाचन क्रिया में सुधार शहद में मौजूद फ्रुक्टोज और ग्लूकोज पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। यह अपच, गैस और कब्ज से राहत दिलाता है।

3. इम्यूनिटी बढ़ाता है शहद में एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो इम्यूनिटी को बढ़ावा देते हैं। यह शरीर को संक्रमण से बचाने में मदद करता है।

4. त्वचा के लिए फायदेमंद : शहद में एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो त्वचा को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। यह मुंहासे, जलन और सूजन को कम करने में मदद करता है।

5. नींद में सुधार : शहद में मौजूद ट्रिप्टोफैन नामक अमीनो एसिड नींद को बेहतर बनाने में मदद करता है। सोने से पहले एक चम्मच शहद लेने से नींद अच्छी आ सकती है।

विश्व कैंसर दिवस

विश्व कैंसर दिवस कैंसर के प्रति जागरूकता के लिए एक वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम है, जिसे पिछले 23 वर्षों से (वर्ष 2000 से) हर वर्ष 4 फरवरी को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य लोगों में कैंसर की पहचान, उपचार और रोकथाम के बारे में जागरूकता फैलाना और उन्हें शिक्षित करना है। इस दिन, दुनिया भर के विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और स्थानीय संगठनों के लोग कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने और बेहतर जांच, नैदानिक उपकरण, शीघ्र निदान और उन्नत उपचार विकल्पों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एकजुट होते हैं।

विश्व कैंसर दिवस का महत्व कैंसर एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर में कुछ कोशिकाएँ अनियंत्रित रूप से विकसित होती हैं और शरीर के अन्य भागों में फैल जाती हैं। वैश्विक स्तर पर, कैंसर मृत्यु दर का प्रमुख कारण है, जिसके कारण 2020 में एक करोड़ से अधिक मौतें हुईं। भारत में, 2022 में इसकी घटना दर 19 से 20 लाख (अनुमानित) मामलों के बीच दर्ज की गई थी। तम्बाकू का उपयोग, शराब का लंबे समय तक सेवन, अस्वास्थ्यकर भोजन की आदतें, शारीरिक व्यायाम की कमी और वायु प्रदूषण के संपर्क में आना सभी कैंसर के जोखिम कारक हैं। निम्न और मध्यम आय वाले देशों को कई पुरानी बीमारियों के कारण होने वाले कैंसर के जोखिम को संबोधित करने में एक अनूठी चुनौती का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, इन देशों ने शिक्षा की कमी, देरी से निदान और किफायती उपचार तक कम पहुंच के कारण कैंसर का खराब पूर्वानुमान दिखाया है। विकासशील देशों में भी, कैंसर के बारे में जागरूकता की कमी के कारण निदान में देरी होती है। 2020 में रिपोर्ट की गई एक स्टडी भारत के चार प्रमुख केंद्रों में की गई थी, जहाँ कैंसर के अधिकांश मरीज़ पहली बार तभी इलाज करवाते हैं जब वे अपने उन्नत चरणों में होते हैं। साक्षरता दर और कम आय कैंसर जागरूकता को बहुत प्रभावित करती है। भारत में, उच्च आय और साक्षरता स्तर वाले लोग दूसरों की तुलना में कैंसर के बारे में अधिक जागरूक थे।

निष्कर्ष के तौर पर, भारतीय और वैश्विक आबादी में कैंसर की जांच, रोकथाम और उपचार के बारे में सामान्य जागरूकता कम है, खासकर निम्न और मध्यम आय वाले लोगों में, जहां साक्षरता दर कम है, जिससे कैंसर के मामलों में वृद्धि हो रही है, और उचित शिक्षा के साथ इस कमी को दूर करने की तत्काल आवश्यकता है। विश्व कैंसर दिवस इस बात पर ध्यान दिलाता है कि कैंसर को रोकना, इसका समय पर पता लगाना और इसका इलाज करना कितना महत्वपूर्ण है।

विश्व कैंसर दिवस का इतिहास 4 फरवरी, 2000 को पेरिस में नई सहस्राब्दी के लिए कैंसर के खिलाफ विश्व शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसने विश्व कैंसर दिवस की शुरुआत को चिह्नित किया। विश्व कैंसर दिवस की शुरूआत पेरिस चार्टर का एक प्रमुख घटक है, जिसका उद्देश्य कैंसर अनुसंधान, रोकथाम, रोगी देखभाल, जागरूकता और विश्वव्यापी लामबंदी को आगे बढ़ाना भी है।

कैंसर की रोकथाम हालाँकि कैंसर के कई रूपों को रोका नहीं जा सकता है, फिर भी कुछ लोगों में कैंसर का निदान हो ही जाता है, भले ही वे स्वस्थ जीवनशैली अपनाएँ। कैंसर के जोखिम को कई तरीकों से कम किया जा सकता है, जिनमें शामिल हैं:

1. पौष्टिक आहार लें जिसमें फल और सब्जियां अधिक हों तथा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ और लाल मांस कम हो
2. नियमित व्यायाम और स्वस्थ वजन बनाए रखना
3. तम्बाकू उत्पादों के उपयोग से परहेज़ करना
4. न्यूनतम शराब का सेवन
5. पराबैंगनी किरणों से बचाव के लिए सावधानी बरतने में सनस्क्रीन का उपयोग करना और सुरक्षात्मक कपड़े पहनना शामिल है।
6. नियमित आधार पर अनुशंसित कैंसर जांच में भाग लेना
7. पर्यावरण में हानिकारक रसायनों के संपर्क से बचना
8. कैंसर पैदा करने वाले वायरस ह्यूमन पेपिलोमावायरस (एचपीवी) के खिलाफ टीकाकरण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

03 फरवरी 1916, स्थापना दिवस

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में स्थित एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है. इसे प्रायः बीएचयू (बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी) कहा जाता है। इस विश्व विद्यालय की स्थापना (वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय एक्ट, एक्ट क्रमांक १६, सन् १९१५) महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा सन्१९१६ में बसंत पंचमी के पुनीत दिवस पर की गई थी।

दरभंगा के महाराजा रामेश्वर सिंह ने विश्वविद्यालय की स्थापना में आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था दान देकर की. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी जिसका आदर्श वाक्य हैः

विद्ययाऽमृतमश्नुते

अर्थात : विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है।

इस विश्वविद्यालय की विद्यार्थी संख्याः ५००० अनुमानित है। संप्रति इस विश्वविद्यालय के दो परिसर हैं।

मुख्य परिसर (१०० एकड़) वाराणसी में स्थित है जिसकी भूमि काशी नरेश ने दान की थी. मुख्य परिसर में ०६ संस्थान, १४ संकाय और लगभग १४० विभाग है।

विश्वविद्यालय का दूसरा परिसर मिर्जापुर जनपद में बरकछा नामक स्थान (२७०० एकड़) पर स्थित है. ७५ छात्रावासों के साथ यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय है जिसमें ०,००० से अधिक छात्र अध्ययनरत हैं जिनमें लगभग ४ देशों से आये हुए छात्र भी शामिल हैं।

मुख्य परिसर के प्रांगण में भगवान विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर भी है. सर सुंदरलाल चिकित्सालय, गोशाला, प्रेस, बुक-डिपो एवं प्रकाशन, टाउन कमेटी (स्वास्थ्य), पी.डब्ल्यू.डी., स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा, पर्वतारोहण केन्द्र, एन.सी.सी. प्रशिक्षण केंद्र, हिन्दू यूनिवर्सिटी नामक डाकखाना एवं सेवायोजन कार्यालय भी विश्वविद्यालय तथा जनसामान्य की सुविधा के लिए इसमें संचालित हैं।

श्री सुन्दरलाल, पं॰ मदनमोहन मालवीय, डॉ॰ एस. राधाकृष्णन (भूतपूर्व राष्ट्रपति), डॉ॰ अमरनाथ झा, आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ॰ रामस्वामी अय्यर, डॉ॰ त्रिगुण सेन (भूतपूर्व केंद्रीय शिक्षामंत्री) जैसे मूर्धन्य विद्वान यहाँ के कुलपति रह चुके हैं।

विश्वविद्यालय के प्रवेशद्वार के ठीक बाहर मालवीय जी की प्रतिमा स्थापित है।

विश्वविद्यालय के उद्देश्य निम्नलिखित हैंः

1. अखिल जगत की सर्वसाधारण जनता के, एवं मुख्यतः हिन्दुओं के, लाभार्थ हिन्दूशास्त्र तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा का प्रसार करना, जिससे प्राचीन भारत की संस्कृति और उसके उत्तम विचारों की रक्षा हो सके, तथा प्राचीन भारत की सभ्यता में जो कुछ महान तथा गौरवपूर्ण था, उसका निदर्शन हो।

2. सामान्यतः कला तथा विज्ञान की समस्त शाखाओं में शिक्षा एवं अनुसन्धान को बढ़ावा देना।

3. भारतीय घरेलू उद्योगों की उन्नति और भारत की द्रव्य-सम्पदा के विकास में सहायक आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान से युक्त वैज्ञानिक, तकनीकी तथा व्यावसायिक ज्ञान का प्रचार और प्रसार करना।

4. धर्म तथा नीति को शिक्षा का आवश्यक अंग मानकर नवयुवकों में सुन्दर चरित्र का गठन करना।

नर्मदा जयन्ती

मंगलवार को अचला सप्तमी, रथ सप्तमी, भानु सप्तमी, सूर्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी, अर्क सप्तमी, महती सप्तमी, सप्त सप्तमी है। जो माघ स्नान नहीं कर पाता है, यदि वह अचला सप्तमी के दिन विधिपूर्वक तीर्थ स्नान कर लेता है तो उसे माघ स्नान का फल प्राप्त हो जाता है। कल के दिन की समस्त सप्तमी का विस्तृत माहात्म्य और विधान भविष्य पुराण में उल्लेखित है। अचला सप्तमी व्रत करने वाले को वर्षभर रविवार व्रत करने का पुण्य फल प्राप्त हो जाता है। अचला सप्तमी व्रत में नमक रहित एक समय भोजन करने का विधान है।

मङ्गलवार को नर्मदा जयन्ती

मङ्गलवार को रथ सप्तमी, अचला सप्तमी है।

वसन्त ऋतु 18 फरवरी मङ्गलवार से प्रारम्भ होगी।

वायु देवता ने भूतल, अन्तरिक्ष, द्युलोक में साढ़े तीन करोड़ तीर्थ नर्मदा में विद्यमान होना बताया है।

नर्मदा के उत्तर तट पर 11 और दक्षिण तट पर 23 तीर्थ हैं। नर्मदा और समुद्र के संगम को 35 वाँ तीर्थ कहा गया है।

ॐकार - तीर्थ के दोनों ओर अमरकण्टक पर्वत से दो कोस दूर तक सब दिशाओं में गुप्त और प्रकट साढ़े तीन करोड़ तीर्थ विद्यमान हैं। यह सब शैवतीर्थ हैं। 22 वैष्णव तीर्थ हैं। 28 शाक्त तीर्थ हैं। एक तीर्थ क्षेत्रपाल का भी बताया गया है। नर्मदा में जहाँ कहीं भी जो स्नान करता है, वह शुद्ध चित्त होकर उत्तम गति पाता है। नर्मदा तट पर किया हुआ स्नान, दान, जप, होम, वेदाध्ययन और पूजन - सब अक्षय हो जाता है। नर्मदा नदी और उसके तीर्थों का वर्णन स्कन्द पुराण के रेवाखण्ड, पद्म पुराण के भूमि खण्ड, वायु पुराण के उत्तर भाग और नारद पुराण में विस्तृत रूप से उल्लिखित है।

सरस्वती को ही ज्ञान की देवी क्यों माना जाता है ?

मां सरस्वती विद्या, संगीत और बुद्धि की देवी मानी गई हैं। देवीपुराण में सरस्वती को सावित्री, गावत्री, सती, लक्ष्मी और अंबिका नाम से संबोधित किया गया है। प्राचीन ग्रंथों में इन्हें वाग्देवी, वाणी, शारदा, भारती, वीणापाणि, विद्याधरी, सर्वमंगला आदि नामों से अलंकृत किया गया है। यह संपूर्ण संशयों का उच्छेद करने वाली तथा बोधस्वरूपिणी हैं। इनकी उपासना से सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं। ये संगीतशास्त्र की भी अधिष्ठात्री देवी हैं। ताल, स्वर, लय, राग-रागिनी आदि का प्रादुर्भाव भी इन्हीं से हुआ है सात प्रकार के स्वरों द्वारा इनका स्मरण किया जाता है, इसलिए ये स्वरात्मिका कहलाती हैं। सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण ही इनका नाम सरस्वती है। वीणावादिनी सरस्वती संगीतमय आह्लादित जीवन जीने की प्रेरणावस्था है। वीणावादन शरीर यंत्र को एकदम स्थैर्य प्रदान करता है। इसमें शरीर का अंग-अंग परस्पर गुंथकर समाधि अवस्था को प्राप्त हो जाता है। साम-संगीत के सारे विधि-विधान एकमात्र वीणा में सन्निहित हैं। मार्कण्डेयपुराण में कहा गया है कि नागराज अश्वतारा और उसके भाई काम्बाल ने सरस्वती से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। वाक् (वाणी) सत्त्वगुणी सरस्वती के रूप में प्रस्फुटित हुआ। सरस्वती के सभी अंग श्वेताभ हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि सरस्वती सत्त्वगुणी प्रतिभा स्वरूपा हैं। इसी गुण की उपलब्धि जीवन का अभीष्ट है। कमल गतिशीलता का प्रतीक है। यह निरपेक्ष जीवन जीने की प्रेरणा देता है। हाथ में पुस्तक सभी कुछ जान लेने, सभी कुछ समझ लेने की सीख देती है।

देवी भागवत के अनुसार, सरस्वती को ब्रह्मा, विष्णु, महेश द्वारा पूजा जाता है। जो सरस्वती की आराधना करता है, उसमें उनके वाहन हंस के नीर-क्षीर-विवेक गुण अपने आप ही आ जाते हैं। माघ माह में शुक्ल पक्ष की पंचमी को बसंत पंचमी पर्व मनाया जाता है, तब संपूर्ण विधि-विधान से मां सरस्वती का पूजन करने का विधान है। लेखक, कवि, संगीतकार सभी सरस्वती की प्रथम वंदना करते हैं। उनका विश्वास है कि इससे उनके भीतर रचना की ऊर्जा शक्ति उत्पन्न होती है। इसके अलावा मां सरस्वती देवी की पूजा से रोग, शोक, चिंताएं और मन का संचित विकार भी दूर होता है। इस प्रकार वीणाधारिणी, वीणावादिनी मां सरस्वती की पूजा-आराधना में मानव कल्याण का समग्र जीवनदर्शन निहित है। सतत अध्ययन ही सरस्वती की सच्ची आराधना है। याज्ञवल्क्य वाणी स्तोत्र, वसिष्ठ स्तोत्र आदि में सरस्वती की पूजा उपासना का विस्तृत वर्णन है।

एक समय ब्रह्माजी ने सरस्वती से कहा- 'तुम किसी योग्य पुरुष के मुख में कवित्वशक्ति होकर निवास करो। उनकी आज्ञानुसार सरस्वती योग्य पात्र की तलाश में निकल पड़ी। पीड़ा से तड़प रहे एक पक्षी को देखकर जब महर्षि वाल्मीकि ने द्रवीभूत होकर यह श्लोक कहा

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

वाल्मीकि की असाधारण योग्यता और प्रतिभा का परिचय पाकर सरस्वती ने उन्हीं के मुख में सर्वप्रथम प्रवेश किया। सरस्वती के कृपापात्र होकर महर्षि वाल्मीकि ही 'आदिकवि' के नाम से संसार में विख्यात हुए।

रामायण के एक प्रसंग के अनुसार जब कुंभकर्ण की तपस्या से संतुष्ट होकर ब्रह्मा उसे वरदान देने पहुंचे, तो उन्होंने सोचा कि यह दुष्ट कुछ भी न करे, केवल बैठकर भोजन ही करे, तो यह संसार उजड जाएगा। अतः उन्होंने सरस्वती को बुलाया और कहा कि इसकी बुद्धि को भ्रमित कर दो। सरस्वती ने कुंभकर्ण की बुद्धि विकृत कर दी। परिणाम यह हुआ कि वह छह माह की नींद मांग बैठा। इस प्रकार कुंभकर्ण में सरस्वती का प्रवेश उसकी मृत्यु का कारण बना। मार्कण्डेयपुराण में एक कथा का उल्लेख मिलता है, जिसके अनुसार एक बार महर्षि जैमिनी विंध्य के

जंगलों से गुजर रहे थे वहां उन्होंने देखा कि कुछ पक्षी वेदपाठ कर रहे हैं। उनका उच्चारण शुद्ध और व्याकरण सम्मत था। शायद वे शापग्रस्त पक्षी थे, परंतु देवी सरस्वती की कृपा से वे वेदपाठ कर रहे थे।

चना

चना मात्र एक दाल या बेसन नही अपितु कई रोगों के उपचार की गुणवान औषधि भी है। जानिए चना के औषधीय गुण

आयुर्वेद में चने की दाल और चने को शरीर के लिए स्वास्थवर्धक बताया गया है। चने के सेवन से कई रोग ठीक हो जाते हैं। क्योंकि इसमें प्रोटीन, नमी, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, कैल्शियम और विटामिन्स पाये जाते हैं।

स्वास्थ्य के लिए यह दूसरी दालों से पौष्टिक आहार है। चना शरीर को बीमारियों से लड़ने में सक्षम बनाता है और साथ ही यह दिमाग को तेज और चेहरे को सुंदर बनाता है। चने के सबसे अधिक फायदे इन्हे अंकुरित करके खाने से होते है !

1. सुबह खाली पेट चने से मिलते है कई फायदे शरीर को सबसे ज्यादा पोषण काले चनों से मिलता है। काले चने अंकुरित होने चाहिए। क्योंकि इन अंकुरित चनों में सारे विटामिन्स और क्लोरोफिल के साथ फास्फोरस आदि मिनरल्स होते हैं जिन्हें खाने से शरीर को कोई बीमारी नहीं लगती है। काले चनों को रातभर भिगोकर रख लें और हर दिन सुबह दो मुट्ठी खाएं। कुछ ही दिनों में फर्क दिखने लगेगा !

2. भीगे चने से लाभ रातभर भीगे हुए चनों से पानी को अलग कर उसमें अदरक, जीरा और नमक को मिक्स कर खाने से कब्ज और पेट दर्द से राहत मिलती है !

3. अंकुरित चना शरीर की ताकत बढ़ाने के लिए अंकुरित चनों में नींबू, अदरक के टुकड़े, हल्का नमक और काली मिर्च डालकर सुबह नाश्ते में खाएं। आपको पूरे दिन की एनर्जी मिलेगी !

4. चने का सत्तू चने का सत्तू भी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी औषधि है। शरीर की क्षमता और शक्ति को बढ़ाने के लिए गर्मीयों में आप चने के सत्तू में नींबू और नमक मिलकार पी सकते हैं। यह भूख को भी शांत रखता है !

5. पथरी की समस्या में चना पथरी की समस्या अब आम हो गई है। दूषित पानी और दूषित खाना खाने से पथरी की समस्या बढ़ रही है। गाल ब्लैडर और किड़नी में पथरी की समस्या सबसे अधिक हो रही है। ऐसे में रातभर भिगोए चनों में थोड़ा शहद मिलाकर रोज सेवन करें। नियमित इन चनों का सेवन करने से पथरी आसानी से निकल जाती है। इसके अलावा आप आटे और चने का सत्तू को मिलाकर बनी रोटियां भी खा सकते हो !

6. शरीर की गंदगी साफ करना काला चना शरीर के अंदर की गंदगी को अच्छे से साफ करता है। जिससे डायबिटीज, एनीमिया आदि की परेशानियां दूर होती हैं। और यह बुखार आदि में भी लाभ देता है !

7. डायबिटीज के रोगियों के लिए चना ताकतवर होता है। यह शरीर में ज्यादा मात्रा में ग्लूकोज को कम करता है जिससे डायबिटीज के मरीजों को फायदा मिलता है। इसलिए अंकुरित चनों को सेवन डायबिटीज के रोगियों को सुबह-सुबह करना चाहिए !

8. मूत्र संबंधी रोग मूत्र से संबंधित किसी भी रोग में भुने हुए चनों का सवेन करना चाहिए। इससे बार-बार मूत्र आने की दिक्कत दूर होती है। भुने हुए चनों में गुड मिलाकर खाने से यूरीन की किसी भी तरह समस्या में राहत मिलती है !

9. पौरुष शक्ति के लिये अधिक काम और तनाव की वजह से पुरूषों में कमजोरी होने लगती है। ऐसे में अंकुरित चना किसी वरदान से कम नहीं है। पुरूषों को अंकुरित चनों को चबा-चबाकर खाने से कई फायदे मिलते हैं। इससे पुरूषों की कमजोरी दूर होती है। भीगे हुए चनों के पानी के साथ शहद मिलाकर पीने से पौरूषत्व बढ़ता है। और नपुंसकता दूर होती है !

10. पीलिया के रोग में पीलिया की बीमारी में चने की 100 ग्राम दाल में दो गिलास पानी डालकर अच्छे से चनों को कुछ घंटों के लिए भिगो लें और दाल से पानी को अलग कर लें अब उस दाल में 100 ग्राम गुड़ मिलाकर 4 से 5 दिन तक रोगी को देते रहें। पीलिया से लाभ जरूरी मिलेगा। पीलिया रोग में रोगी को चने की दाल का सेवन करना चाहिए !

11. कुष्ठ रोग में चना कुष्ठ रोग से ग्रसित इंसान यदि तीन साल तक अंकुरित चने खाएं। तो वह पूरी तरह से ठीक हो सकता है !

12. गर्भावस्था गर्भवती महिला को यदि मितली या उल्टी की समस्या बार-बार होती हो। तो उसे चने का सत्तू पिलाना चाहिए।

13. अस्थमा रोग में अस्थमा से पीड़ित इंसान को चने के आटे का हलवा खाना चाहिए। इस उपाय से अस्थमा रोग ठीक होता है !

14. त्वचा की समस्या में चने के आटे का नियमित रूप से सेवन करने से थोड़े ही दिनों में खाज, खुजली और दाद जैसी त्वचा से संबंधित रोग ठीक हो जाते हैं !

15. पुरानी कफ़ लंबे समय से चली आ रही कफ की समस्या में भुने हुए चनों को रात में सोते समय अच्छे से चबाकर खाएं और इसके बाद दूध पी लें। यह कफ और सांस की नली से संबंधित रोगों को ठीक कर देता है !

16. चेहरे की चमक के लिए चना चेहरे की रंगत को बढ़ाने के लिए नियमित अंकुरित चनों का सेवन करना चाहिए। साथ ही आप चने का फेस पैक भी घर पर बनाकर इस्तेमाल कर सकेत हो। चने के आटे में हल्दी मिलाकर चेहरे पर लगाने से त्वचा मुलायम होती है। महिलाओं को हफ्ते में कम से कम एक बार चना और गुड जरूर खाना चाहिए !

17. दाद खाज और खुजली एक महीने तक चने के आटे की रोटी का सेवन करने से त्वचा की बीमारियां जैसे खुजली, दाद और खाज खत्म हो जाती हैं !

18. धातु पुष्ट दस ग्राम शक्कर और दस ग्राम चने की भीगी हुई दाल को मिलाकर कम से कम एक महीने तक खाने से धातु पुष्ट होती है !

अपने स्वास्थ्य के लिए चने को अपने भोजन में सम्मिलित करें क्योंकि यह किसी औषधि से कम नहीं है और अंकुरित चनों का प्रयोग प्रतिदिन किया जा सकता हैं।

सभी सुखी और निरोगी रहे

क्या आप जानते हैं मृत्यु के पश्चात मनुष्य के साथ मनुष्य की पाँच वस्तुएँ साथ जाती हैं ?

1. कामना-यदि मृत्य के समय हमारे मन मे किसी वस्तु विशेष के प्रति कोई आसक्ति शेष रह जाती है ।कोई इक्षा अधूरी रह जाती है ।कोई अपूर्ण कामना रह जाती है ।तो मरणोपरांत भी वही कामना उस जीवात्मा के साथ जाती है।

2. वासना- वासना कामना की ही साथी है। वासना का अर्थ केवल शारिरिक भोग से नही अपितु इस संसार मे भोगे हुए हर उस सुख से है ।जो उस जीवात्मा को आनन्दित करता है। फिर वो घर हो ,पैसा हो ,गाड़ी हो, रूतबा हो,या शौर्य। मृत्यु के बाद भी ये अधूरी वासनाएं मनुष्य के साथ ही जाती हैं।और मोक्ष प्राप्ति में बाधक होती है।

3. कर्म- मृत्यु के बाद हमारे द्वारा किये गए कर्म चाहे वो सुकर्म हो अथवा कुकर्म हमारे साथ ही जाता है। मरणोपरांत जीवात्मा अपने द्वारा किये गए कर्मो की पूँजी भी साथ ले जाता है। जिस के हिसाब किताब द्वारा उस जीवात्मा का यानी हमारा अगला जन्म निर्धारित किया जाता है।

4. कर्ज़- यदि मनुष्य ने हमने -आपने जीवन मे कभी भी किसी प्रकार का ऋण लिया हो ।तो उस ऋण को यथासम्भव उतार देना चाहिए। ताकि मरणोपरांत इसलोक से उस ऋण को उसलोक में अपने साथ न ले जाना पड़े।

5. पूण्य- हमारे द्वारा किये गए दान-दक्षिणा व परमार्थ के कार्य ही हमारे पुण्यों की पूंजी होती है। इसलिए हमें समय-समय पर अपने सामर्थ्य अनुसार दान-दक्षिणा एवं परमार्थ और परोपकार आवश्य ही करने चाहिए।

इन्ही पांचों वस्तुओं से ही मनुष्य को इस मृत्युलोक को छोड़ कर परलोक जाने पर लोक अथवा अगले जन्म की प्रक्रिया का चयन किया जाता है !

चुनाव आयोग कभी भी घर जाकर वोटिंग नहीं करवाता है, ये लोग आपके साथ बहुत बड़ा धोखा करने जा रहे हैं- केजरीवाल

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने गरीब वर्ग खासकर झुग्गियों में रहने वाले लोगों को सचेत किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग आपके पास आकर कहेंगे कि वो चुनाव आयोग से आए हैं और आपकी उंगली पर काली स्याही लगाकर कहेंगे कि 3000 रुपए लेकर वोट डाल दो। ये सब झूठ बोल रहे हैं। चुनाव आयोग कभी भी घर आकर वोटिंग नहीं करवाता है। आम आदमी पार्टी ऐतिहासिक जीत और भाजपा अपनी सबसे बुरी हार की तरफ बढ़ रही है। इसलिए अब ये लोग दिल्ली पुलिस को भी गुंडागर्दी करने के लिए उतारेंगे। भाजपा की गुंडागर्दी रोकने के लिए हमने स्पाई और बॉडी कैमरा झुग्गियों और कार्यकर्ताओं में बांट दिए हैं, जिसमें सब रिकॉर्ड होगा। अगर आपने 3-4 हजार रुपए के बदले अपनी उंगली पर काला निशान लगवा लिया तो समझना आपने अपना वारंट लिखवा लिया है। क्योंकि इनकी गंदी नजर आपकी झुग्गी और जमीनों पर है। अगर ये आ गए तो आपकी झुग्गी तुड़वाकर जमीन अपने दोस्तों को दे देंगे।

भाजपा हार रही है, इसलिए अब ये अपने गुंडों से जनता को डराएंगे-धमकाएं- केजरीवाल

उन्होंने सोमवार को वर्चुअल प्रेसवार्ता कर कहा कि अब पूरी दिल्ली के माहौल से यह तो साफ हो गया है कि आम आदमी पार्टी ऐतिहासिक जीत की तरफ बढ़ रही है और भाजपा अपनी अब तक की सबसे बुरी हार की तरफ बढ़ रही है। इसलिए जाहिर तौर पर भाजपा अब कुछ भी करेगी। भाजपा के अंदर से जो खबरें आ रही हैं, उसके हिसाब से अब वो दिल्ली पुलिस का बेजा इस्तेमाल करने वाली है। सारे कानून, संविधान एक तरफ ताक पर रखकर दिल्ली पुलिस को अब पूरी तरह गुंडई पर उतारा जाएगा। ये अपने खूब सारे गुंडों का इस्तेमाल करके लोगों को डराएंगे-धमकाएंगे और सबकुछ करेंगे। लेकिन जो सबसे खतरनाक चीज निकलकर आ रही है, वो यह है कि अब ये लोग आम जनता खासकर गरीब तबके के लोगों के पास आएंगे। ये आपको पैसे देंगे और एक डिब्बा लेकर आएंगे। ये लोग कहेंगे कि हम चुनाव आयोग से आए हैं और एक कागज देकर बोलेंगे कि आप अपना वोट इसमें डाल दो। और अपनी उंगली पर काली स्याही लगवा लो। हमने 4-5 हजार रुपए ले लो।

इनके बहकावे में आकर किसी भी हालत में वोट घर पर नहीं डालना- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पहले आपको यह जानकारी दे दूं कि चुनाव आयोग घर जाकर वोटिंग नहीं करवाता है। इस धोखे में मत रह जाना। यह झूठ, फरेब, धोखा है। ये लोग जो करने जा रहे हैं वो बहुत बड़ा धोखा है। इन्होंने यह काम करना भी शुरु कर दिया है। मुझे कई झुग्गियों से फोन आ रहे हैं कि ये लोग घर-घर जाकर कह रहे हैं कि हम चुनाव से पहले वाली रात को आएंगे और आपके घर पर ही आपके वोट डलवाकर ले जाएंगे। जबकि वोट घर पर नहीं डलता है। किसी हालत में वोट घर पर नहीं डलता है। इनके धोखे में मत आना। वह केवल आपकी उंगली पर काला निशान लगाने आ रहे हैं, ताकि आप वोट डालने न जा सकें। अगर आपकी उंगली पर काला निशान लगाते हैं तो बिल्कुल मत लगवाना।

अगर आप बूथ पर वोट डालने नहीं गए तो अपने परिवार के साथ धोखा करेंगे- केजरीवाल

उन्होंने कहा कि अगर आप वोट डालने नहीं गए तो ये सोच लेना कि आप अपने और अपने परिवार के साथ धोखा कर रहे हैं। एक तरह से आप अपनी आत्महत्या का वारंट लिखवा रहे हो। इनकी नजर आपकी जमीनों पर है। अगर भाजपा दिल्ली में आ गई तो एक साल के अंदर ये आपकी सारी झुग्गियां तोड़ देंगे और आपकी जमीन अपने दोस्तों को दे देंगे। मुंबई में धारावी इलाके की जमीन भी इन्होंने अपने दोस्त को दे दी। ये दिल्ली की झुग्गियों को भी नहीं छोड़ने वाले हैं। दिल्ली की सारी झुग्गियां तोड़ देंगे और यह जमीन उठाकर अपने दोस्त को दे देंगे। इनकी नजर आपकी जमीनों पर है।

अगर उंगली पर काली स्याही लगवा ली तो फिर वोट डालने नहीं जा पाएंगे- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि इनके धोखे में मत आना केवल 3-4 हजार रुपए के लिए अपने परिवार को मत बेच देना। अपने सिर से छत मत गिरने देना। आपके सिर से छत टूट जाएगी अगर आपने केवल तीन-चार हजार रुपए के लिए अपनीं उंगली पर काला निशान लगवा लिया तो। आप किसी भी हालत में काला निशान मत लगवाना। ये आपको आकर डराएंगे, पैसे देंगे और कहेंगे कि हमें पता चल जाता है कि अंदर किसे वोट दिया है। किसी को कुछ पता नहीं चलता है। अगर ये पैसे या कोई सामान दें तो ले लेना लेना लेकिन उसके बदले में अपनी उंगली पर काला निशान बिल्कुल नत लगवाना। क्योंकि उसका मतलब है कि आप अगले दिन वोट डालने नहीं जा पाओगे। इनको किसी को पता नहीं चलता कि अंदर किसे वोट दिया है।

''आप'' ने भाजपा की गुंडागर्दी रोकने के लिए बड़े स्तर पर इंतजाम किया है- केजरीवाल

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने बहुत बड़े स्तर पर यह सारी गुंडागर्दी रोकने का इंतजाम किया है। पूरी दिल्ली के अंदर जगह-जगह स्पाई कैमरा और बॉडी कैमरा दिए जा रहे हैं। यह एक तरह से छिपा हुआ जासूसी कैमरा होता है और इनसे सारी रिकॉर्डिंग हो जाती है। यह सारे कैमरे पूरी दिल्ली में जगह-जगह झुग्गी-बस्तियों के अंदर और गरीब तबकों के अंदर बांट दिए गए हैं। साथ ही यह हमारे वॉलंटियर्स, कार्यकर्ताओं और समर्थकों को दे दिए गए हैं। अगर भाजपा कुछ भी करती है तो वह तुरंत कैमरे के अंदर रिकॉर्ड हो जाएगा और हम इन लोगों के ऊपर कार्रवाई करवाएंगे।

हर घटना की सूचना दें, हमारी क्विक रेस्पॉन्स टीम 10-15 मिनट में पहुंच जाएगी- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पूरी दिल्ली के अंदर कई ऐसे मीडिया के लोग हैं जो देश से प्यार करते हैं। कई मीडियाकर्मी झुग्गियों के अंदर जाकर रात में सोने के लिए तैयार हो गए हैं। वो रात में वहीं सोएंगे और अगर भाजपा के गुंडे किसी भी तरह की हरकत करते हैं तो रात में ही इसका लाइव टेलिकास्ट किया जाएगा। कई मीडिया हाउस से हमारी बात हुई है और वो लोग इसके लिए तैयार हो गए हैं। बाकी मीडिया हाउस से भी मेरा निवेदन है कि पूरे देश में हर भाषा के टीवी चैनल दिल्ली पहुंचें और दिल्ली की हर झग्गी-बस्ती के अंदर अपनी वैन खड़ी कर दें। वो लोग अपने-अपने पत्रकार, एंकर खड़ें कर दें। ताकि इनकी गुंडागर्दी और बेशर्मी को पूरे देश के सामने उजागर किया जा सके। हमने पूरी दिल्ली के अंदर क्विक रेस्पॉन्स टीम बनाई है। ऐसी कोई घटना रिपोर्ट होने पर वह टीम 10 से 15 मिनट के अंदर तुरंत आपके यहां पहुंच जाएगी और इन लोगों को गैर संवैधानिक और गैर कानूनी काम करने से रोकेगी। हमारी टीम इन्हें यह पाप करने से रोकेगी और हम इन्हें गिरफ्तार करवाएंगे।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने शशि थरूर को किया तलब, भाजपा नेता राजीव चंद्रशेखर के मानहानि का मामला

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को भाजपा नेता राजीव चंद्रशेखर द्वारा दायर मानहानि याचिका पर कांग्रेस नेता शशि थरूर को तलब किया। न्यायमूर्ति पुरुषेंद्र कुमार कौरव ने मामले की अगली सुनवाई 28 अप्रैल को तय की।

अदालत ने कहा, शिकायत को मुकदमे के रूप में पंजीकृत किया जाए। प्रतिवादी (थरूर) को समन जारी किया जाए। मामले को 28 अप्रैल को संयुक्त रजिस्ट्रार के समक्ष सूचीबद्ध किया जाए।''कि लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा नेता राजीव चंद्रशेखर ने अपने कांग्रेस समकक्ष शशि थरूर को मानहानि का कानूनी नोटिस भेजा था।

भ्रामक जानकारी फैलाने का आरोप

अपने नोटिस में राजीव चंद्रशेखर ने थरूर पर तिरुवनंतपुरम के लोगों के बीच स्पष्ट रूप से गलत सूचना प्रसारित करने का आरोप लगाया था, जिसमें कथित तौर पर प्रमुख मतदाताओं और पादरी जैसे प्रभावशाली लोगों को रिश्वत दिए जाने की बात कही गई थी।

चंद्रशेखर ने केरल स्थित समाचार संगठन '24 न्यूज' के साथ एक टीवी साक्षात्कार में शशि थरूर द्वारा लगाए गए आरोपों पर आश्चर्यव्यक्त किया था।

भाजपा नेता ने यह भी मांग की थी कि शशि थरूर को अपने लापरवाही भरे बयान वापस लेने चाहिए और सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए अन्यथा कानूनी परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।

नोटिस में क्या लिखा था?

नोटिस में लिखा था, "उपर्युक्त समाचार चैनल पर हमारे मुवक्किल यानी राजीव चंद्रशेखर के खिलाफ 06.04.2024 को नोटिस प्राप्तकर्ता द्वारा लगाए गए सभी आरोपों और आक्षेपों को तुरंत वापस लें।"

नोटिस प्राप्तकर्ता द्वारा लगाए गए निराधार आरोपों और आक्षेपों के संबंध में अपने मुवक्किल से उनकी संतुष्टि के लिए प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से बिना शर्त सार्वजनिक माफी मांगना और किसी भी अवांछित मामले को फैलाने, मानहानि, उत्पीड़न और हमारे मुवक्किल की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने से तुरंत बचना और अफवाहों को फैलाने से बचना और भविष्य में ऐसी किसी भी गतिविधि में शामिल होने से बचना।

नुकसान पहुंचाने के इरादे

कानूनी नोटिस में यह भी कहा गया है कि थरूर ने राजीव चंद्रशेखर को नुकसान पहुंचाने के इरादे से ये बयान दिए हैं। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे इस तरह के अपमानजनक बयानों ने तिरुवनंतपुरम के पूरे ईसाई समुदाय और उसके नेताओं को नुकसान पहुंचाया है और उनका अपमान किया है, क्योंकि उन पर कैश-फॉर-वोट गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया गया है। इसमें 24 घंटे के भीतर सार्वजनिक रूप से माफ़ी माँगने की भी माँग की गई है।

बसपा प्रत्याशी वकार चौधरी के विशाल रोड शो में उमड़ा जनसमूह

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव के आखिरी चरण में सभी उम्मीदवार अपनी पूरी ताकत झोंक रहे हैं। इसी कड़ी में लक्ष्मी नगर विधानसभा क्षेत्र से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी वकार चौधरी के भव्य रोड शो, बाइक रैली में भारी जनसमूह देखने को मिला। यह रैली विकास मार्ग से प्रारंभ हुई और शकरपुर, मंगल बाजार, आईपी एक्सटेंशन, गणेश नगर, प्रेम नगर, नरेंद्र नगर होते हुए बसपा पार्टी कार्यालय, गुरुद्वारा रोड, रमेश पार्क पर सम्पन्न हुई।

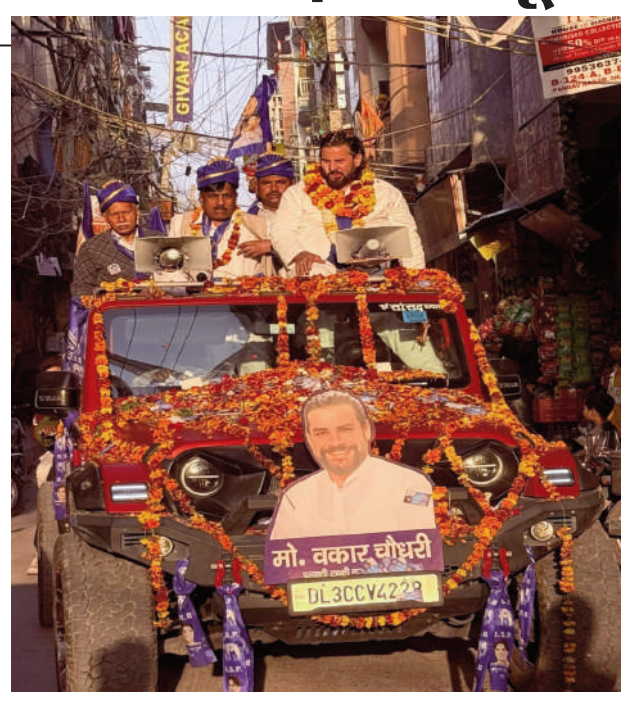

इस दौरान हजारों की संख्या में समर्थक रोड शो और बाइक रैली में शामिल हुए। पूरे इलाके में ढोल-नगाड़ों की गूंज और लोगों के समर्थन के नारों से माहौल उत्साहित हो उठा। वकार चौधरी ने इस अवसर पर स्थानीय निवासियों से मुलाकात की और उनसे समर्थन की अपील की।

भीड़ और जनता का उत्साह देखकर राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि वकार चौधरी मजबूत स्थिति में हैं और चुनाव में कड़ी टक्कर दे सकते हैं। इस प्रचार अभियान में विधानसभा क्षेत्र के कई वरिष्ठ नेताओं और बीएसपी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इसके अलावा, वकार चौधरी के परिवार के सदस्य भी प्रचार अभियान में सक्रिय रहे और उन्होंने बुजुर्गों एवं महिलाओं से समर्थन एवं वोट देने की अपील की।

''आप'' की सरकार बनने पर महिला सम्मान योजना लागू कर हर महिला को 2100-2100 रुपए देंगे- मनीष सिसोदिया

सुषमा रानी

नई दिल्ली, 03 फरवरी आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और जंगपुरा से प्रत्याशी मनीष सिसोदिया ने सोमवार को जंगपुरा विधानसभा में विशाल बाइक रैली निकाली। बाइक रैली जनता का जबरदस्त प्यार मिला। इस दौरान उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि आप अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए झाड़ू का बटन दबाकर आम आदमी पार्टी की सरकार बनाएं। सरकार बनने के बाद महिला सम्मान योजना को लागू कर हर महिला को 2100-2100 रुपए उनके खाते में डालेंगे। साथ ही, हर गली-मोहल्ले में सड़क, सीवर और पानी समेत सभी समस्याओं का समाधान करेंगे।

मनीष सिसोदिया ने जनता से अपील करते हुए कहा कि 5 फरवरी को झाड़ू का बटन दबाकर आम आदमी पार्टी को वोट दें। आप अपनी गली मोहल्ले की सड़क, सीवर और पानी की समस्याओं को दूर कराने के लिए आम आदमी पार्टी को वोट करें। मैं इन सब समस्याओं को अगले कुछ महीने में कुछ करा दूंगा। 5 फरवरी को झाड़ू का बटन दबाकर अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए वोट करें। झाड़ू का बटन दबाकर अच्छे अस्पतालों के लिए वोट करें। अरविंद केजरीवाल की महिला सम्मान योजना के तहत हर महिला को महीने के 2100-2100 रुपए मिल सकें, इसके लिए 5 फरवरी को झाड़ू का बटन दबाएं। महिलाओं की फ्री यात्रा के लिए झाड़ू का बटन दबाएं। जंगपुरा विधानसभा की हर कॉलोनी में गुंडागर्दी और भू-माफियओं को ताकतवर बनने से रोकने के लिए झाड़ू को वोट करें।

ढोल बजाकर किया जोरदार स्वागत

मनीष सिसोदिया की बाइक रैली में सैकड़ों समर्थकों ने हिस्सा लिया और पार्टी के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया। रैली के दौरान समर्थकों ने मनीष सिसोदिया का फूल माला पहनाकर और ढोल बजाकर जोरदार स्वागत किया। समर्थकों के हाथों में आम आदमी पार्टी के समर्थन में झंडे और पोस्टर थे। वहीं, कई लोग आम आदमी पार्टी का चुनाव चिन्ह झाड़ू लेकर भी पहुंचे थे।

लोगों में दिखा जबरदस्त उत्साह

मनीष सिसोदिया की बाइक रैली में समर्थकों ने 'फिर लाएंगे केजरीवाल, केजरीवाल जिंदाबाद, आम आदमी पार्टी जिंदाबाद और मनीष सिसोदिया जिंदाबाद के जमकर नारे लगाए। रैली के माध्यम से आम आदमी पार्टी ने जनता तक अपनी नीतियों और विकास कार्यों को पहुंचाने का संदेश दिया। इस दौरान समर्थकों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। लोग आम आदमी पार्टी के कैंपेन गाने 'फिर लाएंगे केजरीवाल" पर जमकर डांस भी किया।

सेल्फी लेने की मची होड़

मनीष सिसोदिया की रैली जिस भी गली और सड़क से होकर गुजर रही थी, वहां लोगों की भीड़ लग गई। सभी लोगों ने मनीष सिसोदिया को अपना समर्थन दिया। इस दौरान मनीष सिसोदिया ने भी कई लोगों से मुलाकात कर उनके बातचीत की और उनसे जीत का आशीर्वाद लिया। इस दौरान लोगों के बीच मनीष सिसोदिया के साथ सेल्फी लेने की भी होड़ मची हुई थी।

दिल्ली-एनसीआर में सुधरी हवा की गुणवत्ता, हटी ग्रैप तीन की पाबंदियां

दिल्ली में प्रदूषण के स्तर में सुधार के साथ ही ग्रैप तीन की पाबंदियां हटा दी गई हैं। 30 जनवरी को हवा की खराब गुणवत्ता के कारण ग्रैप तीन लागू किया गया था। हालांकि ग्रैप 1 और 2 की पाबंदियां अभी भी लागू रहेंगी। इस बदलाव के साथ ही राजधानी और इसके आसपास के इलाकों में कई गतिविधियां फिर से शुरू हो जाएंगी।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में प्रदूषण के स्तर में कमी आते ही ग्रैप तीन की पाबंदियां हटा ली गई है। बता दें, हवा की गुणवत्ता खराब होते ही 30 जनवरी को ग्रैप तीन को लागू किया गया था। हालांकि ग्रैप 1 और 2 की पाबंदियां फिलहाल लागू रहेंगी। इसके साथ ही कई गतिविधियां फिर से चालू हो जाएगी।

रेगुलर चल सकेंगे पांचवीं कक्षा तक के स्कूल

ग्रैप 3 की पाबंदियां हटने के साथ ही दिल्ली-एनसीआर में पांचवीं कक्षा तक के स्कूल हाइब्रिड मोड से खत्म होकर रेगुलर चल सकेंगे। ग्रैप के नियमों का पालन नहीं करने पर जिन निर्माण परियोजनाओं और विध्वंस स्थलों को बंद करने का अलग से आदेश जारी हुआ था, उस पर रोक जारी रहेगी। स्टोन क्रसर मशीनों के संचालन, खनन और उससे जुड़ी गतिविधियों पर लगी रोक खत्म हो गई है। बीएस चार डीजल इंजन वाले माल वाहक वाहनों के दिल्ली में प्रवेश करने पर लगी रोक भी हट गई है।

ये प्रतिबंध भी हटे

दिल्ली में पंजीकृत बीएस चार या उससे कम मानक के डीजल इंजन एमजीवी (मीडियम गुड्स व्हीकल) का राष्ट्रीय राजधानी में परिचालन पर लगा प्रतिबंधित हटा।

दिल्ली के बाहर पंजीकृत बीएच चार या उससे कम मानक के डीजल इंजन के हल्के व्यवसायिक वाहनों के दिल्ली में प्रवेश पर लगी रोक हटी।

दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद व गौतम बुद्ध नगर में सरकारी दफ्तरों व सिविक एजेंसियों के कार्यालय के ड्यूटी के समय में बदलाव कर दफ्तरों के खोलने और बंद करने का समय अलग-अलग निर्धारित करने की अनिवार्यता खत्म।

कांग्रेस दिल्ली के प्रति अपनी प्रतिबद्धता निभाऐंगी, सरकार बनने पर हर दिल्लीवासी तक पहुंचेगी पांचों गारंटियां। - देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय राजीव भवन में आज दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने दिल्ली के प्रति प्रतिबद्धता निभाने के लिए दिल्ली प्रतिज्ञा पढ़ी। देवेन्द्र यादव के साथ पूर्व सांसद और नई दिल्ली विधानसभा प्रत्याशी संदीप दीक्षित, दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री और बल्लीमारान से कांग्रेस प्रत्याशी हारुन यूसूफ, पूर्व सांसद डा0 उदित राज, कांग्रेस प्रवक्ता अभय दूबे, ज्योति सिंह, कम्युनिकेशन विभाग के डा0 अरुण अग्रवाल, रश्मि सिंह मिगलानी और आस्मा तस्लीम ने भी दिल्ली प्रतिज्ञा ली।

''हम प्रतिज्ञा लेते हैं कि दिल्ली में कांग्रेस की सरकार बनने पर दिल्ली का वायु प्रदूषण दूर करेंगे, साफ़ पानी का प्रबंध करेंगे, दिल्ली को कूड़ा मुक्त करेंगे, जाम से मुक्ति दिलाएँगे, यमुना की सफ़ाई करेंगे, ग़रीबों, दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों, पिछड़ों, पूर्वांचल के भाई बहनों के हितों का संरक्षण करेंगे। बहनों के खाते में 2500 रू प्रतिमाह डालेंगे, 25 लाख तक का इलाज मुफ़्त करेंगे, युवाओं की पहली नौकरी पक्की करेंगे, 300 यूनिट बिजली मुफ़्त देंगे। महंगाई से मुक्ति दिलाएँगे जिसमें 500 रू में गैस सिलेंडर और रसोई किट देंगे। हमारे घोषणा पत्र को लागू कर स्वर्णिम दिल्ली के स्वप्न को साकार करेंगे।''

दिल्ली की हर ज़रूरत होगी पूरी, क्योंकि कांग्रेस है ज़रूरी।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली की जनता का धन्यवाद करता हूँ जो कांग्रेस कार्यकर्ता के साथ मिलकर कांग्रेस का चुनाव लड़ रही है। लगभग 8 महीने पहले लोकसभा चुनाव के वक्त कमजोर दिखते संगठन को मजबूत बनाने में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिस उर्जा के साथ दिल्ली की जनता से जुड़ा है, वो अप्रत्याशित है। इस बार विशेष चुनाव देखने को मिल रहा है, जो जनता पिछले 11 वर्षों से आम आदमी पार्टी और भाजपा से त्रस्त थी, उसे कांग्रेस का न सिर्फ प्यार और आर्शीवाद मिल रहा है बल्कि जनता कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ खड़ी भी दिखाई दे रही है, जिसने हमारे प्रत्याशियों और कार्यकर्ताओं द्वारा सड़कों पर उतरकर, घर-घर जाकर, दरवाजा खटखटाकर लोगों से सम्पर्क साधकर इस चुनाव में कांग्रेस को जीत के मुहाने पर पहुँचा दिया है।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली का शीला दीक्षित के शासन का 15 वर्षों का स्वर्णिम काल जिसमें दिल्ली को विश्वस्तरीय शहर बनाया था, जिस तरीके से पिछले 11 वर्षों आम आदमी पार्टी और भाजपा ने मिलकर ध्वस्त किया है, आज जरुरत है वहीं पुरानी दिल्ली बनाने की, जिसमें मेट्रो बनी, सीएनजी बसें चलती थी, ग्रीन कवर बढ़ा और इसके साथ सामाजिक सुरक्षा भी विशेष ध्यान रखा जाता था। आज कुछ लोग फ्री की बात करके लोगों को भ्रमित कर रहे है। शीला की सरकार में समाज में पिछड़े लोगां के लिए उसको बराबरी की दर्जा देने के लिए काम किया। शीला के समय में हम 100 यूनिट फ्री बिजली देते थे, 100-200 यूनिट पर 50 प्रतिशत की सब्सिडी देते थे, वृद्धों को पेंशन, 70 वर्ष से अधिक वालां को 2500 रुपये देते थे और दिल्ली को केरोसीन मुक्त बनाया इसके लिए हमने रसोई गैस सिलेंडर और चूल्हे मुफ्त दिए थे। राशन का कोटा खत्म होने पर हमने अन्नश्री योजना लाकर लोगों को उसमें जोड़ने का काम किया। हमारी विकास और इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाने के साथ प्रदूषण को कम करने भी कोशिश रहती थी। सामाजिक सुरक्षा के तहत एससी/ एसटी/ ओबीसी के कल्याण के लिए विशेष योजनाएं जैसे स्कॉलरशिप, उच्च शिक्षा की व्यवस्था करना सभी हमने अपने 15 वर्षों के शासन में सुनियोजित करने की कोशिश की थी। लेकिन

10 सालों में आम आदमी पार्टी और भाजपा की अनदेखी के कारण सब कुछ पिछड़ गया है, जिसके कारण आज जनता इन दोनो पार्टियों के खिलाफ खड़ी होकर कांग्रेस का चुनाव हमारे कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर लड़ रही है और जनता निर्णय ले चुकी है कि कांग्रेस को वापस लाना है, जिससे हमारे हौसले भी बुलंद है और यह उम्मीद भी जगी है कि 8 तारीख को जब नतीजे आऐंगे तो एक मजबूत सरकार दिल्ली में लाने में हम कामयाब होंगे, जिससे हमें दिल्ली का स्वर्णिम काल लौटाने में मदद मिलेगी।

हारुन यूसूफ ने कहा कि पिछले 11 वर्षों के विनाश को कारण दिल्ली के लोग जमीन पर देखने को मजबूर हो गए है, क्योंकि अब से पहले भाजपा और आम आदमी पार्टी हर दिन नारे देकर लोगों को भ्रमित कर रहे थे। इन नारों के दौरान केजरीवाल की सरकार भी चलती रही और भ्रष्टाचार भी पनपता रहा। आज जनता नीचे देख रही है, आज सीवर का बहता पानी, गंदा पानी, भरी नालियां, टूटी गलियां और सड़के जैसे मुद्दों पर कांग्रेस चुनाव में एक महीने से जनता के बीच बुनियादी मुद्दों के साथ चुनाव लड़ रही है। आज लोग केजरीवाल के भ्रष्टाचार और गुमराह करने की राजनीति को समझ चुके है और जिस तरीके से केजरीवाल ने शीला पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे वो बेबुनियाद थे। उन्होंने कहा कि 8 वर्षों से केजरीवाल राशन की होम डिलीवरी की बात कर रहे थे। 2 रुपये गेहू और 3 रुपये किलो चावल जो मिलता था, वह बंद हो गया है, यहां तक दुकानदार उपभोक्ताओं से कहते है कि 400 रुपये ले लो राशन मत लो, क्योंकि यह गेहू 24-5 रुपये किलो बेच सके। मैं इसकी जांच की मांग करता हूँ और कांग्रेस की सरकार बनने के बाद इसकी जांच करवाऐंगे। आने वाले समय में लोग अच्छी सरकार लाऐंगे, कांग्रेस की सरकार बनाऐंगे।

संदीप दीक्षित ने केजरीवाल शिक्षा और स्वास्थ्य के बेहतर विश्व स्तरीय मॉडल पर सवाल उठाते हुए कहा कि इसका कोई मापदंड नही है जबकि वास्तविकता यह है इन्होंने कांग्रेस सरकार के अनुपात में औसतन भी काम नही किया। हमने 1000 के लगभग स्कूल छोड़े इन्होंने नए स्कूलों के नाम पर स्कूलों में कमरे जोड़े जो कमरा 7 लाख की बजाय 24 लाख का बनाया। हमने 19 अस्पताल बनाए और 7 अस्पतालों के लिए जमीन अलॉट की और 3 अस्पतालां द्वारका, बुराड़ी और अम्बेडकर नगर में निर्माण शुरु किया था इनसे कोविड तक काम भी पूरा नही कर पाए। अगर ये अस्पताल बन जाते तो 4-5 हजार जिंदगी ही बच जाती। स्वास्थ्य मॉडल की बात करते है, मौहल्ला क्लीनिक कोविड में वैक्सीनेशन लगाने लायक स्थिति में नही पाए गए। उन्होंने कहा कि आज दिल्ली के चुनाव में क्रांति आ गई जब जनता कांग्रेस के लिए कार्यकर्ता बनकर प्रत्याशियों के लिए काम कर रही है। आज मतदाता कांग्रेस की बात कर रहा है जब वोटर किसी दल की बात करता है तो परिवर्तन लगभग संभव है। जनता के अभूतपूर्व मिल रहे समर्थन से मैं कह सकता हूँ कि 5 फरवरी को दिल्ली का मतदाता फिर एक बार कांग्रेस वाली दिल्ली के लिए वोट करेगा।

डा0 उदित राज ने कहा कि दलित समाज की भावनाओं से खिलवाड़ अगर किसी ने किया है तो वो अकेले अरविन्द केजरीवाल है। जो अम्बेडर की फोटो तो लगाते है, अम्बेडर की विचारधारा उनकी प्रतिज्ञा से दूर भागते है, दलितों से वोट तो मांगते है, उनको अधिकार नही देते। भाजपा और केजरीवाल में कोई अंतर नहीं, ग्रंथियों और पुजारियों को 18000 देने की घोषणा करते है, लेकिन बौद्ध, रविदास, बाल्मीकि मंदिरों के पुजारियों और चर्चों के पादरियों को सम्मान राशि देने की बात नही करते और मस्जिदों के इमामों और मुअज्जिनों का वेतन रोक देते है। राहुल गांधी जी द्वारा जातिगणना पर उनका पक्ष पूछने पर भाजपा के साथ खड़े नजर आते है। रोजगार और आरक्षण करके दिल्ली के युवाओं के साथ धोखा दिया है। ठेकेदारी को खत्म करने का वादा करके ठेकेदारी को तेजी से लागू किया। मैं दलितों, अल्पसंख्यकों, पिछड़ों वर्ग से अपील करता हु कि अरविन्द केजरीवाल को वोट देकर अपना वोट खराब न करें, कांग्रेस को वोट दें।

नोएडा में बदलेगा बिल्डिंग बायलॉज, घटेगी नई इमारतों की ऊंचाई; तीनों प्राधिकरण में लागू होंगे नए नियम

नोएडा प्राधिकरण ने बिल्डिंग बायलॉज 2023 को मंजूरी दे दी है। नए नियमों के तहत बिल्डरों को फ्लैट खरीदारों को सभी सुविधाएं विकसित करने के बाद ही कब्जा देना होगा। ग्रुप हाउसिंग में फ्लोर एरिया रेशियो भी घटाया जाएगा जिससे इमारतों की ऊंचाई कम होगी। नए बायलॉज से शहर के विकास में तेजी आएगी और खरीदारों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।

नोएडा। भारतीय मानक ब्यूरों (बीआइसी) की ओर से तैयार बिल्डिंग बायलॉज 2023 का अध्ययन नोएडा प्राधिकरण पूरा कर बिल्डिंग बायलॉज 2010 को संशोधित करने का निर्णय लिया है। अब इसे तीनों प्राधिकरण में लागू किया जाएगा।

इस मुद्दे प्रमुखता से काम करने के लिए मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह के निर्देश पर नोएडा प्राधिकरण सीईओ डॉ. लोकेश एम ने खुद कमान संभाली है, जल्द ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण सीईओ एनजी रवि कुमार और यमुना एक्सप्रेसवे प्राधिकरण सीईओ डा अरुणवीर सिंह के साथ बैठक करने जा रहे है।

12 जुलाई को नोएडा प्राधिकरण की बैठक में मिली थी मंजूरी

बता दें कि नोएडा प्राधिकरण अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना विकास के प्रशासनिक, नियोजन, परियोजना और विधि विभाग अधिकारियों की समिति का गठन कर प्रस्ताव नोएडा प्राधिकरण में तैयार किया गया था, जिस पर 12 जुलाई को नोएडा प्राधिकरण की 214 वीं बोर्ड बैठक में अध्ययन करने की मंजूरी दी गई थी।

नोएडा प्राधिकरण सीईओ डॉ. लोकेश एम ने बताया कि नए बिल्डिंग बायलॉज की जरूरत मौजूदा औद्योगिक व हाउसिंग ट्रेंड में बदलाव को देखते हुए पड़ी है। अब डेटा सेंटर, आइटी-आइटीईएस, ईवी-व्हीकल जैसे उद्योगों के लिए अलग-अलग नीतियां आ चुकी हैं, लेकिन बिल्डिंग बायलॉज वहीं पुराने है। ईवी की इंडस्ट्री उसी तरह से नहीं बनाई जा सकती जैसे नट बोल्ट या अन्य पुरानी इंडस्ट्री बनी हुई है।

खिड़की से लेकर वेंटिलेशन तक के लिए नए नियम

इसके साथ ही भूखंड पर निर्माण के लिए मानचित्र स्वीकृत करने के मानक सेटबैक, ग्राउंड कवरेज, एफएआर, ग्रीन एरिया, ओपन एरिया, लैंडयूज समेत अन्य मानक भी परिभाषित हो गए हैं। भारतीय विकास ब्यूरो में बिल्डिंग बायलॉज में 190 परिभाषाएं दी है। जबकि नोएडा बिल्डिंग बायलॉज 66 परिभाषा दी गई है।

नए बिल्डिंग बायलॉज में खिड़की से लेकर वेंटिलेशन के लिए एग्जास्ट लगाने तक के मानक व परिभाषा तय कर प्राधिकरण को बताए गए हैं। ग्रुप हाउसिंग में फ्लोर एरिया रेशियो भी घटाने की सुझाव दिया गया है। ऐसा होने पर इमारतों की ऊंचाई कम होगी। 200 पेज से ज्यादा की एक किताब नए बायलाज का अध्ययन किया गया है।

बिल्डिंग बायलॉज 2010 में किया जाएगा संशोधन

उन्होंने बताया कि अभी तक नोएडा प्राधिकरण में वर्ष 2010 में प्राधिकरण की तरफ से बनाए गए बिल्डिंग बायलॉज लागू हैं। यह बायलाज फ्लोर एरिया रेशियो (एफएआर) पर आधारित था। इसमें यह देखा जाता था कि भूखंड कितना बड़ा है, कितना निर्माण हो सकता है।

इसके बाद उसी आधार पर मानचित्र प्राधिकरण स्वीकृत करता है। अब भारतीय मानक ब्यूरों (बीआइसी) की ओर से तैयार बिल्डिंग बायलॉज के आधार पर दिया जाएगा। ऐसे में नोएडा बिल्डिंग बायलॉज 2010 में संशोधन कर तीनों प्राधिकरण में लागू किया जाएगा। नोएडा में बिल्डिंग बायलॉज एनबीसी 2005 के आधार पर तैयार की गई है।

एनबीसी 2005 को साल 2016 में संशोधन किया गया। भारत सरकार द्वारा मॉडल बिल्डिंग बायलॉज को भी 2016 में संशोधन किया गया। विगत कई सालों में और ज्यादा संशोधन किए गए। जिसके लिए नोएडा बिल्डिंग बायलॉज 2010 में व्यापक संशोधन की आवश्यकता है।

बिल्डर को बायर्स के लिए सर्विस प्लान अलग से देना होगा

ग्रुप हाउसिंग प्रोजेक्ट में फ्लैट बायर्स की बहुत सी शिकायतें और समस्याएं यह रहती हैं कि बिल्डर ने सभी जरूरी सुविधाएं विकसित किए बगैर ही कब्जा दे दिया। कहीं पार्किंग अधूरी रहती है तो कहीं क्लब हाउस व फायर सेफ्टी के इंतजाम नहीं रहते हैं।

कुछ जगह सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) तक नहीं बना होता है। यह समस्याएं आगे न रहें इसके लिए प्रस्तावित बिल्डिंग बायलॉज में यह व्यवस्था की गई है कि बिल्डर जब मानचित्र के लिए आवेदन करेगा तो सर्विस प्लान अलग से देगा।

ग्रुप हाउसिंग में फ्लोर एरिया रेशियो घटाने का सुझाव

प्रस्ताव पर इसके बाद आने वाले दिनों में नोएडा में बनने वाली बहुमंजिला आवासीय इमारतों की ऊंचाई उतनी नहीं होगी, जितनी कि पहले की बनी हुई है।

ग्रुप हाउसिंग में बगैर सुविधाएं विकसित किए बिल्डर फ्लैट में कब्जा नहीं दे पाएंगे। भूखंड पर जो नए मकान बनेंगे वहां दो मकानों के बीच की दीवार पर छत नहीं डाली जा सकेगी। भूखंड में सेटबैक का हिस्सा तकरीबन चारों तरफ छोड़ना होगा।

गुरुग्राम के हजारों उपभोक्ताओं को लगेगा 'झटका', निगम ने पानी के बकाया बिलों की वसूली को लेकर बढ़ाया कदम

गुरुग्राम के निवासियों के लिए छह महीने के बकाया पानी के बिल एक बड़ा झटका साबित होने जा रहे हैं। निगम द्वारा बिल वितरण में देरी के कारण उपभोक्ताओं को एक साथ भारी-भरकम बिलों का भुगतान करना होगा। इससे लोगों को एक साथ बड़ा आर्थिक बोझ पड़ेगा। आइए जानते हैं कि गुरुग्राम में निगम द्वारा बिल वितरण में देरी के पीछे क्या कारण हैं।

गुरुग्राम। साइबर सिटी गुरुग्राम में लोगों को छह महीने से पानी के बिल नहीं मिले हैं। ऐसे में इतने दिन के बकाया बिल जब उपभोक्ताओं को मिलेंगे तो जेब ढीली होगी। 31 मार्च 2024 को बिल बांटने वाली कंपनी का अनुबंध निगम से खत्म हो गया था और निगम ने नई टेंडर प्रक्रिया शुरू तो कर दी थी, लेकिन यह टेंडर ही सिरे नहीं चढ़ा।

ऐसे में अप्रैल, मई, जून और जुलाई के बिल निगम ने खुद बांटे थे। इसके बाद एक प्राइवेट बैंक ने कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सीएसआर) के तहत एक एजेंसी के माध्यम से पानी-सीवर के बिल उपभोक्ताओं तक पहुंचाने पर सहमति जताई थी, लेकिन बैंक ने इसके बाद बिल बांटने में कोई रुचि नहीं दिखाई।

जुलाई 2024 से लेकर जनवरी 2025 तक छह महीने के बिल लोगों को बांटे जा सके। हालांकि अब नगर निगम ने एक एजेंसी को बिल बांटने का काम सौंपने की तैयारी कर ली है और निगम अधिकारियों का दावा है कि इसी सप्ताह से बिल लोगों के घरों तक पहुंचाए जाएंगे, लेकिन छह महीने का बिल भरने में लोगों पर आर्थिक बोझ पड़ेगा।

जीएमडीए देता है नहरी पानी, घरों तक आपूर्ति निगम की जिम्मेदारी

शहर में घरों तक पेयजल आपूर्ति गुरुग्राम नगर निगम करता है, वहीं शहर के दो वाटर ट्रीटमेंट प्लांटों चंदू बुढेड़ा और बसई से बल्क पेयजल आपूर्ति बूस्टिंग स्टेशनों तक गुरुग्राम मेट्रोपालिटन डेवलपमेंट अथारिटी (जीएमडीए) द्वारा की जाती है। इसकी एवज में जीएमडीए नगर निगम से बिलों की रिकवरी करता है।

1.84 लाख पानी के कनेक्शन

शहर में पानी के कुल 1.84 लाख कनेक्शन हैं, लेकिन सभी कनेक्शनों पर पानी के मीटर नहीं लगने से पानी की बर्बादी होने के साथ ही बिलों की रिकवरी भी नहीं हो रही है। लगभग 30 लाख आबादी को देखते हुए कनेक्शनों की संख्या

काफी कम है। पानी की खपत तो ज्यादा है, लेकिन उसकी एवज में बिलों की रिकवरी नहीं होने से निगम को आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा है।

हर महीने दस करोड़ के बिल, रिकवरी सिर्फ तीन करोड़

जीएमडीए नगर निगम गुरुग्राम को बल्क वाटर सप्लाई के हर महीने दस करोड़ रुपये से ज्यादा के बिल भेजा है, लेकिन नगर निगम इसमें से अपने उपभोक्ताओं से सिर्फ तीन करोड़ रुपये ही वसूल पा रहा है।

बिलों की कुल रिकवरी की बात करें तो निगम हर साल सिर्फ लगभग 35 से 36 करोड़ रुपये ही उपभोक्ताओं से वसूल पा रहा है, लेकिन जीएमडीए ने हर महीने दस करोड़ रुपये के बिल निगम को भेज रहा है। नगर निगम को जीएमडीए के सौ करोड़ रुपये से ज्यादा पानी के बिलों का भुगतान करना है।

महाकुंभ में एक युवती हुई ऑनलाइन ठगी का शिकार, जालसाजों ने ठगे हजारों रुपये

फरीदाबाद। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ मेले का आयोजन किया गया है। देश-विदेश से लाखों लोग संगम में डुबकी लगाने के लिए वहां पहुंच रहे हैं। सरकार का दावा है कि यहां तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए बेहतरीन व्यवस्था की गई है। हर तीर्थयात्री चाहता है कि यात्रा के दौरान ठहरने की अच्छी व्यवस्था हो। वहीं, स्थानीय लोग और प्रशासन लोगों को आवास के लिए उचित सलाह और मार्गदर्शन दे रहे हैं। इस बीच महाकुंभ में आवास को लेकर धोखाधड़ी और ठगी से जुड़ी खबर सामने आई है। फरीदाबाद के एक नागरिक ने बताया कि वह जालसाजों के झांसे में आकर ठगी का शिकार हो गया।

महिला से 61 हजार रुपये ठगे

महाकुंभ में ठहरने के लिए टेंट बुक कराने के नाम पर जालसाजों ने एक महिला से 61 हजार रुपये ठग लिए। पीड़िता की शिकायत पर साइबर थाना एनआईटी की पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है।

ऑनलाइन ठगी के शिकार हुए

एसजीएम नगर में रहने वाली नेहा ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 24 जनवरी को उसके परिवार के लोग महाकुंभ में स्नान करने गए थे। परिवार के लोगों को वहां ठहरने में दिक्कत हो रही थी। पीड़िता ने बताया कि 25 जनवरी को वह इंटरनेट मीडिया पर अपना अकाउंट सर्च कर रही थी। तभी उसे एक वीडियो दिखाई दिया।

अनजान नंबर से व्हाट्सएप कॉल

वीडियो में महाकुंभ में ठहरने के लिए टेंट की व्यवस्था करने की बात कही गई थी। नेहा ने वीडियो के नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक किया। इसके बाद उसके मोबाइल पर अनजान नंबर से व्हाट्सएप कॉल आई। कॉल करने वाले ने कहा कि वह 39 हजार रुपये में किराए पर टेंट देगा। परिजनों की परेशानी देख पीड़िता ने तुरंत हामी भर दी।

यूपीआई के जरिए भेजे पैसे

आरोपी ने बताए गए बैंक खाते में यूपीआई के जरिए 39 हजार रुपये भेज दिए। कुछ देर बाद उसने दोबारा कॉल कर कहा कि जीएसटी लगेगा। इसके बाद नेहा ने जीएसटी के तौर पर 22 हजार रुपये जमा करा दिए। पैसे जमा होने के बाद जालसाज का नंबर बंद जाने लगा। पीड़िता ने साइबर हेल्पलाइन नंबर- 1930 पर शिकायत की।

अमृत स्नान के लिए उमड़ी भीड़

बसंत पंचमी के पावन अवसर पर सोमवार को अमृत स्नान के लिए त्रिवेणी संगम पर आस्था का समंदर उमड़ पड़ा। महाकुंभ के तीसरे अमृत स्नान पर पुण्य की कामना के साथ करोड़ों श्रद्धालु देर रात से ही संगम की रेती पर जुटने लगे। हर-हर गंगे, बम बम भोले और जय श्रीराम के गगनभेदी उद्घोष से पूरा मेला क्षेत्र गूंज उठा।

अंतिम अमृत स्नान करीब तीन बजे शुरू

अखाड़ों का तीसरा और अंतिम अमृत स्नान तड़के करीब तीन बजे शुरू हुआ। इस दौरान नागा साधु करतब दिखाते नजर आए। प्रशासन ने महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा की। बसंत पंचमी के पावन अवसर पर अब तक 81.24 लाख लोग संगम में डुबकी लगा चुके हैं। प्रशासन के मुताबिक अब तक 34.97 करोड़ लोग संगम में स्नान कर चुके हैं।

13 अखाड़ों के हिन्दू संत अपने नाम के आगे गिरि, पुरी आदि उपनाम क्यों रखते हैं ?

हिन्दू संतों के 13 अखाड़े हैं।

शिव संन्यासी संप्रदाय के 7 अखाड़े, बैरागी वैष्णव संप्रदाय के 3 अखाड़े और उदासीन संप्रदाय के 3 अखाड़े हैं।

इन्हीं में नाथ, दशनामी आदि होते हैं। संत अपने नाम के आगे गिरि, पुरी, आचार्य, दास, नाथ आदि उपनाम क्यों लगाते हैं।

1. इस उपनाम से ही यह पता चलता हैं कि वे किस अखाड़े, मठ, मड़ी और किस संत समाज से संबंध रखते हैं।

2. शिव संन्यासी संप्रदाय के अंतर्गत ही दशनामी संप्रदाय जुड़ा हुआ है।ये दशनामी संप्रदाय के नाम :- गिरि, पर्वत, सागर, पुरी, भारती, सारस्वत, वन, अरण्य, तीर्थ और आश्रम।गोस्वामी समाज के लोग इसी दशनामी संप्रदाय से संबंधित हैं। इन 7 अखाड़ों में से जूना अखाड़ा इनका खास अखाड़ा है।

3. दशनामी संप्रदाय में शंकराचार्य, महंत, आचार्य और महामंडलेश्वर आदि पद होते हैं। किसी भी अखाड़े में महामंडलेश्वर का पद सबसे ऊंचा होता है।

4. शंकराचार्य ने चार मठ स्थापित किए थे जो 10 क्षेत्रों में बंटें थे जिनके एक-एक मठाधीश थे।

5. कौन किस कुल से संबंधित है जानिए

1. गिरी,
2. पर्वत और
3. सागर।

इनके ऋषि हैं भृगु।

4. पुरी,
5. भारती और
6. सरस्वती।

इनके ऋषि हैं शांडिल्य।

7. वन और
8. अरण्य

इनके ऋषि हैं कश्यप।

6. नागा क्या है : - चार जगहों पर होने वाले कुंभ में नागा साधु बनने पर उन्हें अलग-अलग नाम दिए जाते हैं।

1. इलाहाबाद के कुंभ में उपाधि पाने वाले को नागा,
2. उज्जैन में उपाधि पाने वाले को खूनी नागा,
3. हरिद्वार में उपाधि पाने वाले को बर्फानी नागा तथा
4. नासिक में उपाधि पाने वाले को खिचडिया नागा कहा जाता है।

इससे यह पता चल पाता है कि उसे किस कुंभ में नागा बनाया गया है। शैव पंथ के 7 अखाड़े ही नागा साधु बनते हैं।

7. नागाओं के अखाड़ा पद : - नागा में दीक्षा लेने के बाद साधुओं को उनकी वरीयता के आधार पर पद भी दिए जाते हैं। कोतवाल, पुजारी, बड़ा कोतवाल, भंडारी, कोठारी, बड़ा कोठारी, महंत और सचिव उनके पद होते हैं। सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण पद महंत का होता है।

8. बैरागी वैष्णव संप्रदाय के अखाड़े में आचार्य, स्वामी, नारायण, दास आदि उपनाम रखते हैं। जैसे रामदास, रामानंद आचार्य, स्वामी नारायण आदि।

9. नाथ संप्रदाय के सभी साधुओं के नाम के आगे नाथ लगता है। जैसे गोरखनाथ, मछिंदरनाथ आदि।

10. उनासीन संप्रदाय के संत निरंकारी होते हैं। इनके अखाड़ों की स्थापना गुरु नानक देवकी के पुत्र श्रीचंद ने की थी। इनके संतों में दास, निरंकारी और सिंह अधिक होते हैं।

नोट : संत नाम विशेषण और प्रत्यय : - परमहंस, महर्षि, ऋषि, स्वामी, आचार्य, महंत, नागा, संन्यासी ,नाथ और आनंद आदि।

बात का बतंगड़ - तिल का ताड़ - राई का पहाड़

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया – वैश्विक स्तरपर हज़ारों वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति सभ्यता तथा बड़े बुजुर्गों की कहावतें और मुहावरों का पीढ़ियों सेआज भी बहुत गुणगान नाम है। आज भी हम भारतवंशियों को जो कि दुनियाँ के किसी भी कोने में बसे हो उसमें भारतीय संस्कृति सभ्यता का अंश किसी न किसी रूप में ज़रूर दिखेगा और किसी न किसी रूप से भारतीय मुहावरों का भी संज्ञान उनके जीवन में बसा हुआ है। चूंकि आज हम बड़े बुजुर्गों की कहावतों मुहावरों पर बात कर रहे हैं और और हम देख रहे हैं की 5 फरवरी 2025 को दिल्ली विधानसभा का चुनाव है जिसका रिजल्ट 8 फरवरी 2025 को आना है कि अनेक पार्टियों नेताओं कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने स्तर पर समय का संज्ञान लेते हुए अनेक बातों को उछालकर बात का बतंगड़ बना दिया था किसी ने तिल का ताड़ तो किसी ने राई का पहाड़ बनाया था लेकिन हम जानते हैं के यह सब चुनावी बातें हैं बातों का क्या ?यह तो चुनावी बतंगड़ था ? अब हम देखेंगे कि हर पार्टी नेता कार्यकर्ता ऐसी बातों का न बतंगड़ करेंगे और न ही ऐसे बयान देंगे और ना ही इनकी चर्चा होगी। अब फिर 2025 के अंत तक व 2026 में कुछ राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, चुनावों में फ़िर हमें वही उपरोक्त मुहावरों वाली बातें सुनाई देगी। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बात का बतंगड़ तिल का ताड़ और राई का पहाड़ (बीटीआर)।

साथियों बात अगर हम उपरोक्त तीनों बीटीआर की करें तो बहुत छोटी-छोटी बातों को बहुत बड़ी बहस आरोप प्रत्यारोप का मुद्दा बना देने से है जैसा कि हमने अभी अभी 5 फरवरी 2025 को होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव के चुनाव में देखाकि नेता कार्यकर्ता चुनाव में एक दूसरे की छोटी बातों को बीटीआर, पति पत्नी में अपनी बात को लेकर बहस, आजकल के युवाओं में क्रोध के कारण बहस आरोपों और प्रत्यारोपों में हम देखते हैं कि बात इतनी बड़ी नहीं रहती जितना भयानक और खतरनाक उसे बनाया जाता है। कभी-कभी इसका परिणाम बहुत बड़े जुर्म और सामाजिक बुराई का रूप धारण कर लेता है, जिसमें हत्या संबंध विच्छेदन दुश्मनी बढ़ाना शारीरिक व मानसिक हानि होने जैसे अनेक घटनाएं हो जाती हैं। इसलिए हम सभी को चाहिए कि उपरोक्त तीनों बीटीआर से बहुत ही दूर रहकर सावधानीपूर्वक अपनी वाणी का प्रयोग कर हानियों से बचकर अपने आपको समाज को और राष्ट्र को समृद्ध बनाने में योगदान देने की कोशिश करें।

साथियों बात अगर हम उपरोक्त बीटीआर की शुरुआत की करें तो यह मूल बात या विषय जब एक कान से दूसरे कानों तक पहुँचती है तो उस क्रम में हर एक बिचौलिया जैसे की व्यक्ति या संस्था अपने - अपने फायदे के अनुसार मूल बात को तोड़ता मड़ोड़ता रहता है,तब बातों का मूल विषय, भाव, या अभिप्राय बदल जाता है बात बतंगड़ बन जाती है। और ज्यादातर इसका हमारे समाज पर कुप्रभाव ही देखने को मिलता है। पर इस बढ़ा चढ़ा कर की गयी बात यानि बतंगड़ को पकड़ता कौन है ? आप हम यानि की जनता I फिर जल्दी-जल्दी ट्वीट डिलीट करने का और ये किसी के व्यक्तिगत विचार हैं पार्टी के नहीं ये सब बातों का दौर चल पड़ता है। हमने इस तरह के बीटीआर को कई बार देखे हैं जिसे रेखांकित करना जरूरी है।

साथियों हमने कई बार सुना ही होगा ये गीत सुनिए कहिये सुनिए बातों - बातों में प्यार तो जब मुदा बात ये है की हम कहेंगे की बताने में क्या रक्खा है, हम भी ना बातें करने लगे। बातों पर बातें तो बहुत होती है पर जब गौर से देखेंगे तो मूल में वही एक लाइनर छोटी सी लाइन को बीटीआर करके वायरल कर दिया जाता है। बातें जो है अब कम ही होती हैं क्यूंकि लोग भी स्मार्टफोन की तरह टची हो गएँ हैं न मालूम किसको किसकी बात बुरी लग जाये। आपने बड़े चाव से कोई शायरी लिखी कोई पिक्चर खिचवाया बस एक ब्लू लाइक हो गया। वैसे बतंगड़ का मजा तब है जब माहौल जम जाये जैसे नवोदित साहित्यकारों प्रेमी प्रेमिकाओं के लिए कॉफी हॉउस , गांव के यार दोस्त और गमछा बिछाकर बैठे किसी चाय की दुकान पर पान भी आ गयी और फिर बतंगड़ शुरू।

साथियों लोग आमने सामने बैठने बोलने बतियाने को तरस गए हैं और कितने बुजुर्ग या नौजवान भी घोर अकेलेपन में कुंठित हो रहे हैं क्यूंकि खुलकर मनकी बात बोलने बतियाने

वाला कोई नहीं रहा। मेरी पिता हमेशा कहा करती है कंगाल से जंजाल अच्छा। तो अकेलापन और उदासी से तो बतंगड़ ही भला। पर अंततः सकारात्मक कुछ निकले या कुछ प्रहशन या व्यंग्य हो पर किसी को ठेस न लगे।वैसे हम बिना विचारे किसी की बातों में मत आना चाइए क्या पता बतंगड़ ही हो।

साथियों बात अगर हम उपरोक्त तीनों बीटीआर को मनोवैज्ञानिक तरीके से देखने के अनुमान की करे तो, कई लोग बात को सीधे कहने की बजाय घुमा फिरा के बीटीआर करके कहते हैं, हमारे अनुसार उनके ऐसा करने के पीछे क्या मनोविज्ञान हो सकता है ? इसके पीछे अगर हम मनोविज्ञान की बात करें तो कई कारण हो सकते हैं ।जैसे लोग हमसे बीटीआर के द्वारा कुछ जानने की इच्छा रखते हैं। पर वह हमसे सीधे पूछने में हिचकते हैं, जिसके कारण व बातों को घुमाते हैं, और फिर उन बातों को जानने का प्रयास करते हैं, जो वह जानना चाहते हैं। और इसके भी दो कारण हो सकते हैं, या तो वह यह नहीं बताना चाहते कि वह क्या जानना चाहते हैं, या फिर वह कुछ हमसे कुच्छ छुपाना चाहते हैं। और सत्य तो यह है कि आज के समय में कोई बात करते समय या हमको बिल्कुल अहसास तक नहीं होने देता कि वह हमसे क्या जानना चाहता है ,और वह बातों ही बातों में बात के बतंगड़ का प्रेशर देकर सब जान लेता है, जो वह जानना चाहता है, क्योंकि वह जानता है कि अगर वह सीधे-सीधे हमसे पूछेगा तो हम नहीं बताएंगे तो वह जानने के लिए बीटीआर करेगा ? सीधे-सीधे जानने के लिए हमसे बातों को घुमा कर पूछेगा, और हम फिर उनकी बातों को सोचेंगे, कि वह हमसे ही बातें कर रहे हैं, और यह हमारे ही फायदे के लिए हैं ।इसलिए हमे उन्हें अपना जवाब सीधे-सीधे ही दे देते हैं। जिसके कारण इसका फायदा उठाते हैं, और हमारी मन की बातों को जान जाते हैं,और हमारे मन की बात जान जाने के कारण ही वह आपकी कमजोरियों को भी जानते हैं,और हमारी कमजोरियां उनके लिए उनकी ताकत बन जाती है, जब वह हमारी कमजोरियों का फायदा उठाते हैं। इसलिए कभी भी किसी से भी बात करते समय यह जरूर ध्यान रखें कि अपनी कमजोरियों को उनको ना बताएं, क्योंकि इसमें सिर्फ आपका ही नुकसान है, और किसी का नहीं। इसीwलिए बात का बतंगड़ प्रेशर में रहकर हम सतर्क रहें।

साथियों बात अगर हम बात के बतंगड़ को समझने की करें तो विचार करें तो बात या बातों को लेकर हिंदी में बहुत सारे मुहावरें और लोकोक्तियाँ हैं। बातें बनाना, बात बिगाडना या बिगडना, बातें ना मानना, बातों-बातों में, बात चली है तो दूर तक जायेगी, लातों के भूत बातों से नहीं मानते आदि। बात का बतंगड़ का अर्थ है- छोटी सी बात को अधिक बढ़ा देना। यह विचारणीय बात है कि बात का बतंगड़ भी सृष्टि में कोई भी जीव नहीं बनाता, केवल मनुष्य ही ऐसा करता है। वह बात-बात में टोका-टोकी कर एक दूसरे में कमी निकालता रहता है। स्वयं को कोई नहीं देख रहा है। हम अपने समाज जीवन में रोजना कितनी ही ऐसी घटनाओं को देखते हैं, जिनका कोई हाथ पैर नहीं होता है। कोई एक आगे बढ़कर माफी मांग ले तो बात वहीं समाप्त हो सकती है। लेकिन हम हैं कि बात को मानने वाले ही नहीं है। गांवों में गली-नाली की सफाई को लेकर बात का बतंगड़ सुबह-सुबह ही दिखाई-सुनाई पड़ जाता है। गलियों में बच्चों का खेलना और शोर मचाने को लेकर पड़ोसियों का बात का बतंगड़ बना देना आदि। महानगरीय जीवन में कई बार तो बीच सड़क पर या फिर रेड़ लाइट पर कोई गाड़ी, गाड़ी से हल्की सी टकराई और बन गया बात का बतंगड़। लंबा जाम और दोनों में से कोई किसी की सुनने वाला ही नहीं। बात का बतंगड़ कई बार पार्क में भी दिखाई दे जाता है। व्यर्थ की बात पर चर्चा हुई और बतंगड़ बन गया। राजनीति में तो बात का बतंगड़ बनना साधारण सी बात हो गई है। कितने ही राजनेता कहते सुनाई दे जाते हैं कि मेरी बात को तोड़-मरोड़ कर दिखाया या बताया जा रहा है। जब तक स्पष्टीकरण आता है, तब तक बात का बतंगड़ बन चुका होता है। हमें अपने समाज जीवन में छोटी-छोटी बातों को वहीं पर, उसी समय माफी मांग कर या उसका समाधान निकाल कर समाप्त कर देना चाहिए। उस बात को लेकर लंबा सोचने या लंबा घसीटने की जरूरत नहीं है। छोटे-छोटे प्रयास और छोटे-छोटे सुधार ही समाज में जागृति पैदा करते हैं। समाज को नया सोचने के लिए आकर्षित करते हैं। हमें देश के बारे में, समाज के बारे में, सृष्टि और जीवन के बारे में सोचना चाहिए। बात का बतंगड़ नहीं बनाना चाहिए, लोगों के जीवन में सुधार लाना चाहिए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विदेशी विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बात का बतंगड़ तिल का ताड़ राई का पहाड़ आजकल अपने फायदे के अनुसार मूल विषय के भाव और अभिप्राय को बदलने का चलन बढ़ गया है। सभाओं में बातों के मूल विषय को अपने फायदे के अनुसार तोड़ मरोड़कर उसका भाव अभिप्राय बदलने से बचने की जरूरत है।

किआ सिरोस के सेकेंड बेस वेरिएंट एचटीके (O) में कैसे हैं विशेषताएँ, कितना दमदार मिलेगा इंजन, कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

वाहन निर्माता Kia की ओर से भारतीय बाजार में हाल में ही नई गाड़ी के तौर पर Kia Syros को लॉन्च किया गया है। इस गाड़ी के सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर HTK (O) को ऑफर किया जा रहा है। इस वेरिएंट में किस तरह के फीचर्स (Kia Syros HTK O Features) और इंजन को दिया गया है। किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Kia की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से एक फरवरी 2025 को Kia Syros को औपचारिक तौर पर लॉन्च किया गया है। इसके बेस वेरिएंट HTK (O) में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन मिलता है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia Syros के सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर मिलता है HTK (O)

किआ की ओर से भारतीय बाजार में नई एसयूवी के तौर पर Kia Syros को 1 फरवरी 2025 को ही लॉन्च किया गया है। कंपनी की इस एसयूवी को कई वेरिएंट्स में लाया गया है, लेकिन इसके सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर HTK (O) को लाया जाता है।

Kia Syros HTK (O) Features

किआ की ओर से सिरोस के सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर ऑफर किए जाने वाले HTK (O) वेरिएंट में भी कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें भी टाइगर फेस फ्रंट के साथ ही आइस क्यूब हेलोजन हेडलैंप, हेलोजन टेल लैंप, हाई माउंट स्टॉप लैंप, 15 इंच स्टील रिम और 16 इंच अलॉय व्हील्स के विकल्प, सिक्ड प्लेट, शॉर्क फिन एंटीना, इंटीग्रेटिड स्पॉयलर, सिल्वर ब्रेक कैलिपर्स, सिंगल पेन सनरूफ, रूफ रेल, ब्लैक और ग्रे इंटीरियर, सेमी लेदरेट सीट्स, डबल डी कट स्टेयरिंग व्हील, पावर स्टेयरिंग, टिल्ट स्टेयरिंग, पावर विंडो, सेंटर कंसोल के साथ आर्मरेस्ट, इलेक्ट्रिक एडजस्ट आउटसाइड मिरर के साथ ऑटो फोल्ड, मैनुअल एसी, रियर एसी वेंट, ऑटो लाइट कंट्रोल, सनग्लास होल्डर, रियर डोर सनशेड कर्टेन, रिमोट की, 4.2 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, चार स्पीकर और दो ट्विटर, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, स्टेयरिंग व्हील माउंटिड कंट्रोल्स, रियर व्यू कैमरा, टाइप सी चार्जिंग पोर्ट्स जैसे फीचर्स मिलते हैं।

Kia Syros HTK (O) Safety Features

एसयूवी में कंपनी की ओर से कई सेफ्टी फीचर्स को भी दिया गया है। इस वेरिएंट में फ्रंट ड्यूल एयरबैग, फ्रंट सीट साइड एयरबैग, साइड कर्टेन एयरबैग, टीपीएमएस, एबीएस, ईबीडी, ईएससी, वीएसएम, एचएसी, ईएसएस, चाइल्ड लॉक, चार फ्रंट पार्किंग सेंसर, चार रियर पार्किंग सेंसर, स्पीड सेंसिंग ऑटो डोर लॉक, थ्री पाइंट सीटबेल्ट रिमांइडर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं।

Kia Syros HTK (O) Engine

किआ की ओर से सिरोस के सेकेंड बेस वेरिएंट HTK (O) में पेट्रोल और डीजल दोनों ही इंजन के विकल्प दिए जाते हैं। इसमें एक लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन के अलावा 1.5 लीटर की क्षमता का सीआरडीआई इंजन दिया जाता है। एसयूवी में पेट्रोल इंजन से 120 पीएस की पावर और 172 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसे 6स्पीड मैनुअल और 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन के साथ लाया गया है। इसके साथ ही इसमें 1.5 लीटर की क्षमता का डीजल इंजन भी दिया गया है, जिससे इसे 116 पीएस की पावर और 250 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा।

Kia Syros HTK (O) Price

Kia Syros के HTK (O) वेरिएंट को कंपनी की ओर से 10 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

Kia Syros HTK (O) Rivals

किआ की ओर से सिरोस को कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर लाया गया है। इसका बाजार में सीधा मुकाबला Maruti Breeza, Hyundai Venue, Kia Sonet, Tata Nexon, Mahindra XUV 3XO, Skoda Kylaq जैसी एसयूवी के साथ होगा।

अल्टीमेट के बाद होंडा सिटी के शीर्ष संस्करण को किया गया ऑफर, जान लें क्या है खासियत

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा सिटी एपेक्स संस्करण जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में सेडान और एसयूवी सेगमेंट में वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से हाल में ही मिड साइज सेडान कार Honda City के Apex Edition को लॉन्च किया गया है। इस एडिशन में किस तरह की खासियतों को दिया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता Honda Cars की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन वाहनों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से Mid Size Sedan Car सेगमेंट में Honda City को लाया जाता है। हाल में ही इसका Apex Edition लॉन्च किया गया है। इस एडिशन में किस तरह की खासियतों को दिया जा रहा है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda City का Apex Edition हुआ ऑफर

होंडा की ओर से हाल में ही मिड साइज सेडान कार City को Apex Edition के साथ लॉन्च किया गया है। कंपनी की ओर से इस एडिशन में कई कॉस्मैटिक बदलाव किए हैं। जिसके बाद इसे खरीदना बेहतर विकल्प साबित हो सकता है।

Apex Edition में मिलेंगी ये खासियत

Honda City Apex Edition में कंपनी की ओर से कुछ बदलाव किए हैं। सेडान कार के सिर्फ दो वेरिएंट में ही इस एडिशन को लाया गया है। जिसमें V और VX शामिल हैं। नए एडिशन वाली सिटी में V और VX वाले फीचर्स के साथ ही बेज इंटीरियर, एपेक्स की बैजिंग के साथ सीट कवर्स, प्रीमियम लेदरेट इंस्ट्रूमेंट पैनल, लेदरेट डोर पैडिंग, सात रंगों वाली रिदमिक एंबिएंट लाइट्स, फेंडर और ट्रंक पर एपेक्स की बैजिंग को दिया गया है। इसके साथ ही इसमें एपेक्स की बैजिंग के साथ कुशन दिए जा रहे हैं।

कितना दमदार इंजन

कंपनी की ओर से इसमें 1.5 लीटर के इंजन को ही दिया जा रहा है। जिससे इसे 121 पीएस की पावर और 145 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। कंपनी के मुताबिक इस इंजन के साथ इसे एक लीटर पेट्रोल में 17.8 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

Honda City Apex Edition Price

होंडा की ओर से सिटी के एपेक्स एडिशन को 13.3 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जा रहा है। इस एडिशन के टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 15.62 लाख रुपये रखी गई है। सामान्य वेरिएंट्स के मुकाबले इस एडिशन वाली यूनिट की कीमत में 25 हजार रुपये का अंतर रखा गया है।

किनसे है मुकाबला

Honda City को बाजार में Mid Size Sedan Car के तौर पर ऑफर किया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी का सीधा मुकाबला Skoda Slavia, Volkswagen Virtus, Hyundai Verna और Maruti Ciaz के साथ होता है।

Honda करती है Elevate में Apex Edition को ऑफर

होंडा की ओर से सबसे पहले एलीवेट एसयूवी को एपेक्स एडिशन के साथ लाया गया था। जिसमें कई कॉस्मैटिक बदलाव किए गए थे। इसके बाद अब कंपनी की ओर से सिटी को भी खास एडिशन के साथ लाया गया है।

हुंडई ने बढ़ा दिए टक्सन एसयूवी के दाम, जान लें किस वेरिएंट को खरीदना कितना हुआ महंगा

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई टक्सन की कीमत में बढ़ोतरी साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली Hyundai Tucson एसयूवी को महंगा कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसकी कीमत में कितने रुपये बढ़ाए गए हैं। किस वेरिएंट को कितना महंगा किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में प्रीमियम एसयूवी के तौर पर हुंडई की ओर से Tucson को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी की कीमतों में बढ़ोतरी कर दी गई है। एसयूवी की कीमत में कितनी बढ़ोतरी (Hyundai Tucson price hike) की गई है। किस वेरिएंट को खरीदने के लिए कितनी कीमत देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगी हुई Hyundai Tucson

Hyundai Tucson को खरीदना फरवरी 2025 से महंगा हो गया है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी की कीमतों में तत्काल प्रभाव से बढ़ोतरी कर दी है। जानकारी के मुताबिक इसकी कीमतों में 10 से 25 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं और इसके सभी वेरिएंट्स की कीमतों में बढ़ोतरी की गई है।

किन वेरिएंट्स की कीमत में हुई सबसे ज्यादा बढ़ोतरी

कंपनी की ओर से प्लेटिनम पेट्रोल ऑटोमैटिक, सिग्नेचर पेट्रोल ऑटोमैटिक और सिग्नेचर पेट्रोल ऑटोमैटिक ड्यूल टोन वेरिएंट्स की कीमतों को सबसे ज्यादा बढ़ाया है। इनके अलावा अन्य सभी वेरिएंट्स की कीमतों में करीब 10 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं।

कितनी हुई कीमत

Hyundai Tucson एसयूवी को दो वेरिएंट्स में ऑफर किया जाता है। जिनमें Platinum और Signature हैं। जिनमें अलग अलग इंजन और ट्रांसमिशन को दिया जाता है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 29.27 लाख रुपये से शुरू होगी। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत अब 36.04 लाख रुपये (Tucson SUV new price) होगी।

कैसे हैं फीचर्स

Hyundai Tucson एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें पैरामैट्रिक फ्रंट ग्रिल के साथ ही कनेक्टिड एलईडी टेल लैंप, एलईडी लाइट्स, 18 इंच अलॉय व्हील्स, शॉर्क फिन एंटीना, रियर फॉग लैंप, एंबिएंट लाइट्स, ड्यूल टोन इंटीरियर, पैनोरमिक सनरूफ, ड्यूल जोन एसी, वेंटिलेटिड और हीटेड सीट्स, स्मार्ट की, पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप, क्रूज कंट्रोल, 10.25 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, एपल कार, ओटीए अपडेट्स, मल्टी लैंग्वेज सपोर्ट, छह एयरबैग, वीएसएम, एचएसी, डीबीसी, टीपीएमएस, रेन सेंसिंग वाइपर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, पार्किंग सेंसर जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितना दमदार इंजन

एसयूवी में दो लीटर की क्षमता का पेट्रोल इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 156 पीएस की पावर और 192 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। जिसके साथ 6स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन मिलता है। इसके अलावा इसमें दो लीटर की क्षमता का ही डीजल इंजन भी मिलता है। जिससे इसे 186 पीएस की पावर और 416 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसके साथ 8स्पीड एटी ट्रांसमिशन को दिया जाता है।

किनसे है मुकाबला

हुंडई की ओर से Tucson को एक प्रीमियम एसयूवी के तौर पर लाया जाता है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला Jeep Compass, Citroen C5 Aircross, Volkswagen Tiguan जैसी एसयूवी के साथ होता है।

हीरो मोटोकॉर्प, सुजुकी, टीवीएस, रॉयल एनफील्ड और ओला ने जनवरी 2025 में कितनी यूनिट्स की बिक्री की

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई प्रमुख दो पहिया निर्माताओं की ओर से बेहतरीन फीचर्स, तकनीक और कीमत पर कई Scooter and Bikes को ऑफर किया जाता है। जनवरी 2025 के दौरान किस दो पहिया वाहन निर्माता ने बिक्री के मामले में कैसा प्रदर्शन (Two Wheeler Sale in January 2025) किया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hero MotoCorp के लिए कैसा रहा जनवरी 2025

जनवरी 2025 में हीरो मोटोकॉर्प की ओर से बिक्री के मामले में बेहतरीन प्रदर्शन किया गया है। कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक साल के पहले महीने में ही हीरो मोटोकॉर्प ने 4.43 लाख यूनिट्स की बिक्री की है। जिनमें से 4.12 लाख यूनिट्स की बिक्री घरेलू बाजार में की गई है 30 हजार से ज्यादा यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया है। जनवरी 2024 के मुकाबले कंपनी ने 141 फीसदी की बढ़त हासिल की है।

Suzuki ने हासिल की बढ़त

जापान की दो पहिया निर्माता Suzuki की ओर से भी भारत में कई सेगमेंट में स्कूटर और बाइक्स की बिक्री की जाती है। बीते महीने के दौरान कंपनी ने 1.08 लाख से ज्यादा यूनिट्स की बिक्री की है। आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर सुजुकी को 14 फीसदी की बढ़त मिली है। जनवरी में कंपनी ने 87834 यूनिट्स की घरेलू बाजार में बिक्री की है। वहीं एक्सपोर्ट में भी 38 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 21087 यूनिट्स की बिक्री की गई है।

TVS को ग्राहकों ने किया पसंद

टीवीएस के लिए भी साल के पहले महीने की शुरुआत बेहतरीन रही है। कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक January 2025 में 17 फीसदी की बढ़त को हासिल किया है। बीते महीने टीवीएस ने 3.97 लाख यूनिट्स की बिक्री की है। टीवीएस को बीते महीने एक्सपोर्ट में भी 46 फीसदी की बढ़त मिली है।

Royal Enfield का कैसा रहा हाल

बाइक सेगमेंट में कई विकल्प ऑफर करने वाली निर्माता Royal Enfield के लिए भी जनवरी 2025 अच्छा रहा। कंपनी ने बीते महीने 91132 यूनिट्स की बिक्री की है। जिनमें से 81 हजार से ज्यादा यूनिट्स की घरेलू बाजार में और 10 हजार से ज्यादा यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया है।

कैसी है बीएमडब्ल्यू की नई इलेक्ट्रिक एसयूवी, चलाने में कैसा है अनुभव, पढ़ें खबर

परिवहन विशेष न्यूज

बीएमडब्ल्यू iX1 LWB फर्स्ट ड्राइव रिव्यू जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता बीएमडब्ल्यू की ओर से भारत में नई Electric SUV के तौर पर iX1 LWB को जनवरी 2025 में ही लॉन्च किया गया है। एसयूवी को किस तरह की खासियतों के साथ लाया गया है। चलाने में किस तरह का अनुभव मिलेगा। क्या इसे खरीदना बेहतर होगा या नहीं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में Luxury Electric SUV सेगमेंट में कई बेहतरीन वाहनों को ऑफर किया जाता है। BMW की ओर से भी January 2025 में नई गाड़ी के तौर पर BMW iX1 LWB को लॉन्च किया गया है। बीएमडब्ल्यू की इस नई इलेक्ट्रिक एसयूवी को हमने चलाकर देखा और सीमित समय में कई तरह से परखने की कोशिश की। जर्मनी की लग्जरी कंपनी की इस नई पेशकश को खरीदना आपके लिए कितना फायदेमंद साबित हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

BMW ने लॉन्च की iX1 LWB

बीएमडब्ल्यू की ओर से भारत में लॉन्ग व्हील बेस वाली नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर जनवरी 2025 में ही BMW iX1 LWB को लाया गया है। लॉन्च के बाद कुछ समय के लिए हमें इस गाड़ी को चलाने का मौका मिला। इस दौरान हमने इसे कई कसौटियों पर परखा। LWB के कारण इसमें सफर करना कितना बेहतर होगा। किन चीजों को बेहतर किया जा सकता है। इन सबको हमने इस दौरान समझने (BMW iX1 LWB First Drive Review) की कोशिश की।

BMW iX1 LWB डिजाइन

बीएमडब्ल्यू की ओर से लाई गई सबसे नई एसयूवी iX1 LWB को भी कंपनी की अन्य कारों की तरह ही लुक दिया गया है। इसमें भी कंपनी की सिग्नेचर फ्रंट ग्रिल के डिजाइन को बरकरार रखा गया है। जिसे मैश पैटर्न दिया गया है। इसके अलावा इसमें M और Electric की बैजिंग को भी दिया गया है। इंटीरियर को देखने पर भी प्रीमियम कार की फीलिंग मिलती है और इंटीरियर में सिल्वर एसेंट से काफी अच्छा लुक मिलता है। रियर में इसे बड़ा डिफ्यूजर दिया गया है जिससे इसके रियर से ज्यादा स्पोर्टी लुक मिलता है।

BMW iX1 LWB फीचर्स

बीएमडब्ल्यू की ओर से iX1 LWB में कई खासियतों को दिया गया है। एलडब्ल्यूबी होने के कारण इसकी रियर सीट और बूट में काफी ज्यादा जगह मिलती है। बात करें इसके डायमेंशन की तो इसे 2800 एमएम के व्हीलबेस के साथ लाया गया है जो अपने सेगमेंट में सबसे ज्यादा है। इसके अलावा एलडब्ल्यूबी के कारण इसके बूट में भी 490 लीटर का स्पेस मिलता है। इसके अलावा इसमें वीगन लेदर का उपयोग कर सीट बनाई गई हैं। गाड़ी में सेफ्टी के तौर पर आठ एयरबैग को दिया गया है इसके अलावा इसमें ब्लाइंड स्पॉट डिटेक्शन, लेन असिस्ट जैसे फीचर को भी दिया गया है। रियर सीट पर सफर करने वालों के लिए इसमें काफी आराम देने की कोशिश की गई है और सफर के दौरान अच्छे ऑडियो सिस्टम को भी दिया गया है। एसयूवी को चलाते हुए इसमें दिए गए ADAS और लेन असिस्ट जैसे फीचर्स आपको ज्यादा बेहतर तरीके से सुरक्षित रखने में मदद करते हैं। अगर आप गलत लेन में चले जाएं तो भी इन फीचर्स से आपको इस बात का अंदाजा हो जाता है। लॉन्ग व्हील बेस होने के बाद भी इसे ट्रैफिक में चलाने में किसी तरह की परेशानी (BMW iX1 driving experience) नहीं होती। इसकी स्क्रीन में इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और इंफोटेनमेंट सिस्टम को दिया गया है, जो कर्व्ड होने के कारण प्रीमियम तो लगती ही है साथ ही ज्यादा प्रैक्टिकल भी लगी। हालांकि इसमें वेंटिलेटिड सीट्स, खुलने वाला पैनोरमिक सनरूफ, 360 डिग्री कैमरा जैसे कुछ फीचर्स की कमी खल सकती है।

BMW iX1 LWB रेंज और परफॉर्मेंस

कंपनी की ओर से इसमें 66.4 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है, जिससे 531 किलोमीटर की MIDC रेंज ऑफर की जा रही है। इसमें लगी मोटर से इसे 204 हॉर्स पावर और 250 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। 0-100 की स्पीड हासिल करने में इसे 8.6 सेकेंड का समय लगता है जो थोड़ा ज्यादा लगता है। सामान्य सड़कों पर तो यह बेहतर प्रदर्शन करती है, लेकिन ज्यादा खराब सड़कों या ऑफ रोडिंग करने पर थोड़ी असहजता महसूस हो सकती है। एसयूवी की रियल ड्राइविंग रेंज और अन्य कसौटियों पर परखने के लिए कुछ समय तक इसको चलाने के बाद आपके साथ लॉन्ग रिव्यू को jagran.com पर शेयर करेंगे।

BMW iX1 LWB समीक्षा

BMW iX1 LWB को कंपनी ने ऐसे लोगों के लिए ऑफर किया है। जिनको लग्जरी और ब्रॉन्ड के अलावा रियर सीट पर ज्यादा जगह की जरुरत होती है। गाड़ी में ज्यादा सामान रखने के लिए बड़ा बूट चाहिए। एसयूवी में भी सेडान जैसा आराम चाहिए। ऐसी इलेक्ट्रिक एसयूवी को खरीदना चाहते हैं जिसको चलाना न सिर्फ सस्ता भी हो साथ ही पर्यावरण को भी नुकसान न पहुंचाए, लेकिन बजट भी 50 लाख रुपये तक है। क्लेम की गई रेंज के मुताबिक शहर में चलाने के साथ ही लंबे ट्रिप पर जाना चाहते हैं तो भी यह आपको निराश नहीं करेगी। वहीं अगर आपको अपनी गाड़ी में वेंटिलेटिड सीट और खुलने वाला पैनोरमिक सनरूफ चाहिए और ट्रैफिक में चलाते हुए 360 डिग्री जैसे कुछ फीचर्स को अपनी गाड़ी में चाहते हैं तो फिर आप अन्य विकल्पों पर विचार कर सकते हैं।

किनसे होगा मुकाबला

BMW iX1 LWB को लॉन्ग व्हील बेस के साथ लाया गया है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला Mercedes Benz EQA, BMW Mini Cooper Contryman, Volvo EX 40 जैसी एसयूवी के साथ होगा।

पुरुष महिला के बीच समानता सामाजिक-आर्थिक विकास का संकेत है

विजय गर्ग

पुरुष महिला के बीच समानता सामाजिक-आर्थिक विकास का संकेत है। इक्विटी की मूल स्थिति यह है कि कुल आबादी में पुरुषों और महिलाओं की संख्या लगभग प्राकृतिक चरण के बराबर है। जन नंबर के वैज्ञानिकों ने इसे लिंग अनुपात कहा; अर्थात, 1000 पुरुषों के पीछे महिलाओं की संख्या। विकास दर और सीमित परिवार को पोस्ट करने के लिए 1970 के दशक के मध्य में नीतियां थीं, जिसके तहत दो बच्चों ने परिवार में सुझाव दिया थाजा चुका था। यह सुझाव आबादी की वृद्धि दर को कम करने के लिए प्रबंधित किया गया था लेकिन यह आबादी में विकार था। सामाजिक परिस्थितियों और सत्ता के कारण अनुष्ठान शक्ति, परिवार में परिवार में चुनाव होने लगा। बेटे को गर्भ में बेटियों को मारना शुरू कर दिया गया था। भालू जन्म के बाद हत्या का रिवाज थे, अब गर्भ में मारने की प्रवृत्ति। भारत में 1981-91 के दौरान लिंग अनुपात बिगड़ रहा था। आधिकारिक और गैर-सरकारी संस्थानों ने मामले में मामले के बाद से इसे बेहतर बनाने के लिए प्रयास किएबिंदु बदल दिया। आखिरकार, पिछले दशक के दौरान, विशेष रूप से उत्तर -पश्चिमी राज्यों में, वे लिंग अनुपात में वापस आना शुरू कर चुके हैं। नवीनतम रिपोर्ट पंजाब और हरियाणा की हैं। 2014 से 2019 तक एक बाल लिंग अनुपात (0-12 महीने) था, लेकिन उसके बाद अचानक कम हो गया था। इस बदलाव के क्या कारण हैं? क्या पहले प्रयासों में कोई बदलाव है या मीडिया पर फोकस के मुख्य मुद्दे पर ध्यान केंद्रित कर रहा है? या भ्रूण और भ्रूण परीक्षण केंद्रों की लिंग सेटिंगया क्लीनिक को कानून का कोई डर नहीं है? या फिर महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा की हिंसक घटनाएं हैं? दशकों के कमाल (2021) कोविड -19 और अन्य कारणों से नहीं हो सकते थे। यह अन्य सार्वजनिक संसाधनों की खोजों या जनसंख्या में मृत्यु परिवर्तन और संबंधित जन्म और मृत्यु दर की मृत्यु दर की खोजों के आधार पर है। नमूने पंजीकरण सर्वेक्षण (एसआरएस) और नागरिक पंजीकरण प्रणाली (सीआरएस) सांख्यिकी बताता हैमुझे पिछले कुछ वर्षों में बाल लिंग अनुपात में गुणवत्ता में बदलाव आया है। पंजाब और हरियाणा की स्थिति हमेशा बाल लिंग अनुपात के पक्ष में चिंता करती रही है। पंजाब 798 में 798 महिलाएं थीं और 2001 के दौरान पंजाब में 819 महिलाएं थीं। इस अनुपात के साथ, पंजाब और हरियाणा भारत के राज्यों के शीर्ष 25 थे, जिसका अर्थ 25 वें और 24 वें में था। 2011 के दौरान किसी ने सुधार किया; 846 लड़कियों और 830 लड़कियों का जन्म पंजाब में हुआ था और भारत के संदर्भ में भारत के संदर्भ में 830 लड़कियों का जन्म 1000 में हुआ था।रेटिंग ऊपर नहीं उठा सकती थी। पुरुष राष्ट्रपति समाज में पुत्र प्राथमिकता को इसका मुख्य कारण माना जाता है। दूसरी ओर, भ्रूण का उदार यौनकरण परीक्षण अनुचित है, यहां तक कि ये परीक्षण क्लीनिक भ्रूण के लिंग के बारे में किसी भी तरह से जानकारी नहीं हैं। यहां गर्भपात कानून (PC-PNDT ACT-1994) या फीचर्ड महिला भ्रूणों का गर्भपात है। 'इस घटना को रोकने के लिए 2015 में बेट्टी सेव बेटशिक्षा 'को देश के नारों से सम्मानित किया गया था, जिसका उद्देश्य महिला फेटिकाइड के अधिकार और लड़कियों की शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करना था। यह हरियाणा के वॉटरपैच्ड जिले से लॉन्च होता है। स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश करने के लिए कार्यक्रम के 78% की विशेषता थी, कार्यक्रम का सबसे बड़ा हिस्सा इसके प्रचार, प्रचार और विज्ञापन के लिए आवंटित किया गया था। पंजाब में बेटियों की बेटियों को जोड़ना। नतीजतन, हरियाणा में बाल लिंग अनुपात में कुछ सुधार हुआ। यह 2015 में 876 में और 2016 में2019 से बढ़ता है, 2019 से बढ़ गया। पंजाब में राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, पंजाब में पैदा हुए बच्चों का अनुपात, 860 (2015 (2015 (2015) से अनुपात 80 (2015 (2015) से दर्ज किया गया था और बाद में जन्म के समय लिंग अनुपात में गिर गया, लेकिन बाद में गिरावट लिंग अनुपात में। नमूना पंजीकरण सर्वेक्षण (SRS) के अनुसार 2023 में 2023 में, 2023 में, जो 2024 में 910 तक कम हो गया है। पिछले साल 2023 में हरियाणा के 22 जिलों और हरियाणा के 11 जिलों में मध्य हरियाणा के उत्तरी जिलों और मध्य हरियाणा के 11 जिलों मेंघट रहा है। रोहतक की स्थिति सबसे खराब (883) थी। रोहटक के 54 गांवों में लड़कियों की संख्या 800 से कम थी। 2024 के आंकड़ों से पता चलता है कि हरियाणा राज्य चिंता कर रहा है कि इस अनुपात में इस अनुपात में गिरावट आई है। फरीदाबाद, रिवाड्र्स, कैरेक्टर चार प्रदेश, रोहटक ब्रैड, रोहटक और रोफ और गुड़गांव 900 से कम है। 190 गांवों में से, 67 एक गंभीर पहने हुए हैं। सिविल सर्जन के रिकॉर्ड के अनुसार, चित्ती में पनीपत में लिंग अनुपात 2024 में 924 से बढ़कर 900 हो गया। नागरिकपंजीकरण प्रणाली (सीआरएस) के अनुसार, 2024 में पंजाब ने 2024 में दर्ज किया गया था। सीमा के साथ जिला क्रमशः पठानकोट और गुरदासपुर के साथ सबसे खराब राज्य जिला है। कपूरथला वर्तमान में 987 के आंकड़े के साथ शीर्ष पर है, लेकिन 2023 में 992 से पांच अंक भी हैं। लिंग अनुपात में सुधार के बाद कई कदम जो मुख्य रूप से आंगनवाड़ी में काम करने वाली गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए आंगनवाड़ी में भाग लेते हैंइसमें बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना शामिल है या बेटियों के दिन का जश्न मनाने के लिए (24 जनवरी, 2012), 2011 डेस्टिनी शेड, 2015, ₹बेटी-बेटी-बेट्टी बी-बेट्टी, प्रेमी,₹ या बेटियों की तरह बेटियों के लिए सम्मान। पिछले पांच-छह वर्षों के क्या कारण हैं बिगड़ रहे हैं? बेटियों के जन्म से मूल अधिकार क्यों वंचित हो रहा है? शहर और शिक्षित परिवार बाल लिंग अनुपात के गांवों से कम है। जाहिर है पिछले कुछ सालमामले के दौरान, हिंसक घटनाओं की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इस हिंसा में, शासक की पार्टियों में कुछ राजनेता, नागरिक और पुलिस अधिकारी और वाक्यांशों के लड़के और चेहरे-ए-परीक्षा परिवार शामिल हैं। महिला हिंसा और बेटियों की संख्या में उलट हो गई है। इसके अलावा, पुरुष प्राइम सोसाइटी में लम्बे ने हमारे रक्त में वही खून बनाया है जो कि बेटों की स्थिति में एक बैकडोर अनुष्ठान या बहू है। साबुरी समर्थक, मृत शरीर का एक प्यारा, लिंगआदि और बेटी के पास झूठी धन, वित्तीय बोझ, पत्थर, पत्थर, पत्थर और बेटी का मुखिया हमेशा कम होता है। यदि बेटी का यौन शोषण होता है, तो परिवार की गरिमा मिट्टी में पाई जाती है। यह सब एकतरफा क्यों? कुछ सोचते हैं, विद्वान और जागरूक लोग बेटों के बीच अलग नहीं हैं, लेकिन वे भी समाज का हिस्सा हैं। बेटी को समाज में शिक्षा के लिए स्कूल कॉलेज जाना है। काम बंद करने के लिए घर से बाहर निकलना है। क्या हमारी आवृत्ति या माहौल लड़कियों के लिए सुरक्षित है? उस समय भीड़ लड़की घर से बाहर निकलने से डरती हैहै। उसकी रक्षा के लिए क्या है? सड़कों की सड़कों पर सड़कों पर भेड़ियों का अधिक डर है कि लड़की जो केवल मानव जाति में लड़की को देखती है। इसलिए, समाज के उचित और संतुलित विकास के लिए, महिला को मन के सिमरन के मन के सरल अधिकार के अनुसार महिला को समझने के लिए एक जगह दी जानी चाहिए। निजी माहौल को सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया जाता है। ईमानदारी से, निर्माता और सख्त लागू कानून महिला भ्रूण हत्या को रोकने के लिएजाना। महिलाओं के खिलाफ हिंसा के दोषियों को कानूनी प्रक्रिया के तहत दंडित किया जाना चाहिए। सदस्यता पैरोल पर नहीं छोड़ती है। इस घटना को राजनीति, भाई-चकितताावाद, जाति-भाई और धर्म से अलग रखा जाना चाहिए, जो हिंसक अन्वेषण, दमनकारी, भावनात्मक, भावनात्मक हत्याएं सीधे लड़कियों के जन्म पर है। इसलिए, सही अर्थों में सरकारी हस्तक्षेप और कानून प्रवर्तन के लिए जागरूकता महत्वपूर्ण है। महिला भ्रूण हत्या सामाजिक कलंक हैजो पंजाब और हरियाणा के माथे पर है। किसी भी झूठी सामाजिक प्रथा को खत्म करने के लिए लोगों में लोगों की एकता की एकता आवश्यक है। जागरूकता की खराब शक्ति के साथ -साथ गरीब सोच को बदलने की आवश्यकता है। साथ ही बच्चों के विवाह के लिए लोगों का सहयोग, सती प्रता आदि, तत्कालीन सरकारों का अधिकार सफल रहा। अब हमें सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के गहन अध्ययन का अध्ययन करना होगा। बेटों और छोटे परिवार के एक तरफ कब्जा, छोटे परिवार की मजबूरी, बेटियों की समस्याओं का उत्पादन, और बेटियों का उत्पादन, बेटियों का उत्पादन, यौन शोषण, हिंसाया सामाजिक-आर्थिक मुद्दे हैं। स्कूल स्तर पर सेक्स संवेदनशील बिंदुओं की जानकारी दी जानी चाहिए। हमने न केवल समानता और पूर्वाग्रह-मुक्त समाज के लिए संख्या को बढ़ावा दिया है

बेसहारा पशुओं की समस्या और उसका समाधान

बेसहारा पशुओं के लिए गोसदन तो काफी बन चुके हैं, अब उनको कार्यक्षम बनाने की जरूरत है। गो अभयारण्य पर ज्यादा जोर देना होगा, जहां पशु स्वयं ही चुग कर अपना गुजारा ज्यादातर समय कर सकेंगे। कमी के कुछ समय चारे की व्यवस्था की जा सकती है। अभयारण्य में कुछ शैड बना दिए जाएं और स्थान-स्थान पर पीने के पानी के तालाब बनाए जाएं। देखभाल आसान हो जाएगी और कम खर्च भी। हां, एक बार अभयारण्य को बेहतर चरागाह के रूप में विकसित करना होगा। गोबर गैस प्लांट पशुओं से आय सृजन का नया व्यवसाय हो सकता है

हिमाचल प्रदेश में बेसहारा पशुओं की समस्या दिनोंदिन विकराल होती जा रही है। वर्तमान में बेसहारा पशुओं की संख्या 36311 बताई जा रही है जिनमें से 20202 गोसदनों में भर्ती हैं। ये विभागीय आंकड़े हैं, हालांकि असल में यह संख्या और भी ज्यादा हो सकती है, क्योंकि आए दिन नए-नए पशु गांवों में बेसहारा घूमते हुए मिल जाते हैं। किसानों को फसल बचाने के लिए रातें खेतों में काटनी पड़ रही हैं। कईयों ने अपने-अपने खेतों में बांस का बाड़ लगाने की कोशिश भी की है, किन्तु कोई लाभ नहीं हो रहा है। पशुओं और बंदरों के संयुक्त हमलों से बहुत से खेत वीरान हो चुके हैं। लोगों ने बीजना ही बंद कर दिए हैं। समस्या आजीविका पर सीधे आघात की है। इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। सरकार अपनी तरफ से प्रयास भी कर रही है, किन्तु समस्या काबू नहीं आ रही है तो जाहिर है कि व्यवस्था पर समाधान के प्रयास छोटे पड़ रहे हैं। प्रदेश में कुल गोवंश की संख्या 18 लाख 28 हजार है। 2003 में यह संख्या 22 लाख के लगभग थी। यानी पशुपालन के प्रति रुझान कम हो रहा है। हालांकि दूध का उत्पादन तो बढ़ा ही है। 2013 में जो उत्पादन 11.39 लाख टन था, वह बढ़ कर 2024 में 16.17 लाख टन हो चुका है। प्रदेश में दूध की मांग 20 लाख टन के आसपास है। प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 650 ग्राम है, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से पर्याप्त है, किन्तु 2 करोड़ के लगभग पर्यटकों का दबाव भी है, इसलिए उत्पादन से निश्चय ही मांग पूरी नहीं हो रही है।

गांव-गांव में आपको अमूल, वेरका आदि के दूध और दूध उत्पाद बिकते दिख जाएंगे। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक करीब 4 लाख टन का टोटा हर साल पड़ रहा है। वास्तव में यह कमी और भी ज्यादा हो सकती है, क्योंकि कितना ही नकली दूध उत्पाद भी हर साल पकड़ा जाता है। इसका निष्कर्ष यह निकलता है कि दूध की खपत की कोई समस्या नहीं है, और दूध उत्पादन को बढ़ाने के लिए पशुपालन को प्रोत्साहित करने की पर्याप्त गुंजाइश है। फिर भी पशु सडक़ पर क्यों हैं, इस बात की खोज होनी चाहिए। इस तरह समस्या के दो रूप सामने आ रहे हैं। एक तो जो पशु सडक़ पर हैं, उनको आसरा कैसे दिया जाए और दूसरा, कि नए पशु बेसहारा न छोड़े जाएं। जो बेसहारा घूम रहे हैं, उनके लिए गोसदन बना कर व्यवस्था की जा रही है किन्तु वह पर्याप्त साबित नहीं हो रही है। कई गोसदन खाली पड़े हैं और कई, अभाव की स्थितियों के साथ जूझ रहे हैं। गो सदनों को जो राशि प्रति पशु दी जा रही है, वह पर्याप्त नहीं है। एक-तीन साल से बड़े पशु को दिन में कम से कम 5 किलो सूखा घास और 20 किलो के आसपास हरा चारा मिलना चाहिए। महीने में कम से कम डेढ़ क्विंटल तूड़ी ही चाहिए जिसकी कीमत 1500 के लगभग होगी। लेकिन मिलते तो केवल 700 रुपए हैं। अब इसके अलावा हरे चारे और कार्यकर्ता का खर्चा अलग से है। इसके चलते कोई भी इस काम में हाथ डालने से डरता है। समाज से भी छोटी मोटी मदद ही मिलती है जिससे कमी पूरी नहीं हो सकती। अतः गोसदनों पर खर्च की व्यवस्था को सुधारा जाना चाहिए। 2022 तक मंदिरों से प्राप्त दान और दारू की बोतल पर लगाए गए कर से लगभग 25 करोड़ रुपए सरकार के पास आए, उसका पूरा निवेश इस कार्य पर होना चाहिए, फिर भी कमी रहे, तो अलग से सोचा जा सकता है। पहाड़ी इलाकों में ट्रैक्टर नहीं चलने के कारण लोग बैल तो पाल ही लिया करते थे। सरकार ने पॉवर टिलर को अनुदान देकर प्रचारित किया और बैलों को पालने की संभावना ही खत्म कर दी। यदि इसके बजाय बैल पालने वालों को सबसिडी दी जाती तो बेसहारा पशु संख्या में 40 फीसदी कमी आ सकती थी। वर्तमान में पशुपालन को इतना लाभदायक बनाने की जरूरत है कि लोग अच्छी आमदनी के लिए इसको अपना लें। गांव में भी अब घर-घर पशु पालन की व्यवस्था चरमरा गई है, क्योंकि युवक नौकरी की तलाश में घरों से दूर जाने को मजबूर हैं और एकल परिवारों का चलन बढ़ गया है। इसलिए छोटी-छोटी डेयरियों को प्रोत्साहित करने की विशेष योजना बननी चाहिए। सस्ता चारा पशुपालन को लाभदायक बनाने की मूलभूत जरूरत है। इसलिए चरागाह विकास को मिशन बना कर काम करने की जरूरत है। मध्यवर्ती और निचले क्षेत्रों में अधिकांश चरागाहें खरपतवारों की भेंट चढ़ चुकी हैं। उन्हें पुनर्जीवित करने की जरूरत है। बंदर और सूअर द्वारा फसलों पर आक्रमण के चलते जो खेत खाली पड़ गए हैं, उनके लिए भी रा उगाने की विशेष योजना चलाने की जरूरत है, ताकि बाहरी राज्यों से महंगा चारा आयात करने की मजबूरी से मुक्ति मिल सके।

इससे पशुओं को बेसहारा छोडऩे की मात्रा में जरूर कमी आएगी। बेसहारा पशुओं के लिए गोसदन तो काफी बन चुके हैं, अब उनको कार्यक्षम बनाने की जरूरत है। गो अभयारण्य पर ज्यादा जोर देना होगा, जहां पशु स्वयं ही चुग कर अपना गुजारा ज्यादातर समय कर सकेंगे। कमी के कुछ समय चारे की व्यवस्था की जा सकती है। अभयारण्य में कुछ शैड बना दिए जाएं और स्थान-स्थान पर पीने के पानी के तालाब बनाए जाएं। देखभाल आसान हो जाएगी और कम खर्च भी। हां, एक बार अभयारण्य को बेहतर चरागाह के रूप में विकसित करना होगा। गोबर गैस प्लांट पशुओं से आय सृजन का एक नया व्यवसाय हो सकता है। गांव में चार-पांच घन मीटर के प्लांट लगा कर उद्यमी, गैस से कमाई कर सकते हैं। सिलिंडर में भर कर गैस को बेचा जा सकता है। इस तरह से कई नवाचारी प्रयोग करने की जरूरत है। बैल को भी वापस लाने के प्रयास किए जाने चाहिए।

सुख के समांतर

आज और कल के बीच उलझते इंसान का जीवन बीत रहा है। कल से अभिप्राय अतीत और भविष्य दोनों से है। दरअसल, इंसान ताउम्र अतीत और भविष्य में ही गोते लगाता रहता है। उसे अपने आज यानी वर्तमान की सुध नहीं रहती। अगर कभी वह वर्तमान के बारे में सोचता भी है तो उस पर या तो अतीत हावी होता है या फिर वह भविष्य को लेकर फिक्रमंद होता है। इससे होता यही है कि अतीत को बदला नहीं जा सकता, भविष्य को अपने अनुकूल हर हाल में करना संभव शायद ही हो पाता है, मगर उसके चक्कर में वर्तमान की सहजता जाती रहती है। इस दौर में कहीं भी देख सकते हैं कि जीवन की मान्यताएं या महत्ता बची नहीं दिखती है। हमने अपने आप को खुद से इतना दूर कर दिया है कि स्वयं को पहचान पाना बहुत मुश्किल हो गया है। प्रकृति ने या फिर हम जिसे परम पिता परमात्मा कहते हैं, उसने हमें इस जगत में सबसे सर्वश्रेष्ठ बनाया है, लेकिन हमने उनका क्या मान रखा है? कहने को हम एक सभ्य समाज में रहते हैं, लेकिन हम अपने आसपास देखें कि सभ्यता या शिष्टता कहां बची दिखती है। कहीं अहं और क्रोध के भाव में डूबा व्यक्ति दूसरों को खारिज कर रहा होता है या फिर उस पर हावी होने की कोशिश करता है, तो कहीं खुद हाशिये पर चला जाता है। अब यह आम हो चुका है कि छोटी-सी बात को इतना तूल दे दिया जाता है, फिर वह चाहे घर-परिवार में हो या कहीं कोई सार्वजनिक जगह। हालत यह है कि बहुत मामूली बातों पर पहले झड़प शुरू हो जाती है, फिर कई बार वह ऐसी हिंसा में तब्दील हो जाती है, जिसमें किसी की जान तक चली जाती है। ऐसी अनेक खबरें आती रहती हैं। जाहिर है कि न हमारे भीतर सहनशक्ति रही, न ही दया और करुणा के भाव। यह सर्वविदित है कि सृष्टि का चक्र चलता रहता है। जो इस दुनिया में आया है, वह आज नहीं तो कल जाएगा भी। इसके बावजूद व्यक्ति के भीतर हावी अहंकार या दंभ की वजह समझना मुश्किल है। एक दूसरे से इतना बैर क्यों है, इसका कारण नहीं समझ में आता। पुराने वक्त में कहा जाता था कि ईश्वर करुणा और प्रेम का अथाह सागर है तो हम उसकी बूंद के बराबर हैं। मगर वर्तमान में हम कहां खड़े हैं? हम सागर की वह बूंद तो नहीं बन पाए, जिससे एक-एक करके सागर बनता है। हम दरिया जरूर बने, वह भी लोभ, लालच, स्वार्थ, घृणा, ईर्ष्या, क्रोध और द्वेष से भरे हुए। सहनशक्ति और मर्यादा जैसे शब्दों को शायद हम अपने जीवन की डायरी से मिटा चुके हैं। फिर हम बड़े अपने छोटों से कैसे उम्मीद करते हैं कि वे तहजीब और मर्यादा में रहें, क्योंकि उन्होंने ये आधुनिक संस्कार हमसे ही पाए हैं। कई बार ऐसा लगने लगा है कि वक्त को हमसे भी जल्दी बीत जाने का तकाजा है। बचपन से कब इंसान जवानी और बुढ़ापे की ओर कदम रख चुका होता है, समझ ही नहीं आता और ढलान जीवन अंतिम पड़ाव पर दस्तक दे रहा होता है।

हमने अपनी बेमतलब की जरूरतों को इतना बढ़ा लिया है। कि सब कुछ पाने की चाहत और बड़ा बनने की होड़ में इस अमूल्य जीवन को जीना छोड़ चुके हैं। हमारे सामने यह कोई प्रश्न नहीं है कि हम कब तक इस कभी न खत्म होने वाली इच्छाओं की अंधी दौड़ का हिस्सा बने रहेंगे। ऐसा नहीं है कि इंसान समझता नहीं है। वह अपने भीतर कई तरह के अभाव से पीड़ित होता है, वंचित होने के अहसास से परेशान होता है, लेकिन एक आभासी दुनिया में खुद को इस हद तक गुम कर चुका होता है कि वास्तविक सुख उससे छूट जाता है और जब तक इसका भान होता है, तब तक वक्त हाथ से निकल चुका होता है। फिर वही कहावत याद आती है कि 'अब पछताय होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत'।

सुख की इच्छा रखना किसी भी लिहाज से गलत नहीं है। मगर सुख के लिए सही दिशा में प्रयास ' करना दूसरी बात है। मुश्किल यह है कि ज्यादातर लोग अपना पूरा जीवन सुख की चाह में बिता देते हैं, लेकिन लाख कोशिश के बावजूद उस सुख की प्राप्ति नहीं होती। आम हकीकत यही है कि इस तरह को लोग अपनी इस अधूरी इच्छा के साथ इस दुनिया से विदा हो जाते हैं। धन, संपत्ति और ऐशो-आराम के तमाम साधन जुटाने के बाद भी मन में वह शांति और सुकून नहीं मिल पाता, जिसकी तलाश उसे रहती है। सब कुछ छूट जाने के बाद इंसान खुद को दिलासा देने के लिए और अपने दुख को कम करने के लिए खुद से पूछता है कि ऐसा क्यों है। ऐसा दरअसल इसलिए है कि जो उसका होता नहीं है, उसे ही वह पूरी उम्र इकट्ठा करने में लगा रहता है। धन से न स्वास्थ्य मिलता है, न ही सांसें, फिर भी इसे ज्यादा से ज्यादा जमा करने की होड़ किसलिए जारी रहती है, यह समझना मुश्किल है। खुद से यह पूछने की जरूरत है कि इस अनमोल जीवन को क्यों निरुद्देश्य जिया जाए। सबको जीवन का कोई न कोई उद्देश्य जरूर मिला है। अपने व्यक्तित्व में हमें इसकी पहचान करनी होगी। अगर नहीं पहचान पाते तो इसका नुकसान हमें उठाना होगा। मगर सवाल है कि हम क्यों नहीं अपने जीवन को एक वाजिब उद्देश्य दें, जिससे समाज और दुनिया ढांचे को बेहतर और मजबूत आधार दिया जा सके।

सिंधु लिपि और अनसुलझी गुत्थियां

विजय गर्ग

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की भावना जो भी हो, लेकिन सिंधु लिपि की भाषा संरचना ज्ञात करने की दृष्टि से अध्ययन-प्रोत्साहन की प्रशंसा करनी होगी। उन्होंने घोषणा की है कि सिंधु लिपि की रचना को पढ़ने और समझने वाले को 87 करोड़ रुपए की राशि पुरस्कार में दी जाएगी। हालांकि इस अनसुलझी गुत्थी को सुलझाने का उनका कोई पुरातत्त्वीय समाधान खोजना न होकर द्रविड़ वैचारिक संस्कृति को उत्तर भारतीय फलक पर प्राचीनता के रूप में स्थापित करना भी हो सकता है। इस रणनीति के मनोनुकूल परिणाम निकलते हैं, तमिल राजनीति में लंबे समय तक बने रहने का मार्ग प्रशस्त करने में सफल हो सकते हैं। वैसे भी तमिलनाडु आजादी के से भाषाई विवाद का केंद्र है। द्रमुक अब चाहता है कि वर्तमान में पाकिस्तान स्थित सिंधु घाटी की लिपि का संबंध तमिल से स्थापित हो जाए, तो यह धारणा स्थापित हो नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन भाषा तथा लिपि तमिल है और उत्तर भारतीय आर्य ही दक्षिण भारत के द्रविड़ हैं।

जाएगी कि संस्कृत नहीं दुनिया का भाषाई संसार जितना अद्वितीय और व्यापक है, लिपियों का संसार भी उतना रहस्यमय है। किसी भी भाषा के लिखने के प्रकार या विधि को लिपि कहते हैं। लिपियों का इतिहास भी मानव सभ्यता के विकास के साथ आगे बढ़ा है। विकसित होती सभ्यता और लिपियों के विविध आरंभिक रूप शैलचित्रों और पुरातत्त्वीय उत्खनन मिलते रहे हैं। आदिम युग से लेकर अब तक विश्व के मानचित्र पर अनेक भाषाएं, बोलियां अस्तित्व में आकर विलोपित होती रही हैं। भारत में उद्भव और विलोपन की यह क्रिया कहीं अधिक रही है। इस तथ्य की सिद्धि इस कहावत से है, 'कोस कोस पर बदले पानी, बदले चार कोस पर वाणी। इसी क्रम में कहा जाता है कि भाषा को लिपिबद्ध करने के सबसे पहले प्रयास के रूप में दुनिया का पहला लिखित और सबसे प्राचीन ग्रंथ 'ऋग्वेद' भारत का है। इसकी भाषा संस्कृत और लिपि देवनागरी है। हालांकि देवनागरी। का आदि स्रोत ब्राह्मी लिपि मानी जाती है। यह भारत की अत्यंत प्राचीन लिपि है। कुछ समय पहले स्टालिन ने जान मार्शल की मूर्ति का भी अनावरण किया। मार्शल ने ही 1921 में सिंधु घाटी की सभ्यता के पहले उत्खनन की अगुआई की थी। मार्शल अवधारणा दी थी कि सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक आर्य सभ्यता या सारस्वत सभ्यता से भी पहले की है। सिंधु लिपि ईसा से 2500 से 3500 वर्ष प्राचीन मानी जाती है। यह। यह लिपि और हड़प्पा सभ्यता को परस्पर एक-दूसरे का पर्याय माना जाता है। इस परिक्षेत्र

विस्तार मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल और तमिलनाडु तक है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान और र ईरान भी इसी में शामिल हैं। हालांकि अब इसका समय 7000 ईसा पूर्व माना जाने लगा है। इस प्राचीन नगरीय सभ्यता के उत्खनन में मिली मुहरों, शिलालेखों और मिट्टी के बर्तनों पर अनेक चित्रात्मक आकृतियां उत्कीर्ण हैं। विचित्र लिखावट के इसी समूह को सिंधु घाटी की लिपि या सिंधु लिपि कहा जाता है। इसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। स्टालिन को यह भ्रम है कि यदि सिंधु-लिपि पढ़ ली जाती है तो संभव है, इसकी प्राचीनता संस्कृत से पूर्व की भाषा के रूप में सिद्ध हो जाए। अब तक ऋग्वेद को छोड़ दें, तो हड़प्पाकालीन कोई धर्म या समाजशास्त्रीय ग्रंथ भी नहीं मिला है, जिससे सिंधु लिपि को किसी भाषा की लिपि मान लिया जाए।

जान मार्शल ने यह भी कहा है कि इस सभ्यता के चिह्न द्रविड़ सभ्यता के चिह्न मालूम होते हैं। इसलिए सिंधु घाटी में बोली जाने वाली भाषा द्रविड़ हो सकती है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से मिले अभिलेखों में अंकित चित्रलिपियों के आधार पर गोंडी भाषा के विशेषज्ञ तिरु मोतीरावण का दावा है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की लिपियों की समानता गोंडी भाषा से है, इसलिए सिंधु घाटी के लोगों की भाषा द्रविड़ पूर्व की भाषा थी। गोंड समुदाय के लोग आज भी पृथ्वी को माता के रूप में पूजते समय 'कृयव' से संबंधित मंत्र का जाप करते हैं। इसलिए इन परंपराओं से लिपि के सूत्र खोजे जा सकते हैं। इतिहासकार बीवी सुब्बारायप्पा का मानना है कि 'सिंधु भाषा नहीं, वरन एक प्रकार की संख्यात्मक लिपि है, जैसा कि सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरों और अभिलेखों पर अंकित कलाकृतियों में उत्कीर्ण संख्याओं, प्रतीकों और संकेतों से स्पष्ट होता है।

'संस्कृति के चार अध्याय' में रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं कि 'द्रविड़ शब्द भारत में प्रजाति वाचक नहीं, स्थान वाचक रहा है। यदि प्रजाति की यूरोपीय परिभाषा की दृष्टि से देखा जाए, तो गुजरात और महाराष्ट्र में प्रधानता आर्य वंश की होनी चाहिए। किंतु प्राचीन भारतवासी यह नहीं मानते थे। द्रविड़ स्थान का विशेषण था और 'पंचद्रविड' में पुराणकार द्रविड़, आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात इन पांचों को गिना करते थे। भाषाओं को लेकर भी आर्यों और द्रविड़ों के बीच कोई मतभेद नहीं था। द्रविड़ ऋषि यज्ञ के। यज्ञ के पुरोहित होते थे। होते थे। उन्होंने शास्त्रों की भी रचनाएं की हैं। इसी प्रकार तमिल के संगम साहित्य की रचना में कई ब्राह्मण ग्रंथकारों का योगदान था। वैसे भी द्रविड़ शब्द संस्कृत का शब्द है। मनु ने द्रविड़ शब्द का उपयोग उन लोगों के लिए किया है, जो द्रविड़ देश में बसते थे। थे। कुमारिल भट्ट ने उसका प्रयोग भाषा की सूचना देने के लिए किया है, 'यथा- आंध्र-द्रविड़ भाषा। हमारे पूर्वजों ने द्रविड़ शब्द का अर्थ प्रजाति नहीं रखा था। हमारे लिए भी यही उचित है कि हम यूरोप से आए हुए प्रजातिवाद का अर्थ अपने शब्दों में न से।' सिंधु लिपि को पढ़ने में अनेक समस्याएं हैं। दुनिया की ज्यादातर लिपियों में अक्षर कम होते हैं। देवनागरी में 52 अक्षर हैं, तो अंग्रेजी में मात्र 26 हैं। जबकि सिंधु लिपि में करीब 400 अक्षर, चिह्न या संकेत हैं। इसके निशान भी विचित्र रूपों में हैं ये देखने में मोहक चित्रों की तरह सजीले तथा रूपवान होने के साथ इनमें परिवर्तित होते उतार-चढ़ाव बहुत हैं। इन छवियों में बैलों के चिह्न बहुतायत में हैं। अब विचारणीय बिंदु है कि जब लोग अपने-अपने स्तर इस लिपि को पढ़ने के प्रयास में लगे थे, तब इन्हें प्रोत्साहित क्यों नहीं किया गया? दरअसल, सिंधु लिपि को पढ़ने के कभी सार्थक प्रयास किए नहीं गए। जबकि सिंधु घाटी से जुड़ी लिपियों के लगभग तीन हजार अभिलेख उपलब्ध हैं।

असल में इस लिपि में संस्कृत के शब्दों के साथ ऋग्वैदिक चिह्न भी अंकित हैं।। संस्कृत शब्दों में श्री, अगस्त्य, मृग, हस्ती, वरुण, क्षमा, कामदेव, कामधेनु, पग, पंच, पितृ, अग्नि, सिंधु, पुरम, ग्रह, यज्ञ, इंद्र और मित्र आदि शामिल हैं। ये अगस्त्य ऋषि ही हैं, जो नारद के कहने पर दक्षिण भारत गए और फिर कभी उत्तर की ओर लौटे ही नहीं। उन्होंने तमिल भाषा का व्याकरण लिखा था। दरअसल, इस लिपि को पढ़ने से इसलिए टाला जाता रहा कि कहीं उसकी प्राचीनता और अधिक प्रमाणित न हो जाए। ऐसा होता है तो ऋग्वेद कालीन वैदिक सभ्यता तथ्यात्मक रूप में अन्य सभ्यताओं से प्राचीन सभ्यता सिद्ध हो जाएगी। आय का हमलावर के रूप में बाहर आने का अंग्रेजों द्वारा गढ़े गए प्रपंच पर तो पानी फिरेगा ही, उत्तर भारतीय आर्य और द्रविड़ युद्ध की धारणा भी ध्वस्त हो जाएगी।

कहानी दोनों चाहिए

विजय गर्ग

बाबूजी, मूंग के पापड़ और बड़ी ले लो।' बाहरी दरवाज़े पर आवाज़ हुई तो लॉन में धूप सेंकते हुए अख़बार पढ़ रहे भटनागर जी ने नज़र उठाकर उसे देखा। एक तेरह चौदह वर्षीय ग़रीब-सा दिखने वाला बालक था। भटनागर जी ने उसके पास पहुंचकर कहा, 'लाओ दो पैकेट पापड़ और एक पैकेट बड़ी दे दो।' यह सुनकर उस बालक ने ख़ुश होते हुए झोले में से निकालकर दे दिया। 'कितने रुपये हुए?" "जी, एक सौ सत्तर रुपये।' भटनागर जी घर में से रुपये लाकर देने लगे तो देखा कि बालक के एक पैर में कुछ असामान्यता थी। वे पूछ लेने से ख़ुद को रोक न सके, 'बेटा, ये तुम्हारे एक पैर में क्या हो गया?' 'जी, साइकल चलाते समय एक कार से एक्सीडेंट हो गया था।' 'ओह! तो फिर तुम इतनी तकलीफ़ सहकर दर-दर भटकने के बजाय कोई दूसरा काम क्यों नहीं करते, बेटा? मेरा मतलब है कोई छोटी-मोटी, बैठकर करने वाली नौकरी वग़ैरह।' 'अपंग हूं ना, इसलिए कोई काम नहीं देता।' थोड़ा रुककर वह फिर बोला, 'बाबूजी, मेरी बस्ती के लोग बोलते हैं कि तू भटकना बंद कर दे और किसी मंदिर के बाहर जाकर बैठ जा, तेरी ख़ूब कमाई होगी।' 'तो तुमने क्या जवाब दिया?' भटनागर जी ने उत्सुकता से पूछा। 'बाबूजी, मैंने उन लोगों से साफ़ कह दिया था कि भीख मांगने से इज़्ज़त नहीं मिलती। और मुझे पैसों के साथ इज़्ज़त भी चाहिए। इसलिए मैं कष्ट सहने से नहीं डरता।

खपत बढ़ाकर आर्थिक सुस्ती दूर करने का इरादा, संतुलन साधने पर रहा जोर

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार ने आम बजट में खपत बढ़ाने के साथ राजकोषीय घाटा कम करने की योजना भी बनाई है। वित्त मंत्री ने टैक्स में कटौती करके आम जनता को बड़ी राहत दी है। इसलिए उसके पास दूसरी योजनाओं का आवंटन बढ़ाने के लिए ज्यादा गुंजाइश नहीं बची। पूंजीगत व्यय आवंटन सिर्फ 10 फीसदी बढ़ रहा है। आइए समझते हैं बजट की पूरी तस्वीर और शेयर मार्केट पर इसका असर।

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के सामने बजट पेश करते वक्त दो चुनौतियां थीं। एक तो आर्थिक सुस्ती को देखते हुए मांग को बढ़ावा देना था और दूसरा वित्त वर्ष 2025-26 के लिए सकल राजकोषीय घाटे को कम करना। वित्त मंत्री ने आम बजट में इन दोनों के बीच संतुलन साधने की कोशिश की है। साथ ही, सरकार ने पूंजीगत खर्च के मुकाबले खपत बढ़ाने पर फोकस किया है।

खपत बढ़ाने के क्या उपाय हुए?

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में 12 लाख रुपये तक की सालाना कमाई को टैक्स फ्री कर दिया है। इसमें 75 हजार का स्टैंडर्ड डिडक्शन भी मिला लें, तो यह छूट 12.75 लाख तक हो जाती है।

नुवामा इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर और रिसर्च कमेटी के हेड अबनीश रॉय (Abneesh Roy) का कहना है कि इसका मतलब है कि अब खासकर मिडिल क्लास टैक्सपेयर्स के हाथ में अधिक रकम बचेगी। इसे वे जरूरत का सामान खरीदेंगे, जिससे इकोनॉमी में डिमांड को बढ़ावा मिलेगा। इससे कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था को फायदा मिलेगा और जीडीपी ग्रोथ तेज होगी।

राजकोषीय घाटे पर क्या हुआ?

वित्त वर्ष 26 के लिए सकल राजकोषीय घाटा (GFD) का लक्ष्य वित्त वर्ष 25 में सकल घरेलू उत्पाद GDP) के 4.8 फीसदी के मुकाबले 4.4 फीसदी है। राजकोषीय गणित और राजस्व अनुमान थोड़े आशावादी हैं। वहीं, सरकार की शुद्ध बाजार उधारी 11.5 ट्रिलियन रुपये आंकी गई है। आर्थिक जानकारों का अनुमान भी यही था। सबसे अहम बात की वित्त मंत्री निर्मला सीतरमण ने अगले पांच में भारत के कर्ज को जीडीपी के मुकाबले 6-7 फीसदी करने का रोडमैप तैयार किया है।

कितनी रकम खर्च करेगी सरकार?

सरकार ने टैक्स में कटौती करके आम जनता को बड़ी राहत दी है। इसलिए उसके पास दूसरी योजनाओं का आवंटन बढ़ाने के लिए ज्यादा गुंजाइश नहीं बची। पूंजीगत व्यय आवंटन सिर्फ 10 फीसदी बढ़ रहा है। सही मायने में कोर कैपेक्स (सड़क, रेलवे और रक्षा) के अगले वित्त वर्ष में सालाना आधार पर सिर्फ 3 फीसदी की दर से बढ़ने का अनुमान है। यह वित्त वर्ष 25 के बराबर ही है। ग्रामीण क्षेत्र की बात करें, तो सिर्फ जल जीवन मिशन पर फोकस बढ़ा है। वहीं, MNREGA (ग्रामीण रोजगार) और PM किसान (किसान) का बजट सालाना आधार पर तकरीबन जस का तस है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का बजट में फोकस नियमों की जटिलता दूर करने पर भी रहा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि MSME के लिए अप्रूवल, डॉक्युमेंटेशन, सर्टिफिकेशन और लाइसेंस को आसान बनाने की जरूरत है। यह रोजगार बढ़ाने का भी काम करेगा। कुल मिलाकर, व्यय में धीमी रफ्तार बनी रहेगी और खपत की तरफ झुकाव रहेगा

शेयर मार्केट पर क्या असर होगा?

नुवामा इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज के अबनीश रॉय (Abneesh Roy) का कहना है कि अगर शेयर मार्केट की नजर से देखें, तो कंजम्पशन सेगमेंट को लाभ होने की संभावना है। यह चीज बजट के दिन नजर आई थी, जब बजट के बाद सरकारी और रक्षा क्षेत्र के शेयर धड़ाम हो गए। लेकिन, फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स शेयरों में जोरदार उछाल दिखा।

अबनीश रॉय का कहना है कि पोर्टफोलियो के बारे में हमारा रक्षात्मक नजरिया बरकरार है। हम उपभोग से जुड़े शेयरों को कैपेक्स के मुकाबले प्राथमिकता देके हैं। प्रमुख ओवरवेट सेक्टर की बात करें, तो ये उपभोक्ता, निजी बैंक, बीमा, केमिकल, फार्मा और टेलीकॉम रहेंगे। इनमें निवेशकों को पैसे बनाने का मौका मिल सकता है। वहीं, औद्योगिक क्षेत्र, धातु और ऊर्जा सेक्टर अंडरवेट रहेंगे। इनमें सुस्ती देखने को मिल सकती है।

Scheme name	INR bn FY23	FY24	FY25 (RE)	FY26(BE)	YoY% FY24	FY25(RE)	FY26 (BE)
Rural oriented schemes	2,385	2,550	2,092	2,560	7	-18	22
MNREGA (Rural employment)	908	892	860	860	-2	-4	0
PM Kisan (Income transfers to farmers)	583	614	635	635	5	3	0
Jal Jeevan mission (National rural drinking)	547	700	227	670	28	-68	195
Pradhan Mantri Gram Sadak Yojna (Rural roads)	188	154	145	190	-18	-6	31
PM Fasal Bima Yojana (Crop insurance)	103	129	159	122	26	23	-23
Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojna (Irrigation)	56	61	66	83	8	9	25
Infrastructure related	4,288	5,456	5,622	5,685	27	3	1
Railways (including off-budget resources)	2,040	2,622	2,650	2,650	29	1	0
Roads (including off-budget resources)	2,060	2,639	2,725	2,722	28	3	-0
Metro projects	188	195	247	312	4	27	27
Social related	394	442	457	546	12	3	19
National Livelihood Mission - Ajeevika	121	139	150	190	15	8	26
Umbrella ICDS (Child development)	199	218	201	220	10	-8	9
Ayushman Bharat - Pradhan Mantri Jan Arogya Yojna (PMJAY)	74	85	106	136	14	25	28

13 लाख रुपये से अधिक है इनकम तो इस तरह बचाएं टैक्स, होगा काफी फायदा

tपरिवहन विशेष न्यूज

बजट 2025 वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2025-26 को लोगों के द्वारा लोगों का लोगों के लिए बजट बताया है। इस बजट में सालाना 12 लाख रुपये तक आय को टैक्स फ्री कर दिया है। हालांकि यह छूट सिर्फ नई टैक्स प्रणाली का इस्तेमाल करने वालों को ही मिलेगी। इस तरह से सरकार ने नई टैक्स प्रणाली को और आकर्षक बना दिया है।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने बजट 2025-26 में सालाना 12 लाख रुपये तक आय को टैक्स फ्री कर दिया है। हालांकि यह छूट सिर्फ नई टैक्स प्रणाली का इस्तेमाल करने वालों को ही मिलेगी। इस तरह से सरकार ने नई टैक्स प्रणाली को और आकर्षक बना दिया है।

पुरानी टैक्स प्रणाली से होगी ज्यादा बचत

हालांकि, अगर आप दोनों टैक्स प्रणाली की तुलना करें तो पुरानी टैक्स प्रणाली 13 लाख रुपये से अधिक कमाने वालों की टैक्स के मद में अधिक बचत करा सकती है। हालांकि इसके लिए टैक्स छूट के लिए उपलब्ध सभी विकल्पों का इस्तेमाल करना होगा।

नई और पुरानी प्रणाली में टैक्स की बचत उदाहरण से समझें टैक्स बचाने का पूरा खेल

आइये एक उदाहरण से समझते हैं कि पुरानी टैक्स प्रणाली में किन लोगों को कम टैक्स देना होगा। मान लेते हैं कि महेन खन्ना की सालाना आय 13 लाख रुपये है।

अगर वह नई टैक्स प्रणाली चुनते हैं तो उनको नए टैक्स स्लैब के हिसाब से 15 प्रतिशत यानी 75,000 रुपये टैक्स देना होगा क्योंकि नई प्रणाली में टैक्स छूट क्लेम करने का कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है।

वहीं अगर महेन खन्ना पुरानी प्रणाली चुनते हैं तो उनको सिर्फ 4,250 रुपये टैक्स देना होगा। इसका हिसाब बहुत सरल है। महेन खन्ना पुरानी प्रणाली में उपलब्ध टैक्स छूट के सभी विकल्पों का इस्तेमाल करते हैं तो 50,000 स्टैंडर्ड डिडक्शन मिला कर 5.75 लाख रुपये उनकी टैक्स योग्य आय में से घट जाएंगे।

महेन खन्ना का एचआरए 3.9 लाख रुपये है। एचआरए पर टैक्स छूट के साथ 3.9 लाख रुपये उनकी टैक्स योग्य आय में से और कम हो गए। अब महेन खन्ना की टैक्स योग्य आय सिर्फ 3.35 लाख रुपये बची।

पुरानी टैक्स प्रणाली में 2.5 लाख रुपये तक की आय पर टैक्स शून्य है। इस तरह से उनकी टैक्स योग्य आय सिर्फ 85 हजार रुपये बची। पुरानी प्रणाली के टैक्स स्लैब में 2.5-5 लाख की आय पर 5 प्रतिशत टैक्स लगता है।

इस तरह से उनको 85,000 रुपये पर 5 प्रतिशत टैक्स यानी सिर्फ 4,250 रुपये देना होगा। इस तरह से महेन खन्ना नई के बजाए पुरानी प्रणाली चुन कर 70,750 रुपये बचा सकते हैं।

'लोगों के द्वारा, लोगों का, लोगों के लिए बजट'

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2025-26 को लोगों के द्वारा, लोगों का, लोगों के लिए बजट के तौर पर परिभाषित किया है। उन्होंने कहा कि मध्य वर्ग को टैक्स कटौती का तोहफा देने के विचार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पूरा समर्थन मिला था लेकिन लोक सेवकों को समझाने में समय लगा। वित्त मंत्री ने एक साक्षात्कार में बताया कि हमने मध्य वर्ग की आवाज सुनी।

आय (लाख में)	डिडक्शन (लाख में)	एचआरए (लाख में)	टैक्स योग्य आय (लाख में)	पुरानी प्रणाली में टैक्स	नई प्रणाली में टैक्स
12.75	5.75	3.82	3.18	3,375	0
13.00	5.75	3.9	3.35	4,250	75,000
15.00	5.75	4.5	4.75	11,250	1,05,000
20.00	5.75	6.0	8.25	77,500	2,00,000
24.00	5.75	7.2	11.05	1,44,000	3,00,000

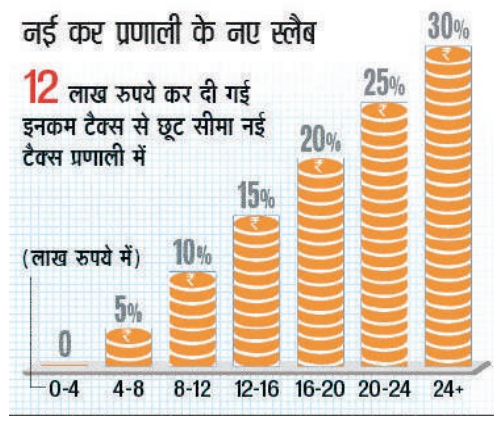

पुरानी प्रणाली में कर स्लैब

स्लैब	प्रतिशत
0-2.5 लाख रुपये तक	शून्य
2.5-5.00 लाख रुपये तक	पांच
5-10 लाख रुपये तक	20
10 लाख रु. से ज्यादा	30

नोट: इस प्रणाली में पांच लाख रुपये तक की आय टैक्स फ्री है। इसमें 50 हजार रुपये का स्टैंडर्ड डिडक्शन है।

इन 10 देशों के पास है सबसे अधिक सोना, जानें कौन-से नंबर पर है भारत

परिवहन विशेष न्यूज

सर्वाधिक स्वर्ण भंडार वाले देश दुनिया भर के देश अपनी आर्थिक स्थिरता के लिए गोल्ड रिजर्व लगातार बढ़ा रहे हैं। इनमें भारत और चीन जैसे देश भी शामिल है। गोल्ड रिजर्व बढ़ाने का मकसद अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करना भी है। आइए जानते हैं कि किस देश के पास कितना बड़ा गोल्ड रिजर्व है और भारत इस लिस्ट में कौन-से नंबर पर है।

नई दिल्ली। सोना (Gold) सदियों से किसी भी देश की अर्थव्यवस्था और वित्तीय स्थिरता का अहम हिस्सा रहा है। यह न सिर्फ मुद्रास्फीति (Inflation) के खिलाफ कारगर हथियार है, बल्कि युद्ध या किसी अन्य आपदा के वक्त भी देश की इकोनॉमी को उबारने में मदद करता है। आइए जानते हैं कि किस देश के पास सबसे अधिक गोल्ड रिजर्व है और इस लिस्ट में भारत कौन-से नंबर पर है।

1. अमेरिका (USA)

अमेरिका के पास दुनिया का सबसे बड़ा स्वर्ण भंडार है। इससे अमेरिका की आर्थिक शक्ति का पता चलता है। डॉलर लंबे समय से ग्लोबल करेंसी के तौर पर चलन में है। फिर भी अमेरिका ने सोने को अपनी अर्थव्यवस्था की रीढ़ बना रखा है। इससे मुश्किल हालात के दौरान इकोनॉमी को स्थिर करने में मदद मिलती है।

स्वर्ण भंडार: 8,133.46 टन
कुल मूल्य: $6.09 बिलियन
कहां रखा है: फोर्ट नॉक्स और अन्य सरकारी तिजोरियों में

2. जर्मनी

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी आर्थिक तौर पर एकदम बदहाल हो गया था। लेकिन, फिर उसने लगातार अपने गोल्ड रिजर्व को संगठित रूप से बढ़ाया। अब जर्मनी दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा स्वर्ण भंडार रखने वाला देश है।

स्वर्ण भंडार: 3,351.53 टन
कुल मूल्य: $2.51 बिलियन
कहां रखा है: बुंडेसबैंक (Bundesbank) की तिजोरियों में और कुछ विदेशों में

3. इटली

इटली हमेशा से यूरोप में व्यापार का केंद्र रहा है। यही वजह है कि उसे काफी पहले गोल्ड की अहमियत का अंदाजा हो गया था। गोल्ड भंडार की वजह से इटली की अर्थव्यवस्था स्थिर रही और विकसित देश बना। उसका गोल्ड रिजर्व मुख्य रूप से यूरोपीय सेंट्रल बैंक के नियंत्रण में रहता है।

स्वर्ण भंडार: 2,451.84 टन
कुल मूल्य: $1.82 बिलियन
कहां रखा है: बैंक ऑफ इटली

4. फ्रांस

फ्रांस भी यूरोप की एक महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है। उसके पास भी 2,436.97 टन का बड़ा गोल्ड भंडार है। फ्रांस लगातार अपने गोल्ड रिजर्व को उच्च स्तर पर बनाए रखने की कोशिश करता है। इससे आर्थिक मंदी या दूसरे संकट के समय भी उसकी अर्थव्यवस्था को स्थिर रखने में मदद मिलती है।

स्वर्ण भंडार: 2,436.97 टन
कुल मूल्य: $1.83 बिलियन
कहां रखा है: बैंक ऑफ फ्रांस

5. रूस

यूक्रेन से युद्ध के बाद रूस ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार में विविधता लाने के लिए बड़े पैमाने पर सोना खरीदा है। पहले उसके विदेशी मुद्रा भंडार में डॉलर और यूरो भी काफी मात्रा में थे। लेकिन, अमेरिका और उसके यूरोपीय साथियों ने उसे जब्त कर लिया। यही वजह है कि अब गोल्ड रूस की आर्थिक नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है।

स्वर्ण भंडार: 2,335.85 टन
कुल मूल्य: $1.83 बिलियन
कहां रखा है: रूसी केंद्रीय बैंक

6. चीन

चीन अमेरिका के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी है। वह पिछली कई तिमाहियों से अपने सोने के भंडार को बढ़ा रहा है, ताकि अपनी मुद्रा को मजबूत कर सके। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में चीन पर 10 फीसदी का टैरिफ लगाया है। यही वजह है कि चीन गोल्ड रिजर्व बढ़ाकर डॉलर पर निर्भरता कम करना चाहता है।

स्वर्ण भंडार: 2,264.32 टन
कुल मूल्य: $1.69 बिलियन
कहां रखा है: पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना

7. जापान

जापान भी दुनिया की विकसित अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है। उसके पास भी सोने का बड़ा भंडार है, जिससे उसे अपनी आर्थिक स्थिरता को बनाए रखने में मदद मिलती है। खासकर, यह देखते हुए कि उस पर विदेशी कर्ज काफी ज्यादा है। बीबीसी की 2023 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जापान पर 9.2 ट्रिलियन डॉलर का कर्ज है, जो उसके जीडीपी से 266 फीसदी ज्यादा है।

स्वर्ण भंडार: 845.97 टन
कुल मूल्य: $633 मिलियन
कहां रखा है: बैंक ऑफ जापान

8. भारत

भारत गोल्ड रिजर्व के मामले में दुनिया में 8वें नंबर पर है। यहां सोना सिर्फ वित्तीय संपत्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक नजरिए से भी काफी अहमियत रखती है। भारतीय महिलाओं के पास गोल्ड का सबसे बड़ा भंडार भी है। यह भंडार देश की आर्थिक सुरक्षा का काफी महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत भी डॉलर पर निर्भरता घटाने के लिए तेजी से सोना खरीद रहा है।

स्वर्ण भंडार: 840.76 टन
कुल मूल्य: $630 मिलियन
कहां रखा है: भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)

9. नीदरलैंड्स

नीदरलैंड्स ने भी आर्थिक स्थिरता के लिए गोल्ड का बड़ा भंडार बना रखा है। उसके पास 612.45 टन का गोल्ड रिजर्व है। जीडीपी के हिसाब से नीदरलैंड्स दुनिया की 18वीं और यूरोप की पांचवी सबसे बड़ी इकोनॉमी है।

स्वर्ण भंडार: 612.45 टन
कुल मूल्य: $458 मिलियन
कहां रखा है: डच सेंट्रल बैंक

10. तुर्किए

तुर्किए ने हाल के वर्षों में अपने स्वर्ण भंडार को तेजी से बढ़ाया है, ताकि वैश्विक अनिश्चितताओं से निपटा जा सके।

स्वर्ण भंडार: 584.93 टन
कुल मूल्य: $438 मिलियन
कहां रखा है: तुर्किए के केंद्रीय बैंक में

क्या सोने में निवेश करना सही रहेगा?

महंगाई से सुरक्षा: सोना मुद्रास्फीति (Inflation) के खिलाफ एक कारगर हथियार है। इसलिए केंद्रीय बैंकों के साथ आम लोग भी बड़े पैमाने पर निवेश करते हैं।

बाजार संकट में सहायक: सोना सुरक्षित निवेश भी माना जाता है। यह पोर्टफोलियो में विविधता भी लाता है। जैसे कि शेयर मार्केट में गिरावट के वक्त यह पोर्टफोलियो को क्रैश होने से बचाता है।

लंबी अवधि का फायदा: सोने का मूल्य आमतौर पर समय के साथ बढ़ता है, जिससे यह लंबी अवधि के निवेश के लिए अच्छा विकल्प बन जाता है।

मध्य वर्ग की जेब में आएंगे 1 लाख करोड़, पैदा होगी 3.3 लाख करोड़ की मांग

बजट 2025 रिपोर्ट इनकम टैक्स में छूट से 8 प्रतिशत विकास दर हासिल करने में मदद मिलने वाली है। नई टैक्स प्रणाली में इंडीविजुल इनकम टैक्स श्रेणी के 78 प्रतिशत रिटर्न फाइल किए गए हैं। वहीं 90 लाख टैक्सपेयर्स ने स्वेच्छा से अतिरिक्त टैक्स का भुगतान किया है। रिपोर्ट के अनुसार बचत बढ़ेगी तो खर्च बढ़ेगा जिससे नौकरियां भी बढ़ेंगी।

नई दिल्ली। बजट 2025-26 में टैक्स छूट की सीमा बढ़ा कर 12 लाख करने और टैक्स की दरों में बदलाव से लोगों की जेब में करीब 1 लाख करोड़ रुपये आएंगे। यह रकम वह अपनी जरूरतों या दूसरे कामों पर खर्च करेंगे, जिससे 3.3 लाख करोड़ रुपये की मांग पैदा होगी। इससे सुस्त हो रही अर्थव्यवस्था का चक्का तेजी से घूमेगा और देश को आठ प्रतिशत की आर्थिक विकास दर हासिल करने में मदद मिलेगी।

ऐसे होगी लाखों की बचत

2047 तक विकसित भारत का सपना पूरा करने के लिए जरूरी है कि कम से कम एक दशक तक अर्थव्यवस्था आठ प्रतिशत की दर से बढ़े। एसबीआइ की रिपोर्ट के अनुसार नए टैक्स स्ट्रक्चर से चार लाख और इससे अधिक आय के स्लैब में आने वाले करीब 5.65 करोड़ टैक्सपेयर्स को फायदा होगा।

जिन लोगों की कमाई सालाना आठ लाख और 12 लाख के बीच है, उनको इस बदलाव से सबसे अधिक लाभ होगा।

एसबीआई का अनुमान है कि टैक्स के मद में बचत होने से खपत काफी ज्यादा बढ़ेगी। लोगों के पास खर्च करने के लिए अतिरिक्त पैसा होगा। लोग घर, कार, टीवी, फ्रिज जैसी चीजें खरीदेंगे। इससे मांग में तेजी आएगी।

अर्थव्यवस्था मजबूत होगी

अब कंपनियां नए उत्पाद बनाएंगी। मांग बढ़ने से कंपनियां अपने प्लांट की क्षमता का विस्तार करेंगी। इससे निजी निवेश को भी बढ़ावा मिलेगा। लोगों को नौकरियां मिलेंगी। नए लोग कमाना शुरू करेंगे। इससे मांग ओर खपत का चक्र और तेज होगा और अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। पिछले कुछ वर्षों के दौरान निजी निवेश के आंकड़े कमजोर रहे हैं। इस बात के लिए कारपोरेट सेक्टर की आलोचना भी की जा रही है कि प्राइवेट सेक्टर निवेश नहीं कर रहा है।

बचत बढ़ेगी तो खर्च बढ़ेगा

वहीं, कारपोरेट सेक्टर का तर्क है कि मांग कमजोर है। ऐसे में निवेश कैसे करें। चार्टर्ड अकाउंटेंट सुशाल सिंह का कहना है टैक्स कटौती का मकसद टैक्सपपेयर्स विशेष रूप से वेतनभोगी वर्ग और छोटे कारोबारियों की जेब में अधिक पैसा पहुंचाना है। जब टैक्सपेयर्स टैक्स के मद में बचत करते हैं तो इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि यह पैसा वह वस्तुओं, सेवाओं और आवास पर खर्च करें।

इस कारण रिटर्न भरने का समय बढ़ा

रिपोर्ट में कहा गया है कि केंद्र सरकार ने अपडेटेड इनकम टैक्स रिटर्न (आइटीआर यू) फाइल करने की समय सीमा 24 माह से बढ़ा कर 48 माह कर दी है। इस बदलाव का मकसद टैक्सपेयर्स को स्वैच्छिक तरीके से आय का ब्यौरा अपडेट करने और अतिरिक्त बकाया टैक्स का भुगतान करने के लिए अधिक समय देना है।

अपने बजट भाषण में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया था कि करीब 90 लाख टैक्सपेयर्स ने स्वेच्छा से अतिरिक्त टैक्स भुगतान करके अपनी आय अपडेट की है। रिपोर्ट के अनुसार इंडीविजुअल इनकम टैक्स श्रेणी में फाइल किए गए 78 प्रतिशत रिटर्न नई टैक्स प्रणाली में हैं। बजट में नई प्रणाली में इनकम टैक्स के मोर्चे पर बड़ी राहत दी गई है।

ट्रेड वॉर की आशंका से डरा बाजार, सेंसेक्स निफ्टी हुए धड़ाम

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने कुछ व्यापारिक साझेदारों पर टैरिफ लगाए जाने की चिंताओं के बीच कमजोर वैश्विक बाजारों के चलते बेंचमार्क शेयर सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी सोमवार को गिरावट के साथ बंद हुए। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 319.22 अंक या 0.41 प्रतिशत की गिरावट के साथ 77,186.74 पर बंद हुआ, जिससे इसकी पांच दिन की तेजी थम गई। इंट्रा-डे में यह 749.87 अंक या 0.96 प्रतिशत गिरकर 76,756.09 पर आ गया। एनएसई निफ्टी 121.10 अंक या 0.52 प्रतिशत की गिरावट के साथ 23,361.05 पर आ गया।

सेंसेक्स शेयरों में लार्सन एंड टुब्रो, टाटा मोटर्स, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एशियन पेंट्स, आईटीसी, पावर ग्रिड, एनटीपीसी और रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे ज्यादा गिरावट में रहे। लाभ कमाने वालों में बजाज फाइनेंस 5 प्रतिशत से अधिक उछला। महिंद्रा एंड महिंद्रा, बजाज फिनसर्व, भारती एयरटेल और मारुति भी बढ़त के साथ बंद हुए।

एशियाई बाजारों में सियोल, टोक्यो और हांगकांग में भारी गिरावट दर्ज की गई। यूरोप के बाजारों में भारी गिरावट के साथ कारोबार हो रहा था। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार गिरावट के साथ बंद हुए।

मेहता इक्विटीज लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (शोध) प्रशांत तापसे ने कहा, ट्रंप द्वारा चीन, मैक्सिको और कनाडा पर टैरिफ की घोषणा के बाद वैश्विक इक्विटी बाजारों में गिरावट ने भारतीय बेंचमार्क पर नकारात्मक प्रभाव डाला। इसके अलावा, रुपये में तेज गिरावट ने चिंता बढ़ा दी है कि विदेशी निवेशक बिकवाली को जारी रखेंगे। कनाडा और मैक्सिको से अधिकांश आयातों पर 25 प्रतिशत टैरिफ और चीन से आने वाले सामानों पर 10 प्रतिशत टैरिफ मंगलवार से प्रभावी होगा।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'व्यापार युद्ध की शुरुआत के बीच वैश्विक बाजार में अस्थिरता आई है, क्योंकि अमेरिका और अन्य देशों के बीच टैरिफ संघर्ष से कोई आर्थिक लाभ मिलने की संभावना नहीं है। इसके बजाय, यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए चुनौतियां पैदा कर सकता है, जिससे वैश्विक वित्तीय जोखिम बढ़ सकता है।'

चिंताजनक है बच्चों के साथ समय न बिताना

बात करना बहुत ज़रूरी है, साथ ही ज़रूरत पड़ने पर दयालु होना भी ज़रूरी है। जितना हो सके अपने बच्चे को अपने काम में शामिल करने की कोशिश करें। उन पर ध्यान दें और उनकी पसंदीदा गतिविधियों में शामिल हों; इससे आप दोनों के बीच नज़दीकियाँ बढ़ेंगी। बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने माता-पिता का ध्यान और स्वीकृति चाहते हैं, इसलिए समझदार माता-पिता इसका इस्तेमाल अपने बच्चों को अलग-अलग तरीकों से सहयोग करने के लिए करते हैं। अनुशासन का मतलब है सिखाना और सीखना। अपने बच्चों को यह समझने में मदद करने के लिए कि उन्हें क्या जानना चाहिए और ज़रूरत पड़ने पर उनके व्यवहार को सुधारने के लिए, आपको उनसे इस तरह बात करनी होगी कि वे आपका सम्मान करें और समझें।

प्रियंका सौरभ

बच्चों के साथ पर्याप्त समय न बिताना और उनकी बातों को अनदेखा करना उन्हें बहुत तनाव में डाल सकता है। उन पर चिल्लाना या बात करने से पहले उन्हें दोष देना उनके तनाव को बढ़ाता है और उन्हें अपने प्रियजनों से नाराज़ भी कर सकता है। उनके अच्छे और बुरे दोनों गुणों को अनदेखा करने से अवसाद की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं। साथ ही, उन्हें दूसरे बच्चों के साथ घूमने न देना या खराब ग्रेड के लिए शिक्षकों द्वारा आलोचना किए जाने से वे एक अंधकारमय जगह में चले जा सकते हैं। दुख की बात है कि कुछ बच्चे इन दबावों के कारण आत्महत्या करने के बारे में भी सोचते हैं। यह बात बच्चों के साथ हमारी चर्चाओं के दौरान सामने आई, जिन्होंने अपने माता-पिता से जुड़ी कई समस्याओं को साझा किया। हमने उनके परिवारों से भी बात की और पाया कि इनमें से कई बच्चे एकल-अभिभावक वाले घरों से आते हैं। बड़े परिवारों से ज़्यादा बच्चे नहीं थे, लेकिन जो थे, उनका संचार बेहतर था, खासकर दादा-दादी के साथ। माता-पिता अक्सर अपने बच्चों से सही व्यवहार की उम्मीद करते हैं, जिससे दबाव और भी बढ़ जाता है।

जबकि बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम को सीमित करना अच्छा है, माता-पिता को अपने फ़ोन के इस्तेमाल को नियंत्रित करने और अपने बच्चों के लिए भी समय निकालने की ज़रूरत है। यह परीक्षा अवधि के दौरान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हमारी चर्चा के दौरान बच्चों ने अपने माता-पिता से जुड़े कई मुद्दों का उल्लेख किया। किसी बच्चे को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करना लंबे समय में उसके भावनात्मक, सामाजिक और सोचने के कौशल को प्रभावित कर सकता है। बच्चों को लग सकता है कि वे ज़्यादा मूल्यवान नहीं हैं या कोई उनसे प्यार नहीं करता, जिससे उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँच सकती है। नज़रअंदाज़ किए जाने से वे बेचैन और दुखी भी हो सकते हैं और कुछ मामलों में, यह गंभीर अवसाद का कारण भी बन सकता है। वे या तो खुद पर या उनकी देखभाल करने वाले लोगों पर गुस्सा हो सकते हैं और यह गुस्सा उनके गुस्से या आक्रामकता के रूप में सामने आ सकता है। बच्चों को अच्छी दोस्ती बनाने में मुश्किल हो सकती है क्योंकि वे संवाद करना या दूसरों के साथ घुलना-मिलना नहीं सीखते हैं।

वे सामाजिक स्थितियों से दूर रहना शुरू कर सकते हैं, जिससे उन्हें और भी अकेलापन महसूस हो सकता है। कभी-कभी, वे सिर्फ़ ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ कर सकते हैं, भले ही वह नकारात्मक ही क्यों न हो। बच्चों को पर्याप्त ध्यान न देना उनके मस्तिष्क के विकास और स्कूल में उनके प्रदर्शन को भी नुकसान पहुँचा सकता है, क्योंकि वे सीखने के लिए प्रेरित या प्रोत्साहित महसूस नहीं कर सकते हैं। जब बच्चों को बातचीत करने का मौका नहीं मिलता है, तो यह उनके भाषा कौशल और समग्र सोचने की क्षमताओं को धीमा कर सकता है क्योंकि वे महत्वपूर्ण सीखने के क्षणों से चूक जाते हैं। वे असुरक्षित लगाव शैलियों के साथ समाप्त हो सकते हैं, जो वयस्कों के रूप में उनके भविष्य के रिश्तों और भावनात्मक कल्याण को प्रभावित कर सकता है। यह सब भावनात्मक उपेक्षा बाद में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना को बढ़ा सकती है। इसलिए, संक्षेप में, एक बच्चे की अनदेखी करने से बहुत सारी नकारात्मक भावनाएं, सामाजिक संघर्ष, व्यवहार संबंधी समस्याएं और सीखने की समस्याएं हो सकती हैं।

देखभाल करने वालों के लिए बच्चों पर ध्यान देना, उन्हें स्वस्थ रूप से बड़ा होने के लिए आवश्यक समर्थन और संचार देना बहुत महत्वपूर्ण है। बात करना बहुत ज़रूरी है, साथ ही ज़रूरत पड़ने पर दयालु होना भी ज़रूरी है! जितना हो सके अपने बच्चे को अपने काम में शामिल करने की कोशिश करें। उन पर ध्यान दें और उनकी पसंदीदा गतिविधियों में शामिल हों; इससे आप दोनों के बीच नज़दीकियाँ बढ़ेंगी। बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने माता-पिता का ध्यान और स्वीकृति चाहते हैं, इसलिए समझदार माता-पिता इसका इस्तेमाल अपने बच्चों को अलग-अलग तरीकों से सहयोग करने के लिए करते हैं। अनुशासन का मतलब है सिखाना और सीखना। अपने बच्चों को यह समझने में मदद करने के लिए कि उन्हें क्या जानना चाहिए और ज़रूरत पड़ने पर उनके व्यवहार को सुधारने के लिए, आपको उनसे इस तरह बात करनी होगी कि वे आपका सम्मान करें और समझें। इस महत्वपूर्ण पेरेंटिंग कौशल पर कुछ बेहतरीन सुझावों के लिए, एडेल फ़ार्बर की किताब ₹हाउ टू टॉक सो किड्स विल लिसन एंड हाउ टू लिसन सो किड्स विल टॉक₹ देखें।

और याद रखें, किसी भी तरह की सज़ा जैसे मारना, शर्मिंदा करना, अलग-थलग करना, चिल्लाना या डांटना बिलकुल भी नहीं है। ये चीज़ें आपके बच्चे को नुकसान पहुँचा सकती हैं और उनकी आत्मा को चोट पहुँचा सकती हैं। अच्छे माता-पिता अपने बच्चों को शब्दों और तर्क की शक्ति के बारे में सिखाते हैं, जिससे उन्हें ज़िम्मेदार, दयालु व्यक्ति बनने में मदद मिलती है जो तर्कसंगत तरीके से व्यवहार करना जानते हैं। परिवार अपने बच्चों को जो सहायता प्रदान करते हैं, चाहे वह सही हो या गलत, कभी-कभी उन्हें सही रास्ते से भटका सकता है। बच्चों में सहनशीलता और आदर्शों के मूल्यों को स्थापित करना आवश्यक है। घर और स्कूल दोनों में उनके साथ खुले संवाद को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, समय-समय पर बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का आकलन करना महत्वपूर्ण है। बच्चों को सही रास्ते पर ले जाने वाला वातावरण बनाना महत्वपूर्ण है, और यह जिम्मेदारी माता-पिता और शिक्षकों से आगे बढ़कर समाज और सरकार को भी शामिल करती है।

झारसुगुड़ा-रायपुर उड़ान सेवा शुरू

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : स्टार एयर ने रविवार को झारसुगुड़ा हवाई अड्डे से तीसरे रूट के रूप में रायपुर के लिए उड़ान सेवा शुरू की है। एयरपोर्ट निदेशक संदीप तिवारी ने इसका औपचारिक शुभारंभ किया। इस अवसर पर स्टार एयर के स्टेशन प्रबंधक और हवाईअड्डा कर्मचारी उपस्थित थे। दीप प्रज्वलित करने और केक काटने के बाद पहले यात्री को बोर्डिंग पास दिया गया।ज्ञातव्य है कि पहले दिन 49 लोगों ने रायपुर की यात्रा की।

यह विमान सेवा झारसुगुड़ा-रायपुर-झारसुगुड़ा मार्ग पर सप्ताह में तीन दिन, सोमवार, बुधवार और रविवार को संचालित होगी। विमान हैदराबाद से शाम 6:05 बजे आएगा और झारसुगुड़ा में उतरकर शाम 6:35 बजे रायपुर के लिए रवाना होगा। बताया गया है कि यह विमान शाम 7:25 बजे रायपुर पहुंचेगा, वहां से 7:55 बजे उड़ान भरेगा और रात 8:45 बजे झारसुगुड़ा पहुंचेगा। स्टार एयर ने कल झारसुगुड़ा से लखनऊ के लिए अपनी सेवा शुरू की। इससे पहले कंपनी ने झारसुगुड़ा-हैदराबाद मार्ग पर उड़ान सेवाएं शुरू की थीं।

शोक सभाओं का दुर्भाग्यपूर्ण आयोजन

शोक सभाएं आजकल दुःख बांटने और मृतक के परिवार को सांत्वना देने के अपने मूल उद्देश्य से भटक गईं हैं। आजकल शोक सभाओं के आयोजन के लिए विशाल मंडप लगाए जा रहे हैं, सफेद पर्दे और कालीन बिछाई जाती है या किसी बड़े बैंक्वेट हाल में भव्य सभा का आयोजन किया जाता है जिससे यह लगता है कि कोई उत्सव हो रहा है। इसमें शोक की भावना कम, और प्रदर्शन की प्रवृत्ति ज्यादा दिखाई देती है। मृतक का बड़ा फोटो सजाकर भव्यता के माहौल में स्टेज पर रखा जाता है। यहां तक कि मृतक के परिवार के सदस्य भी अच्छी तरह सज-संवरकर आते हैं। उनका आचरण और पहनावा किसी दुःख का संकेत ही नहीं देता।

समाज में अपनी प्रतिष्ठा दिखाने की होड़ में अब शोक सभा भी शामिल हो गई है। सभा में कितने लोग आए, कितनी कारें आईं, कितने नेता पहुंचे, कितने अफ़सर आए - इसकी चर्चा भी खूब होती है। ये सब परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार बन गए हैं। उच्च वर्ग को तो छोड़िए, छोटे और मध्यमवर्गीय परिवार भी इस अवांछित दिखावे की चपेट में आ गए हैं। शोक सभा का आयोजन अब आर्थिक बोझ बनता जा रहा है। कई परिवार इस बोझ को उठाने में कठिनाई महसूस करते हैं पर देखा-देखी की होड़ में वे न चाहकर भी इसे करने के लिए मजबूर होते हैं।

इस आयोजन में खाना, चाय, कॉफी, मिनरल वाटर, जैसी चीजों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। यह पूरी सभा अब शोक सभा की बजाय एक भव्य आयोजन का रूप ले रही है।

शोकसभा में जाते हैं तब लगता ही नहीं कि हम लोग शोकसभा में आए हैं, रीति रिवाज उठाने की बजाय नए नए रिवाज बनने लगे हैं।

सब से विनम्र प्रार्थना- शोक सभाओं को अत्यंत सादगीपूर्ण ही होनी चाहिए।

बिल्ववृक्ष

1. बिल्व वृक्ष के आसपास सांप नहीं आते।
2. अगर किसी की शव यात्रा बिल्व वृक्ष की छाया से होकर गुजरे तो उसका मोक्ष हो जाता है।
3. वायुमंडल में व्याप्त अशुध्दियों को सोखने की क्षमता सबसे ज्यादा बिल्व वृक्ष में होती है।
4. चार, पांच, छः या सात पत्तो वाले बिल्व पत्र पाने वाला परम भाग्यशाली और शिव को अर्पण करने से अनंत गुना फल मिलता है।
5. बेल वृक्ष को काटने से वंश का नाश होता है एवं बेल वृक्ष लगाने से वंश की वृद्धि होती है।
6. सुबह शाम बेल वृक्ष के दर्शन मात्र से पापो का नाश होता है।
7. बेल वृक्ष को सींचने से पित्र तृप्त होते है।
8. बेल वृक्ष और सफ़ेद आक को जोड़े से लगाने पर अटूट लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
9. बेल पत्र और ताम्र धातु के एक विशेष प्रयोग से ऋषि मुनि स्वर्ण धातु का उत्पादन करते थे।
10. जीवन में सिर्फ एक बार और वो भी यदि भूल से भी शिव लिंग पर बेल पत्र चढ़ा दिया हो तो भी जीव सभी पापों से मुक्त हो जाते है।
11. बेल वृक्ष का रोपण, पोषण और संवर्धन करने से महादेव से साक्षात्कार करने का अवश्य लाभ मिलता है।

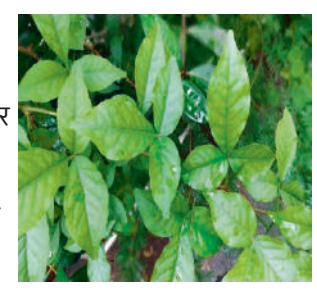

बिल्व पत्र का पेड़ जरूर लगाये और कभी भी बिल्व पत्र के लिए पेड़ को क्षति न पहुचाएं।

समाज के वंचित वर्ग को भी मिले पीने को दूध

डॉ. सत्यवान सौरभ

श्वेत क्रांति से प्रेरित भारत का डेयरी क्षेत्र दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बन गया है, फिर भी दूध की पहुँच बहुत असमान है। आय के अंतर, क्षेत्रीय विविधताओं और सामर्थ्य सीमाओं जैसे कारकों के कारण वंचित समूहों के बीच दूध की खपत सीमित है। कुपोषण और अतिपोषण के बारे में बढ़ती चिंताओं के साथ, इस अंतर को पाटने और समाज के सभी वर्गों के लिए समान पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट नीतियों की आवश्यकता है। जब हम सामाजिक-आर्थिक और क्षेत्रीय समूहों के बीच दूध के सेवन में अंतर देखते हैं तो पाते है कि उच्चतम आय वाले परिवार प्रति व्यक्ति तीन से चार गुना अधिक दूध खाते हैं, जो निम्न आय वालों की तुलना में काफ़ी आर्थिक असमानताओं को दर्शाता है। सबसे कम आय वाले 30% परिवार भारत के दूध का केवल 18% उपभोग करते हैं, जो उच्च समग्र उत्पादन के बावजूद निम्न-आय वाले समूहों में सामर्थ्य सम्बंधी मुद्दों को रेखांकित करता है। शहरी परिवार 30 प्रतिशत का उपभोग करते हैं।

राजस्थान, पंजाब और हरियाणा जैसे पश्चिमी और उत्तरी राज्यों में प्रति व्यक्ति खपत अधिक है (333 ग्राम-421 ग्राम प्रतिदिन), जबकि छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे पूर्वी राज्य प्रतिदिन केवल 75 ग्राम-171 ग्राम खाते हैं। हरियाणा की डेयरी-अनुकूल संस्कृति और सहकारी नेटवर्क घरों में उच्च दूध की खपत को बढ़ावा देते हैं। आदिवासी (एसटी) परिवार सामान्य रूप से अन्य परिवारों की तुलना में प्रति व्यक्ति चार लीटर कम दूध का उपभोग करते हैं, जो लंबे समय से चली आ रही सामाजिक असमानताओं को उजागर करता है। दूध के पोषण सम्बंधी लाभों के बावजूद, डेयरी बाजारों तक सीमित पहुँच और आर्थिक बाधाएँ एसटी समुदायों को कम खर्चीले, गैर-डेयरी विकल्पों पर निर्भर रहने के लिए प्रेरित करती हैं। धनी महानगरीय लोग अनुशंसित मात्रा से दोगुने से अधिक उपभोग करते हैं, मुख्य रूप से उच्च वसा, उच्च चीनी वाले डेयरी उत्पादों से, कम आय वाले परिवारों के लिए दूध महंगा है, जो 300 ग्राम की अनुशंसित दैनिक खपत को पूरा करने के लिए उनके मासिक ख़र्च का 10%-30% हिस्सा है।

प्रतिदिन ₹300 कमाने वाला एक दिहाड़ी मज़दूर सिर्फ़ दूध के लिए ₹30-₹90 का बजट बनाने के लिए संघर्ष कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप आहार प्रभावित होता है। ग्रामीण उत्पादकों के पास पर्याप्त भंडारण और वितरण नेटवर्क की कमी है, जिसके परिणामस्वरूप कम आय वाले और अलग-थलग परिवारों तक पहुँचने में अक्षमता होती है। लैक्टोज संवेदनशीलता और आहार सम्बंधी प्राथमिकताएँ दूध के सेवन को प्रभावित करती हैं, विशेष रूप से पूर्वी और आदिवासी क्षेत्रों में, जहाँ वैकल्पिक प्रोटीन स्रोतों को प्राथमिकता दी जाती है। झारखंड में आदिवासी जनजातियाँ सांस्कृतिक खाद्य प्राथमिकताओं कारण दालों और बाजरा पर निर्भर हैं। वित्तीय प्रतिबंधों के कारण, कुछ राज्यों ने कल्याणकारी कार्यक्रमों से दूध के प्रावधान को समाप्त कर दिया, जिससे कमज़ोर समुदायों तक पहुँच सीमित हो गई। छत्तीसगढ़ ने दूध की आपूर्ति बंद कर दी। समान दूध की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए नीतिगत उपाय सबसे पहले आते हैं।

पोषण कार्यक्रमों में सुधार जैसे प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण और एकीकृत बाल विकास सेवा जैसी योजनाओं के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाएँ, जो स्कूल के भोजन और घर ले जाने वाले राशन में दूध की आपूर्ति करती हैं। कर्नाटक और गुजरात जैसे राज्य वर्तमान में स्कूल पोषण कार्यक्रमों के माध्यम से दूध प्रदान करते हैं, लेकिन कवरेज का विस्तार करने से बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। वितरण लागत को कम करने और सामर्थ्य बढ़ाने के लिए मज़बूत डेयरी नेटवर्क वाले क्षेत्रों में ज़रूरतमंद परिवारों के लिए दूध वाउचर पेश करें। गुजरात में डेयरी सहकारी समितियाँ स्थानीय दुकानों पर भुनाए जाने वाले दूध कूपन प्रदान करने के लिए सामाजिक पहलों के साथ काम कर सकती हैं। सब्सिडी वाले दूध वितरण के लिए धन बनाने के लिए सामाजिक बांड, सीएसआर फंडिंग और अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थों पर कर लगाने की जाँच करें। दूध वितरण को निधि देने के लिए आइसक्रीम जैसे उच्च चीनी वाले डेयरी उत्पादों पर एक छोटा कर लगाया जा सकता है।

महिलाओं और परिवारों को दूध के महत्त्व के बारे में शिक्षित करने के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों, स्वयं सहायता समूहों और मीडिया भागीदारी का उपयोग करें। महाराष्ट्र के पोषण माह 2024 अभियान ने संतुलित आहार के बारे में सफलतापूर्वक जागरूकता बढ़ाई, जिससे ग्रामीण समुदायों में आहार विविधता में सुधार हुआ। अत्यधिक डेयरी सेवन को रोकने के लिए, यूके के चेंज4लाइफ शुगर स्वैप अभियान के समान, स्वास्थ्य संदेश के माध्यम से संयम को प्रोत्साहित करें। डॉक्टर और पोषण विशेषज्ञ स्वस्थ डेयरी उपभोग पैटर्न की वकालत कर सकते हैं, जिससे मोटापे और गैर-संचारी रोगों का बोझ कम हो सकता है। दूध की खपत की असमानताओं को पाटने के लिए लक्षित सब्सिडी, मज़बूत सार्वजनिक वितरण प्रणाली और छोटे पैमाने पर डेयरी फार्मिंग के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है। कोल्ड स्टोरेज के बुनियादी ढांचे को मज़बूत करना और फोर्टिफाइड डेयरी उत्पादों को बढ़ावा देना पहुँच को बढ़ा सकता है।

एक बहु-हितधारक दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी और जागरूकता अभियानों को एकीकृत करना, पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करेगा, एक स्वस्थ और अधिक न्यायसंगत भारत को आगे बढ़ाएगा।

हैदराबाद गौभक्तों द्वारा तीर्थराज प्रयाग कुंभ मेले में भव्य गौमाता का जागरण

जगदीश सीरवी

हैदराबाद। श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट के चेयरमैन एवं सर्वदलीय गौरक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर जयपाल सिंह नयाल सनातनी ने बताया कि पवित्र माघ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि दिनांक 6 फरवरी गुरुवार को शाम 7.15 मिनट से सनातन धर्म के वरिष्ठ संत पूज्य_अभिषेक_ब्रह्मचारी_जी_महाराज और प्रयाग में पधारे अनेक साधु - संतों, महात्माओं के पावन सान्निध्य में एक शाम गौ माता के नाम भजन संध्या का भव्य और दिव्य आयोजन होगा।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में देश के युवा नेता और राष्ट्रीय प्रवक्ता युवा चेतना के राष्ट्रीय संयोजक रोहित कुमार सिंह जी होंगे।भजन कार्यक्रम हेतु मुख्य भजन गायक मुंबई फिल्म इंडस्ट्री के जाने- माने गीतकार, संगीतकार और गायक विष्णुधर मिश्रा पद्मश्री रविन्द्र जैन जी के शिष्य एवं उनकी टीम को आमंत्रित किया गया है। सर्वदलीय गौरक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयपाल नयाल ने बताया कि वे हर साल माघ मास में देश के साधु संतों शंकराचार्यों के पावन सान्निध्य में तीर्थ राज प्रयाग के प्रशासन पंडाल में गौ रक्षा सम्मेलन करते है इस बार कुंभ में प्रशाशन पंडाल उपलब्ध नहीं होने के कारण भजन संध्या का कार्यक्रम नेता जी सेवा संस्थान सेक्टर 19 शंकराचार्य मार्ग, कुंभ मेला क्षेत्र प्रयाग में रखा गया है।

सभी गौ प्रेमियों और सनातनी भाई- बहनों से अनुरोध है कुंभ में 33 करोड़ देवी देवताओं की पूज्य और 68 करोड़ तीर्थों को पावन करने वाली गौ माता के भजनों में भाग लेकर महान पुण्य के भागी बनें।

अभिनेत्री सारा अली खान ने ज्योतिर्लिंग बैधनाथ में की पूजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। मंनसुर अली खान पटौदी - शर्मिला टैगोर की नतनी, शेफ अली खान तथा अमृता सिंह की बेटी बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली खान ने बाबा बैद्यनाथ के दर्शन के लिए झारखंड के देवघर में पहुंची . कड़ी सुरक्षा घेरे के बीच उन्हें मंदिर के मंझलाखंड में ले जाया गया, जहाँ उनके साथ देवघर के उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी विशाल सागर उपस्थित थे. ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन के बाद सारा का यह दुशरा ज्योतिर्लिंग दौरा है।मंदिर प्रबंधक रमेश परिहस्त ने वैदिक विधि-विधान से सारा अली खान को संकल्प कराया. इसके बाद उन्हें गर्भगृह में प्रवेश दिलाया गया, जहाँ उन्होंने बाबा भोलेनाथ का पूजन-अभिषेक किया.

पंचमी सरस्वती पूजा होने के कारण इस अवसर पर मंदिर परिसर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी थी. लेकिन, प्रशासन ने अभिनेत्री के लिए गर्भगृह को विशेष रूप से खाली कराया, ताकि वे निर्विघ्न पूजा कर सकें.

मौके पर मौजूद श्रद्धालुओं के अनुसार, सारा अली खान ने कहा कि बाबा भोलेनाथ के प्रति उनकी असीम श्रद्धा है. इसी आध्यात्मिक आस्था के चलते वे देवघर के पावन धाम में पूजा-अर्चना करने पहुँची थीं. खूंटी में के एक रेस्तरां में काफी एवं सलाड ली, उसके बाद शारा रांची होते हुए ओडिशा की औद्योगिक शहर राउरकेला में पहुंची जहां रात को एक कार्यक्रम में शामिल हुई।

पत्र लेखक मंच के स्थापना दिवस व बसंत उत्सव पर काव्य निशा के साथ पितृ पुरुष छजलानीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया

संजय एम तराणेकर

इंदौर। बसंत पंचमी के अवसर और पत्र लेखक मंच की स्थापना दिवस के अवसर पर केशरबाग रोड स्थित डायसपार्क के परिसर में पितृ पुरुष बाबू लाभचंद छजलानी की प्रतिमा पर इंदौर शहर के पत्र लेखकों और साहित्यकारों ने माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इस अवसर पर प्रारंभ में माँ शारदा की वंदना कवयित्री शीला चंदन ने प्रस्तुत की। पितृ पुरुष छजलानीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण मुख्य रूप से पत्र लेखक मंच के संस्थापक सुशील कलमेरी, बुरहानुद्दीन शकरूवाला, पत्र लेखक मंच के प्रांतीय अध्यक्ष और साहित्यकार दिनेश तिवारी उपवन, कवि व फिल्म समीक्षक संजय एम तराणेकर, आशिक हुसैन देवासवाला, समाजसेवी अनिल रांका, सेल टेक्स कमिश्नर दीप्ति गुप्ता, संध्या बाइवार, पत्रकार श्री भगवती पंडित, देवी सिंहजी बारूपाल, पत्र लेखक श्री नरेंद्र सिंह ठाकुर, सुप्रसिद्ध पर्यावरण विद डॉ ओ. पी जोशी, लेखिका स्वाति सोलंकी, महेश नैनावा, प्रीतम लखवाल और संगीतज्ञ मंजीतसिंह खालसा आदि ने किया।

इस पुनीत अवसर पर एक लघु काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इसमें तेजकरण दुबे, डॉ दीप्ति गुप्ता, शीला चंदन, दिनेश तिवारी उपवन, डॉ अखिलेश राव, नरेंद्र सिंह ठाकुर आदि ने मार्मिक काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन पत्र लेखक मंच के प्रांतीय अध्यक्ष साहित्यकार दिनेश तिवारी उपवन ने किया। आभार पराग पंडित ने व्यक्त किया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023